अभिनव भारती ग्रन्थमाला—८

चीनका आधुनिक इतिहास

लेखक

प्रो० तान युन-शान

[विश्वभारती-चीनभवनके अध्यक्ष]

अनुवादक

प्रो० श्रीकृष्णकिंकर सिंह

[चाइनीज़ नेशनल ओरिएण्टल लैंग्वेजेज़ कालेज, कुनमिंग (चीन देश) के हिंदी अध्यापक]

सम्पादक

हजारीप्रसाद द्विवेदी

प्रकाशक—

गिरिजाशंकर वर्मा

अभिनव भारती ग्रन्थमाला

१७१-ए, हरिसन रोड

कलकत्ता

प्रथम बार

मूल्य २)

मुद्रक

कलियाराम गुप्त

दि बंगाल प्रिंटिंग वर्क्स

१, सिनागोग स्ट्रीट

कलकत्ता ।

विषय-सूची

पहला प्रकरण

चीनका भूतपूर्व इतिहास

दूसरा प्रकरण

आधुनिक चीनमें राजनैतिक परिवर्तन

तीसरा प्रकरण

चीनकी आर्थिक उन्नति

चौथा प्रकरण

आधुनिक चीनकी सामाजिक प्रगति

परिशिष्ट

I gladly authorize my student and friend Sree Krishna kinkar Sinha. formerly research-scholar of Visva-Bharati Cheena-Bhavana and now Professor of Hindi of the Chinese National Oriental languages College, Kunming China, to translate into Hindi my booklet Modern Chinese History, Which was first published by the Andhra University im 1938 and recently re-published by Kitabistan, Allahabad.

And I sincerely hope this translation in Hindi wich is the Lingua-Franca of India will help most of my Indian brethren who do not read English to make a better understandig of China.

Tan Yun-Shan.

Visva-Bharati Cheena-Bhavana,
Santiniketan
June 17, 1944.

चीनका आधुनिक इतिहास

पहला प्रकरण

पुराना चीन

अध्याय १

चीन देश और इस नामका अर्थ

प्राचीन काल में चीन देश को लोग अलग अलग नामों से पुकारते थे। इसका वर्तमान नाम न पहले कभी था और न यह उपयुक्त ही जान पड़ता है। चीनवाले अपने देश को चुङ्ग-हुआ या चुङ्ग-क्वो कहते हैं। चुङ्ग का अर्थ है मध्यस्थित और हुआ का फूल या गौरवशाली तथा क्वो का देश। इस प्रकार चीनवाले अपने देश को दुनिया के मध्य में स्थित, फूलों से भरा हुआ और महान् समझते हैं। नाम के सिलसिले में यह भी ध्यान में रख लेना चाहिए कि चीन की सभ्यता बहुत प्राचीन और उच्च है और प्राचीन काल से ही यहां के लोगों ने आसपास के असभ्य बर्बरों को जीतकर अपने अधीन में रखा था। इसलिये चीन के प्राचीन नाम में यद्यपि अतिशयोक्ति का भास होता है लेकिन ऐतिहासिक दृष्टि से उसमें तथ्य भी है।

सामंतशाही प्रणाली के विकास से छिन और हान् राजकुलों के समय चीन एकता के सूत्र में बंध गया था। ज्यों-ज्यों देश की जनसंख्या बढ़ती

गई उसकी सीमा का भी विस्तार होता गया। एकदम करीब में रहनेवाले कबीले जीतकर देश में मिला लिए गए और जो कुछ दूर में थे वे करद राज्य बना लिए गए। इस प्रकार प्राचीन काल में न देश की सीमा ठीक तरह से निर्धारित थी न भिन्न-भिन्न तरह के मनुष्यों में फरक जान पड़ता था इसलिये चुङ्ग-हुआ या चुङ्ग-क्वो नाम कभी कभीही व्यवहार में आता था। ऐतिहासिक घटनाएं शासन करनेवाले राजकुलों के नाम से दर्ज की जाती थीं और राजकुलों का नाम जैसे छिन्, हान्, थाङ्ग ही देश के लिये व्यवहार में आने लगा था।

चाइना (China) नाम छिन् शब्द से निकला है। चुङ्ग राजकुल के समय (ई० पू० ११२२ से २४९) देश के उत्तरी पश्चिमी भाग में, जो इन दिनों कान्-सु और षान्-शी का सूबा कहलाता है, छिन् नाम की एक सामंतशाही रियासत थी। प्रारम्भ में यह रियासत अन्य सामंतशाही रियासतों के बराबर दर्जे की थी और 'छिन्-क्वो' कहलाती थी। धीरे-धीरे यह शक्ति-शाली होती गई और आस-पास के प्रदेशों को जीतकर इसने अपने अधीन कर लिया तथा सम्पूर्ण देश को एकता के सूत्र में बांधा। तब यह 'छिन्' शब्द ही राजवंश का द्योतक हो गया। उस समय मध्य एशिया में बहुत-से छोटे-छोटे राज्य थे जो सम्मिलित रूप से 'पश्चिमी प्रदेश' कहलाते थे। इस प्रदेश के लोगोंका सम्बन्ध केवल छिन् देशवालोंके साथ था इसलिये गलती से उन लोगोंने सारे देशको छिन् नाम से पुकारना प्रारम्भ कर दिया। चूंकि छिन् रियासत ने सारे देश को एक सूत्र में संगठित किया था और इस कुल की चारों ओर प्रतिष्ठा थी इसलिये 'छिन्' शब्द का प्रचार अधिक हुआ। पश्चिमी प्रदेश के लोगों द्वारा ही यह शब्द दक्षिण की ओर भारतवर्ष में और पश्चिम

की ओर यूनान तथा रोम तक फैल गया। गलत उच्चारण के कारण और कालक्रमसे बदलते-बदलते 'छिन्' शब्द 'चीन' और चाइना हो गया। धीरे-धीरे यह गलत नाम ही ठीक मान लिया गया और दुनियावाले इस देश को 'चाइना' नाम से पुकारने लगे। महाभारतमें 'चीन' शब्द का उल्लेख है; इससे ज्ञात होता है कि उस समय भारतवर्ष के लोगोंको चीन देश का पता था। यूरोपीय विद्वानों के बीच 'चाइना' शब्द की उत्पत्ति के सम्बंध में कई मत हैं जिनमें कोई भी सन्तोषजनक और तथ्यपूर्ण नहीं हैं। साथ-साथ उससे यह भी ज्ञात होता है कि उन विद्वानों को चीन के प्राचीन इतिहास की कितनी कम जानकारी है।

जापानवाले चीन को अभी भी 'महान् थाङ्' नाम से पुकारते हैं क्योंकि 'थाङ्' युग (सन् ६१८-९०७ ई०) की चीनी सभ्यता से वे लोग बड़े प्रभावित हुए थे। इस काल में सैकड़ों जापानी विद्यार्थी चीन में विद्याध्ययन करने आए जिनमें 'खुङ्-हाइ' या कउ-पउ ता-षी (काबोदासी) का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इसने चीनी अक्षरों में थोड़ा-सा परिवर्तन कर चीनी शब्दों को जापानी उच्चारण में लिखने के लिये एक तरह की वर्णमाला बनाई जो 'खाना' नाम से प्रसिद्ध है। वह पच्चीस वर्षों तक चीन में रहा। कउ-पउ-ता-षी (काबोदासी) जापानी साहित्य का जन्मदाता माना जाता है। जापान ने चीन से केवल सभ्यता ही नहीं सीखी बल्कि वहां के बौद्धधर्म को भी अपनाया जो कुछ काल पहले भारत से जाकर चीन में फैला था। जापान की प्राचीन सभ्यता पूरी-पूरी थाङ् राजकुल के समय की चीनी सभ्यता की नकल है इसलिये यह आश्चर्य की बात नहीं है कि जापान अभी भी चीन को महान् थाङ् नाम से पुकारता है।

सन् १९११ ई० की जनक्रान्ति में मान्-चउ राजकुल के खात्मा होने के साथ-साथ राजकुलों द्वारा शासन करने की प्रणाली का भी चीन में सदा के लिये अन्त हो गया। प्रजातंत्र की स्थापना के समय से ही चीन का नाम 'चुङ्ग हुआ रिपब्लिक' रखा गया है और यही ठीक है कि अब वह इसी नाम से दुनिया में पुकारा जाय।

—o—

अध्याय २

देश : भूमि और प्राकृतिक विभाजन

आकार के खयाल से संसार में ब्रिटिश साम्राज्य की गिनती पहली, सोवियत रूस की दूसरी और चीन की तीसरी है। पर ब्रिटिश साम्राज्य के बहुत-से भूभाग या तो अर्द्ध स्वतंत्र हैं या उपनिवेश। खास ग्रेट ब्रिटेन चीन के सबसे छोटे प्रान्त से भी छोटा है। सोवियत रूस बड़ा ही विस्तृत है और इसमें एकरूपता भी पाई जाती है। फिर भी इसका बहुत बड़ा भूभाग जो आर्टिक महासागर से लगा हुआ है, बराबर बर्फ से ढका रहता है और इस कारण आदमियों के रहने योग्य नहीं है। चीन ही एक ऐसा बड़ा देश है जहाँ की जलवायु समशीतोष्ण है और भूमि भी उपजाऊ है। अतएव चीन का 'देश' की अपेक्षा 'महादेश' कहना ही अधिक उपयुक्त होगा।

चीन एशिया महादेश के दक्षिण-पूर्व में, प्रशान्त महासागर के पश्चिमी किनारे पर बसा हुआ है। इसके पूर्व और दक्षिण-पूर्व में समुद्र है और बाकी हिस्से स्थल से जुड़े हुए हैं। चीन के राजनैतिक प्रभुत्व के दिनों में कोरिया ल्यउ-छ्यउ, फारमूसा, अन्नाम, श्याम, बर्मा, भूतान, नैपाल आदि देश या तो चीनी साम्राज्य के सूबे थे या करद राज्य। आधुनिक युग का शक्तिशाली राष्ट्र जापान भी उस समय चीन का करद राज्य था और एक बार चीन के सम्राट् ने खुश होकर वहां के राजा को पदवी दे सम्मानित किया था। मान्-चउ (मांचू) शासन काल के अन्तिम समय में बहुत सी बुराइयां देश में फैल गईं और इस कारण देश की सरकार कमजोर पड़ गई। इस परिस्थिति से

लाभ उठाकर पश्चिमी राष्ट्रों ने चीन की अच्छी अच्छी जगहों पर अधिकार कर आपसमें बांट लिया। सभी मातहत राज्य भी चीन के हाथ से निकल गए। इस समय चीन का क्षेत्रफल चालीस लाख वर्गमील से अधिक है जो सम्पूर्ण एशिया महादेश के क्षेत्रफल का चौथाई और सम्पूर्ण दुनिया का पन्द्रहवां भाग है तथा अकेला ही सम्पूर्ण यूरोप से बड़ा है।

भौगोलिक दृष्टि से चीन पांच भागों में विभक्त है। पहला खास चीन (चाइना प्रौपर) जिसका क्षेत्रफल १९९४६४४ वर्गमील है और १८ प्रान्तों में बंटा हुआ है। दूसरा भाग मंचूरिया या तीन पूर्वी प्रदेश हैं जिसका क्षेत्रफल ४२८९९८ वर्गमील है। इसके बाद तीसरा भाग मंगोलिया है जिसका क्षेत्रफल ९०७२३४ वर्गमील है। इसके दो भाग हैं—भीतरी मंगोलिया और बाहरी मंगोलिया। चौथा भाग शिन्-च्याङ्ग (सिक्यांग) या चीनी तुर्किस्तान है जिसका क्षेत्रफल ६३२८०२ वर्गमील है। पांचवां भाग तिब्बत है जिसका क्षेत्रफल ३४९४१९ वर्गमील है। सन् १९२७ ई० में नानकिङ्ग (नानकिंग) शहर में राष्ट्रीय सरकार की स्थापना के बाद से सरहदी नीति के सुधार और नए तरह से प्रान्तों की सीमाबन्दी करने पर जोर दिया गया है। पिछले दस वर्षों के अन्दर ही बहुत दूर तक नए तरीके से सीमाबन्दी की गई है और आज चीन में २८ राजनैतिक प्रान्त हैं। इसके अलावा दो स्वायत्त शासनाधिकार प्राप्त प्रान्त भी हैं—तिब्बत और बाहरी मंगोलिया। सम्पूर्ण चीन का क्षेत्रफल ४३१४०९७ वर्गमील है।

यातायात के साधनों, उद्योग-धन्धों और व्यापार-वाणिज्य की उन्नति के कारण शहरों की समृद्धि और महत्त्व बढ़ गया है तथा वहां की आबादी भी बढ़ गई है। बहुत से व्यापारिक शहरों में खास शासन व्यवस्था की जरूरत

थी और राष्ट्रीय सरकार ने इस प्रकार के कुछ शहरों को खास म्यूनिसिपैलिटी विषयक और शासन प्रबन्ध के विशेष अधिकार दिए हैं। ये म्यूनिसिपैलिटियां सभी व्यावहारिक कामों के लिये स्वतन्त्ररूप से शासन करनेवाले प्रान्त सी हो गई हैं।

चीन में तीन प्रकार के विशेष क्षेत्र हैं जिन्हें अजीब राजनैतिक और कानूनी अधिकार प्राप्त हैं—(१) अन्तरराष्ट्रीय व्यापारिक बन्दरगाह (इन्टरनेशनल ट्रेडपोर्ट) (२) विदेशी रियायती क्षेत्र (फारेन कान्सेशन) (३) पट्टेवाले क्षेत्र (लीज्ड टैरिटारी)। तथाकथित अन्तरराष्ट्रीय व्यापारिक बन्दरगाह समुद्रके किनारे तथा देशके भीतरी भागोंके प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र हैं जो असल में विदेशी राष्ट्रोंके व्यापार के लिये खुले हुए हैं। स्वतंत्र व्यापार कौन नहीं पसन्द करेगा ? इससे तो खासकर उन राष्ट्रोंको लाभ होता ही है जो इसमें भाग लेते हैं पर यह मानव-समाज के लिये भी हितकर है। लेकिन चीनी जनताको इन तथाकथित अन्तरराष्ट्रीय बन्दरगाहोंसे कोई दिलचस्पी नहीं है। मान-चुउ शासनकालके अन्तिम दिनोंमें जब चीन कमजोर हो गया था ये बन्दरगाहें चीनकी मर्जीके विरुद्ध असम और अन्याय पूर्ण सन्धियों द्वारा दबाव डालकर खुलवाए गए हैं। यह कहना कि ये व्यापारिक बन्दरगाह, सन्धियों द्वारा खोले गए हैं, चीनके साथ कड़ुआ मजाक करना है। क्योंकि सन्धि दो समान और इच्छुक दलोंके बीच इमानदारी की शर्तों पर होती है। देशके एक सौ व्यापारिक केन्द्रोंमें कमसे कम ७० इसी तरह के बन्दरगाह हैं। तथाकथित विदेशी रियायती क्षेत्र भी सन्धि से खोले गए बन्दरगाहों (ट्रीटी पोर्ट) के समान ही हैं। इन क्षेत्रोंमें विदेशी राज्योंको राष्ट्र-सीमा सम्बन्धी विशेष अधिकार प्राप्त हैं। इन क्षेत्रोंमें रहने-

वाली विदेशी जातियां अपना दिवानी और फौजदारी फैसला स्वयं करती है—चीन की राष्ट्रीय सरकार उसमें दखल नहीं दे सकती। सन्धि से खोले कहे जानेवाले कुछ बन्दरगाहोंमें बीस बीस तक विदेशी रियायती क्षेत्र हैं। तथा कथित पट्टोंवाले क्षेत्र चीन का ही है जिसे विदेशी राष्ट्रोंने उससे संगीनके जोरपर लिखवा लिया है कहने मात्र को ही वे क्षेत्र पट्टेपर लिखाये गए हैं पर वास्तवमें उनपर बिदेशियों ने पूरा अधिकार जमा लिया है। पट्टेकी अवधि भी काफी लम्बी—९९ वर्षोंकी रखी गई है। कुछ क्षेत्र जैसे पोर्टआर्थर; और डारीनवे, जिन्हें जापानने पट्टेमें लिखाया था, अवधि पूरा होनेपर भी चीन को नहीं लौटाए गए। इन खास खास क्षेत्रोंमें विदेशी शक्तियोंके प्रोत्साहनसे तरह तरहकी भयानक बुराइयां घुस गई हैं। ये स्थान अन्तरराष्ट्रीय धूर्तों और बदमाशों के सुरक्षित अड्डे हो रहे हैं। ये तथाकथित अन्तरराष्ट्रीय व्यापारिक बन्दरगाह और रियायती क्षेत्र चीन की स्वतंत्रता तथा एकता के बाधक और जनता की रुचि को ही केवल विषाक्त नहीं करते, बल्कि अन्तरराष्ट्रीय प्रेम और न्यायके सुन्दर अर्थयुक्त शब्दोंके खोखलेपन को भी जाहिर करते हैं। राष्ट्रीय सरकार इन असम सन्धियों, रिआयती क्षेत्रों तथा अतिरिक्त अधिकारों को उठाने की कोशिश कर रही है। सरकार की इस चेष्टा के पीछे संसारके न्यायप्रिय आदमियों की सहानुभूति है तथा इसकी सफलता की पूरी आशा है। अधिकांश असम सन्धियों और अतिरिक्त अधिकार प्राप्त क्षेत्रों की अवधि समाप्त हो गई है तो भी उनमें बहुत से क्षेत्र अभीतक चीन को नहीं लौटाए गए हैं। इसलिए स्वभावतः ही चीनवाले असन्तुष्ट हैं और यह भविष्य में अशान्ति का कारण हो सकता है।

—:*:—

अध्याय ३

निवासी : जाति और जनसंख्या

मोटे तौरसे चीनी जनता छः 'चु' या जातियों में विभक्त है—(१) हान्-चु या हान् जाति (२) म्याव-चु या मिआँ जाति (३) मान्-चु या मांचू जाति (४) मङ्ग-चु या मंगोल जाति (५) हुइ-चु या मुसलमान जाति और (६) चाङ्ग-चु या तिब्बती जाति। हान्-चु या हान् जाति समूचे देशमें फैली हुई है परन्तु अधिकतर खास चीन में हैं। यह सबसे प्राचीन, प्रधान और प्रसिद्ध जाति है। मिआँ जाति जो कई टुकड़ोंमें बँटी हुई है देश की बहुत ही प्राचीन जाति है। परन्तु इसकी संख्या बहुत कम है। यह जाति प्रगतिशील नहीं है और इसने प्रारम्भ से ही आजतक किसी प्रकार की प्रगति नहीं की है। पहले यह जाति सारे देशमें फैली हुई थी पर बाद में चीन के उत्तरी-पश्चिमी पहाड़ोंमें बस गई हैं। उनको छोड़कर जो हान्जाति में एकदम से घुलमिल गई है, पूरी मिआँ जाति आदिम अवस्था में ही है। मान्-चु या मांचूजाति उपरोक्त जातियों की अपेक्षा नई है। यह पहले मंचूरिया में रहती थी। परन्तु अब पूरी जाति हान् जाति से एकदम घुलमिल गई है। मंगोलजाति मंगोलिया की रहनेवाली है। यह जाति भी नई तथा अल्पसंख्यक है। हान्जाति ने बहुत से मंगोलों को अपने में मिला लिया है। मुसलमान अधिकतर चीनी तुर्किस्तान या शिन्-च्यांङ्ग (सिक्यांग) प्रान्त में रहते हैं। असल में तो ये बाहर से आकर बसे हैं पर हान्जाति में इतने घुलमिल गए हैं कि चीन की आदिम जाति की ही तरह से समझे जाते हैं। चाङ्ग-चु या तिब्बतियों की दशा मंगोलों की ही तरह है। ये लोग अधिकतर

तिब्बत में ही रहते हैं और इनकी संख्या बहुत अधिक नहीं है। इस प्रकार यद्यपि चीनीजाति छः भागों में विभक्त है परन्तु ये विभाग नाममात्र के ही हैं और एक दूसरे से कोई प्रधान अन्तर नहीं रखते। इन सबों ने चीन को एक महान् राष्ट्र बनाने में कम या अधिक रूप से सहायता दी है।

चीनकी ठीक ठीक जनसंख्या बताना कठिन है। इसलिये नहीं कि देशमें मर्दुमशुमारी और सांख्यिक विवरण संग्रह (स्टेटिस्टिक्स) करनेकी संगठित व्यवस्था नहीं है बल्कि इसलिये कि देशके विस्तार और जनसंख्या की अधिकताके कारण ठीक ठीक संख्याका मिलना असम्भव हो जाता है। चीनी इतिहासके अनुसार ई० पू० की नवीशतीमें देशकी जनसंख्या २ करोड़ २० लाख थी जो ईस्वी सन्के प्रारम्भमें बढ़ कर ८ करोड़ हो गई। उसके बाद लोगोंने कर बढ़ जाने और सेनामें भर्ती कर लेनेके डरसे परिवारके लोगोंकी ठीक ठीक संख्या देना ही छोड़ दिया। जबसे देश भरमें नए सिलसिलेसे डाकघरों और चुंगी घरोंकी स्थापना की गई है इन विभागोंकी सांख्यिक विवरण तालिकासे देशकी जनसंख्याका लगभग ठीक अन्दाजा लगानेकी कोशिश की जा रही है। इस तरीकेसे यद्यपि देशकी अनुमानिक जनसंख्या का ही पता लगता है परन्तु यह फल जनसंख्या समस्या अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों और सरकारी जाँच पड़तालके लिये बड़ा लाभदायक है। सरकारके आभ्यान्तरिक विभाग (मिनिस्टरी ऑफ इनटिरीयर) के सन् १९२८ ई० की मर्दुमशुमारीके अनुसार चीनकी जनसंख्या ४७४७८७३८६ है। परन्तु इस आंकड़े और इसी वर्षके डाकघर और चुंगीघरसे प्राप्त आंकड़ेमें कुछ अन्तर है।

मिश्री, बाबुली, हिन्दू और चीनी—ये ही चार सबसे प्राचीन सभ्य

जातियां हैं। इनमें मिश्री और बाबुलीकी तो ऐतिहासिक ख्याति ही भर रह गई है। परन्तु चीनी और हिन्दू जाति अब भी संसारके सुधीवृन्दका ध्यान आकृष्ट कर रही हैं। यह अन्तर क्यों है? इन दोनों जातियोंके अन्दर जरूर कुछ खास खूबियाँ हैं जिनसे ये इतने हजार वर्षोंसे कायम रह सकी हैं। अच्छा तो चीनी जातिके ऊपर विचार किया जाय। चीनी जनताकी खास विशेषताएँ ये हैं—(१) अध्यवसाय (२) परिस्थितिके अनुकूल अपनेको बदलना और (३) सामञ्जस्य तथा एकताकी शक्ति। इनके अलावा तीन और विशेष गुण हैं—(१) शान्तिप्रियता (२) नम्रता और (३) निष्कपटता। दूसरी जातिकी नाईं चीनी जातिमें भी कुछ दोष हैं। पर ये दोष इतने नगण्य हैं कि इनसे आसानीपूर्वक छुटकारा पाया जा सकता है। आधुनिक युगमें दुनियाके एक हिस्सेका दूसरे हिस्सेके साथ घनिष्ट सम्बन्ध हो रहा है तथा आपसमें एक दूसरे पर अधिक निर्भर होते जा रहे हैं और इस कारणसे चीनी लोगोंने भी विदेशी सभ्यताकी बहुतसी चीजोंको अपनाना प्रारम्भ कर दिया है। आशा तो यही की जाती है कि चीनी लोग अपनी अच्छाइयोंको रखते हुए दूसरी जातिके सम्पर्कसे क्रमशः अपने दोषोंको मिटा देंगे। इसी पर चीनी कौमकी महानताका भविष्य निर्भर है।

अध्याय ४

संसारकी सबसे प्राचीन सभ्यता

पश्चिमी पंडित मिश्री और बाबुली सभ्यताओंको ही संसारकी प्राचीनतम सभ्यता विज्ञापित करते हैं। इससे पता चलता है कि वे लोग चीनके इतिहास तथा संस्कृतिसे कितने अनभिज्ञ हैं। मेरा दावा है कि चीनकी सभ्यता इन दोनोंसे प्राचीन है। जैसा मैं पहले कह आया हूँ मिश्री और बाबुली सभ्यता कभी की लुप्त हो चुकी हैं तथा कालान्तरमें उनके चिह्न भी बहुत कम बच पाए हैं। यूरोपीय विद्वान इन थोड़े प्रमाणों पर ही अपना मत स्थापित करते हैं। परन्तु चीनका प्राचीन इतिहास एकदम पूर्ण है और देशके अनगिनित ऐतिहासिक प्रमाण चीनकी सभ्यताका प्राचीन होना सिद्ध करते हैं।

प्राचीनकालके चीनी ऐतिहासिक प्रमाणोंसे जान पड़ता है कि यउ-छाव (यउ=है, छाव्=घोंसला—घर वाला) ने सबसे पहले मकानका आविष्कार किया और लोगोंको सुरक्षित रूपसे उसमें रहना सिखाया। स्वइ—रन् (स्वइ=अग्नि, रन=मनुष्य—अग्निदेव) ने लकड़ी घिस कर आगका आविष्कार किया और लोगोंको भोजन बनाना सिखाया। ये सभी आविष्कार दस हजार वर्षसे पहलेके हैं। फु-शी (फु=भोजन बनाना, शी=मारना—भोजनके लिये मारने वाला) ने जालसे मछली पकड़ना, फंदा डाल कर जानवर फंसाना और सितार बजा कर गाना सिखाया इन्होंने विवाहके नियम बनाए और मानव समाजमें सर्व प्रथम विवाहकी प्रथा प्रचलित की। इन्होंने

आठ रेखा चित्रोंका आविष्कार किया जिनसे आगे चल कर चीनी अक्षरोंका निर्माण हुआ। इन्होंने समय नापनेकी विधि भी निकाली जो पञ्चांगकी आधार बनी। पन्-नुंग (पन्=पवित्र देवता, नुंग=खेत—खेतके देवता) ने कुदाल और हलका आविष्कार किया तथा लोगोंको अन्न उपजाना सिखाया। इन्होंने एक तरहका बाजार कायम किया और लोगोंको अपनी चीजोंका क्रय-विक्रय करना सिखाया; बहुतसी जड़ी बूटियोंकी परीक्षा की तथा चिकित्सा विज्ञानकी नीव डाली और पञ्चांगमें भी सुधार किया। परन्तु यह ध्यान देनेकी बात है कि ये सभी चीजें आजसे करीब दस हजार वर्ष पहले हो चुकी थीं। उसके बाद भी बहुत बड़े बड़े महात्माओंने समय समय पर अपने आविष्कार और अनुसन्धानसे संसारको कृतार्थ किया है। करीब २७०० ई० पू० ह्वाङ्ग-ति (पीला सम्राट) देशका शासन करते थे। ये बड़े ही प्रतापी और योग्य सम्राट थे। परन्तु इनका नाम इसलिये अमर हो गया है कि सभ्य जीवनकी बहुतसी जरूरी चीजोंका इन्होंने आविष्कार किया है। बहुतसे आविष्कारोंमेंसे निम्नलिखित विशेष उल्लेखनीय हैं—(१) टोपी और पोशाक पहनना (१) गाड़ी और नाव (३) ओखली और मूसल (४) धनुष और तीर (५) कम्पास (६) मुद्रा (७) कफ़न। मौलिक आविष्कारोंके अलावे इन्होंने उस कालकी प्रचलित बहुतसी चीजोंमें सुधार किए। अपनी प्रतिभासे इन्होंने ज्योतिष शास्त्र, ऋतुओंके निश्चय करनेकी प्रणाली, सौरमंडलके अध्ययन आदि विषयोंके भंडारको काफी भरा।

मानव-सभ्यताका विकास लम्बी और निश्चित गतिसे हुआ है। आदमीने सबसे पहले रहने और खानेका प्रश्न हल किया तब कपड़े और अन्य घरेलू

औजारोंका। बादमें ज्योतिष, ऋतु और समय निर्धारित करनेकी प्रणाली, औषधि और यातायातके साधन, और फिर लिपि और लिखित भाषाका जन्म हुआ। इसके बाद लोगोंने सामाजिक शिष्टाचार, संगीत और शासन प्रणाली कायम की। सबसे अन्तमें आचार-विचार, नैतिकता, धर्म और दर्शन की उत्पत्ति हुई। पीले सम्राट् के समयमें ही उपरोक्त चीजोंका, जो सभ्य समाजके लिये अत्यन्त जरूरी है, चीनमें काफी विकास हो चुका था। धर्म, दर्शन, आचार-विचार तथा नीतिशास्त्र षांङ्ग और चउ वंशके राजत्वकालमें (ई० पू० २०००-१०००) उन्नतिके शिखर पर पहुँच गए थे। यह समय चीनकी सभ्यता तथा दुनियाकी प्रगतिके इतिहासमें स्वर्ण-युग था।

किसी सभ्यताके ऐतिहासिक अन्वेषणके लिये उस राष्ट्रकी लिपि एक प्रधान साधन है। चीनी लिपि फु-शीके द्वारा आविष्कृत हुई और पीले सम्राट् ने उसे पूर्ण किया। अनुश्रुतिके अनुसार पीले सम्राट् के इतिहास-मंत्री छांग-च्येने राजकीय आज्ञासे लिपिका निर्माण किया। इसने कोई खास लिपि स्वयं नहीं बनाई और न लिपि इसके समयमें ही बनी बल्कि इसने पहिलेकी लिपिको सुधार कर नए सिरेसे सजा कर रखा। बहुतसे विदेशी विद्वान अनुभवके अभावमें चीनी भाषा सीखना अत्यन्त ही कठिन बताते हैं। बहुतसे विद्वान इस भाषामें हिज्जेकी प्रणाली नहीं रहनेके कारण, इसकी लिपि को चित्रात्मक कहते हैं। चीनी भाषा सीखना एकदम कठिन नहीं है। बहुतसी भिन्न भिन्न लिपियोंका तुलनात्मक अध्ययन करनेके बाद मैं स्वयं अनुभव करता हूँ कि संसारकी बहुतसी भाषाओंसे चीनी भाषा सरल तथा युक्ति-संगत है। चीनी लिपिको चित्रात्मक कहना भी कुछ ही अंशोंमें सत्य है। किसी लिपिके पूर्ण होनेके लिये रूप, ध्वनि और अर्थ इन तीन चीजोंका

होना आवश्यक है । कोई भी लिपि जिसमें इन तीन चीजोंमें से एक का भी अभाव है, अपूर्ण है । यथार्थमें संसारमें ऐसी कोई लिपि नहीं है जो शुद्ध चित्रात्मक या ध्वन्यात्मक हो । चीनी लिपिकी बनावट तथा प्रयोग छः प्रकारका होता है जो छः लिखावट कहलाती है । हम लोग छः लिखावटोंमेंसे जिस एक लिखावटको "सादृश्य रूप" कहते हैं उसीको देख कर विदेशी विद्वान चीनी लिपिको चित्रात्मक बताते हैं । प्राचीन कालसे ही चीनी लिपिकी प्रणाली नहीं बदली है तथा सम्पूर्ण यूरोपसे अधिक क्षेत्रफल वाले चीनमें एक ही लिपि तथा लिखित भाषा है । चीनकी एकता बनाए रखनेमें एक लिपिके होनेसे बड़ी मदद मिली है ।

किसी देशके भूतकालकी अवस्था जाननेके लिये प्राचीन ऐतिहासिक वृत्तान्त भी एक अत्यन्त प्रधान साधन है । लिपि निर्माणके समयसे ही चीनका लिखित ऐतिहासिक वृत्त पाया जाता है । पीले सम्राट के दरबारमें शुरूसे ही इतिहास मंत्री रहते थे । एक सिंहासनकी बाईं ओर रहता था और सम्राट द्वारा दी गई आज्ञाओं और मंत्रियों तथा प्रार्थियोंके वक्तव्योंको लिखता था । दूसरा जो दाहिनी ओर रहता था तारीखवार उस कालकी घटित घटनाओंको दर्ज करता था । दुर्भाग्यवश इस लिखित सामग्रीकी बहुतसी चीजें छिन्-ष-ह्वाङ्ग-ति की काली करतूतोंके कारण, जिसे पुस्तकें जलानेमें विशेष आनन्द आता था, अप्राप्य हो गईं तथा कुछ तो कालान्तरमें यों भी नष्ट हो गईं । हमलोग तो पोथियोंके नाम ही जानते हैं क्योंकि अधिकतर पोथियां लुप्त हो गई हैं । कुछ पुरानी पोथियाँ अब भी हैं जैसे फु-शीके समयका इ—चिङ् या परिवर्तनोंके नियम, पाङ्—पु जिसका लिखना सम्राट थांग और यु के समयमें प्रारम्भ हुआ था और ई० पू० २३५७-

२२०८ के बीच समाप्त हुआ, और ष-चिङ् या पद्यके नियम जिसमें (कानफ्यूसियस) ने षाङ् और चउ राजकुलके समय (ई० पू०-१५००-५००) के गीतोंको संकलित किया है। वेदको छोड़कर संसारमें इनसे प्राचीन और कोई ग्रन्थ नहीं हैं। इन ग्रन्थोंके अतिरिक्त कुछ दूसरी पुस्तकें भी हैं जिनमें अनगिनत प्राचीनकालके ग्राम्य-गीत संगृहित हैं। यहाँ मैं नमूनेके तौर पर दो ग्राम्य गीतोंको उद्धृत करता हूँ। पहला लगभग २३००-२२०० ई० पू० के सम्राट् थाङ्-यान्के समयका है और दूसरा लगभग उसी कालका सम्राट् यू-षुन् द्वारा रचित है।

(१) सूर्यके उदय होने पर मैं उठ जाता हूँ
और सूर्यके अस्त होने पर आराम करता हूँ,
मैं पानी पीनेके लिये कुंआ खोदता हूँ
और भोजनके लिये जमीन जोतता हूँ
सम्राट (ति) की शक्ति उसके ही पास रहे,
लेकिन मुझे उससे क्या लेना देना है।

(२) ऐ भाग्यवान बादल, फैला दो
अपनी गरिमा ऊपर से ऊपर;
ऐ सूर्य और चन्द्र, सदा दिनको
चमकीला और सुन्दर बनाते रहो।

आधुनिक संसार वैज्ञानिक आविष्कारोंके कारण गौरवमय समझा जाता है परन्तु इसका प्रारम्भ चीनसे ही हुआ है। सान्-ताइ या तीन राजकुलों (लगभग २०००-१००० ई० पू०) के प्रथम चरणसे ही चीनमें लु-इ या छः कलाओं और लु-कुङ् या छः कामोंकी पढ़ाई होती थी। छः कामोंके नाम

ये हैं—थु-कुङ्—वास्तुकला (मेमारी) चिन्-कुङ्—धातु कला, प-कुङ्—राजगीरी, मु-कुङ्—बढ़ई गीरी, पउ-कुङ्—प्राणि या जन्तुविज्ञान और छाव्-कुङ्—वनस्पति या उद्भिद्विज्ञान। छः कलाएं ये हैं—लि-शिष्टाचार यूए—संगीत, षो-तीरन्दाजी, यू—रथचर्या, षु—लिखना और षु-गणित। हर कलाकी कई शाखाएं थीं—शिष्टाचार, तीरन्दाजी और रथचर्याकी पांच पांच, संगीत और लिखनेकी छः छः और गणितकी नव शाखाएं थीं। राजनैतिक सिद्धान्तों, शासनप्रणालीके संगठन, सैनिक, विज्ञान और युद्धके दाव पेचोंकी शिक्षा विस्तारसे दी जाती थी। उपरोक्त सभी विद्याओंका अध्ययन अध्यापन बड़े वैज्ञानिक और सिलसिलेवार ढङ्गसे होता था। मेरा विश्वास है कि आधुनिक विज्ञानका वास्तविक प्रारम्भ यहींसे होता है। विज्ञानके आविष्कारोंमेंसे चार प्रसिद्ध आविष्कारोंका श्रेय चीनको है…जैसे कम्पास कागज मुद्रणकला और बारूद। वास्तवमें ये ही चीजें वैज्ञानिक युगकी अग्रगामिणी हैं। लेकिन यह ध्यान देने योग्य बात है कि बारूदका प्रयोग चीनमें केवल आतिशबाजी और आमोद-प्रमोदमें ही किया जाता था—यूरोपकी तरह जनसंहार और ध्वंसकारी कामोंके लिये नहीं। इसीमें चीन और पश्चिमकी सभ्यताके मौलिक अन्तरका पता चलता है।

मेरी रायमें चीनी सभ्यताके निम्नलिखित चार प्रधान गुण हैं :—

(१) यह सभ्यता रचनात्मक मौलिक और चीनी भूमि की ही उपज थी किसी से मंगनी या नकल की हुई नहीं।

(२) इस सभ्यता का स्थायी रह सकना भी एक बड़ा गुण है। जैसा पहिले कहा गया है मिश्र और बाबुल की सभ्यता कालके गालमें समा गई परन्तु चीनी सभ्यता अबतक कायम है और प्रगति पर ही है।

(३) तीसरा गुण, इस सभ्यता का व्यापक होना है। उदाहरण के लिये लिपि और भाषा को ही लीजिए—सम्पूर्ण चीन में, जिसका क्षेत्रफल यूरोप से भी अधिक है, सदा से एक ही तरह की भाषा और लिपि रही है।

(४) अन्तिम गुण इस सभ्यता का मानवोचित गुणों से भरपूर और सर्वहितकारिणी होना है। इसके लिये जैसा कि ऊपर कहा गया है, बारूदका उदाहरण सर्वश्रेष्ठ है। जो चीज़ चीनमें केवल आमोद-प्रमोद के लिये व्यवहार की जाती थी दूसरे देशोंमें वही ध्वंस करने का सबसे ज़बरदस्त साधन बनगई।

इन सभी गुणोंको ध्यानमें रखते हुए मैं दावे के साथ कहता हूँ कि भारतवर्ष को छोड़कर, भूत या वर्तमान किसी कालमें चीनी सभ्यता सब देशोंकी सभ्यता से बढ़कर रही है। मिश्र और बाबुल की सभ्यताएँ बहुत दिनोंतक नहीं टिकीं, यूनान तथा रोम की सभ्यताएँ इतनी व्यापक नहीं थीं और यूरोप की आधुनिक सभ्यता के सम्बन्ध में कुछ कहना समय से बहुत पहले की बात होगी।

—:*:—

अध्याय ५

संसारमें सबसे प्राचीन इतिहास

चीन में और सभी सभ्य देशोंकी अपेक्षा अधिक लिखित प्राचीन ऐतिहासिक वृत्त पाया जाता है। इसलिये चीन के भूतकाल का इतिहास आसानी से जाना जा सकता है।

अनुश्रुति के अनुसार फान-कु चीन के जन्मदाता या आदि पुरुष माने जाते हैं। इन्होंने ही विश्व की रचना की और संसार भर पर शासन किया। इनके सात हाथ और आठ पैर थे। फान-कु के बाद सन्-ह्वाङ्ग या तीन पौराणिक सम्राटों का वर्णन आता है जिनके नाम क्रमशः थिएन्-ह्वाङ-स्वर्ग के सम्राट्, ति-ह्वाङ्-पृथ्वी के सम्राट् और रन्-ह्वाङ् मानव सम्राट थे। सान्-ह्वाङ् के बाद ष-चि-दश युगों का और इनके बाद उ-ति-पाँच शासन कर्त्ताओं का वर्णन है। अभी भी कुछ ग्रन्थ वर्तमान हैं जिनमें उस समय की घटनाओं का वर्णन है और हर राजा का बहुत लम्बे समय तक शासन करने की बातों का उल्लेख है। ये बातें सत्य हो सकती हैं फिर भी वर्णित घटनाएं विश्वसनीय नहीं जान पड़तीं। पीले सम्राट् के समय से चीन का विश्वस्त इतिहास मिलता है।

पीले सम्राट् के पहले चीन केवल कबीलों का देश था। ये कबीले भूमि पर प्रभुत्व जमाने के लिये आपस में लड़ा करते थे। न उस समय कोई सामाजिक व्यवस्था थी न उच्च कोटि की सभ्यता ही। पीले सम्राट् ने २६९७ ई० पू० के लगभग सारे देश को एक सूत्रमें बांधकर चीनी सम्राज्य

की नींव डाली। उसी समय सामाजिक व्यवस्था तथा शासन प्रबन्ध कायम हुआ और हर दिशा में उन्नति होने लगी। असल में हमलोगों को पीले सम्राट् को चीनी राष्ट्र का पिता और नागरिक समाज का संस्थापक मानना चाहिए। इसलिये ही चीनी जनता अपने को पीले सम्राट् का वंशज कहती है और चीन का ऐतिहासिक संवत् इनके राजत्वकाल के प्रथम वर्ष से प्रारम्भ होता है।

यद्यपि पीले सम्राट् ने अपने सैनिक पराक्रम से राजगद्दी प्राप्त की थी परन्तु इन्होंने या इनके उत्तराधिकारियोंने तलवार की अपेक्षा अपने गुणों से ही साम्राज्य पर शासन किया। कई पीढ़ियों के बाद पीले सम्राट् के अन्तिम उत्तराधिकारी ति-च को अयोग्य तथा गुणहीन होने के कारण जनता ने गद्दी से उतार दिया और उसके स्थान पर यावु को सम्राट् बनाया। यावुने पूरे सौ वर्ष तक शासन किया। उसके बाद उन्होंने अपनी इच्छा से राजगद्दी छोड़ दी और तब षुन् सम्राट् बनाए गए। षुन् ने ४८ वर्षों तक राज्य किया और यू को सम्राट् बनाकर अपनी इच्छा से ही राजगद्दी त्याग दी। इन सम्राटों के गुण और योग्यता की उपमा "सूर्य और चन्द्रमा" से दी जाती है। इन लोगोंने देश का शासन अपने महान् व्यक्तित्व के बल से किया और अन्त में स्वेच्छा से शासनाधिकार अपने ही समान योग्य उत्तराधिकारियों के हाथों में सौंप दिया। महात्मा ख्वान्-च (कानफ्यूसियस) और मन्-च (मेनसिउस) ने इन दो सम्राटों को आदर्श शासक और उनकी शासन प्रणाली को अनुकरणीय बताया है। इन लोगोंका राजत्वकाल 'षाङ्'-षाङ्—स्वेच्छा से पद त्याग करने का समय—कहलाता है जो चीन के इतिहास का बड़ा ही गौरवमय युग है।

यू सम्राट यावु और षुन् का बूढ़ा मंत्री था। यू का सब से प्रधान काम

यह है कि उसने चीन की नौ बड़ी बड़ी नदियों के मुंह को चौड़ा करवाकर उनकी धाराओं के बहाव को समुद्र तक पहुँचाकर भयंकर बाढ़ से होनेवाली क्षति से देश को बचाया। सर्वसम्मति से ये ही सम्राट् पुन् के उत्तराधिकारी चुने गए। आठ वर्षों तक शासन करने के बाद यु ने भी बुढ़ापा के कारण तथा अपने से पहले के सम्राटों की परम्परा रखने के लिये स्वेच्छा से गद्दी छोड़कर पो-इ नामक मंत्री को सम्राट् बनाना चाहा। लेकिन जनता की इच्छा थी कि यू का लड़का छ ही सम्राट् बनाया जाय। उसी समय से सिंहासन पर पैत्रिक अधिकार की प्रथा चली। यू का वंश चीन के इतिहास में 'श्या' (शिया) वंश कहलाता है। इस वंश का राज्य ४३९ वर्षों (२२०५-ई पू०) तक रहा जिसके बारह पीढ़ियों में सत्रह सम्राट् हुए। इस वंश का अन्तिम राजा 'च्य' था जिसे उसके अत्याचार के कारण छूंग-थांग नामक सरदार ने गद्दी से उतार दिया और स्वयं सम्राट् बन बैठा। छूङ्-थाङ् का वंश षाङ् नाम से पुकारा जाता है। इस वंश का राज्य भी १६ पीढ़ियों तक रहा तथा इसमें अट्ठाइस सम्राट् हुए जिन्होंने ६४४ वर्षों (१७६६-११२२ ई० पू०) तक शासन किया। इस वंश के अन्तिम सम्राट् चूउ की भी वही दशा हुई जो 'च्यं' की हुई थी। अयोग्य और अत्याचारी होने के कारण फा नामक सरदार ने इसे गद्दी से उतार दिया और स्वयं गद्दी पर बैठकर चूउ राजवंश की स्थापना की। चीन के इतिहास में क्रान्ति का यह दूसरा उदाहरण है। चूङ् राजकुल का राज्य चीन के इतिहास के सभी राजकुलों से अधिक समय तक रहा। इस कुल के ३३ पीढ़ी में ३७ सम्राटों ने ८६७ वर्षों (११२२-२४६ई० पू०) तक राज्य किया।

चूउ काल चीनी इतिहास का स्वर्ण युग है। जब हमलोग चूङ्-लि

नामक पुस्तक पढ़ते हैं जिसमें चूउ राजकाल के राजकीय नियमों और शासन प्रणाली का वर्णन है, तो अपने पूर्वजों की योग्यता और शक्ति की भूरिभूरि प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकते। सभ्यता और संस्कृति के हर पहलू में उस समय आश्चर्यजनक उन्नति हुई। इस युग में कितने ही बड़े२ महात्मा और सन्त हुए। महात्मा ख्वान्-च (कानफ्यूसियस) और लाव्-च, (लाव-त्सु) भी इसी काल में हुए तथा मोच्, मन्-च् (मेनसिउस), च्वाङ्-च, श्युन्-च् आदि भी। उस समय दर्शनशास्त्र के कमसे कम दस सम्प्रदाय थे। वह युग स्वतंत्र रूपसे विचार करने और अध्ययन करने का था। चीन की संस्कृति इस कालमें काफी प्रस्फुटित हुई।

इस युग के दो सामाजिक आन्दोलन भी ध्यान देने योग्य हैं—एक तो सामंतशाही प्रणाली की प्रगति और दूसरा चिङ्-थियन प्रणाली का परिवर्त्तन।

सामंतशाही का प्रारम्भ तो पीले सम्राट् के समय से ही हुआ था। श्या और षाङ् राजवंशों के समय में इसकी प्रगति धीमी रही। परन्तु चूउ युग में यह अपनी पूर्णता को पहुँच गई। सम्पूर्ण देश नौ चूउ—प्रान्तों-में विभक्त था और प्रत्येक चूउ कई षाङ्—सामंत रियासतों में बँटा था। क्षेत्रफल के अनुसार पाँच प्रकार की सामंत रियासतें थीं। पहला केङ् या ड्यूक की रियासत जिसका क्षेत्रफल ५०० वर्गली होता है। दूसरा हउ या मार्क्विस की रियासत जिसका क्षेत्रफल ४०० वर्गली होता था। तीसरा पो या अर्ल की रियासत—क्षेत्रफल ३०० वर्गली, चौथा च्र या विस्काउन्ट की रियासत—क्षेत्रफल २०० वर्गली और पाँचवाँ नान् या बैरन की रियासत जिसका क्षेत्रफल १०० वर्गली था। उपरोक्त पाँच प्रकार की रियासतोंका सामूहिक नाम च्रु-हउ या 'सामंत राजकुमार' था। केन्द्रीय

सरकार की निजी देख-रेखवाला प्रदेश ह्वाङ्-चि या राजकीय रियासत कहलाता था। प्रतिवर्ष 'सामंत राजकुमारों' को अपनी अपनी रियासतों के शासन प्रबन्ध सम्बन्धी ब्यौरेवार रिपोर्ट केन्द्रीय सरकार को देनी होती थी। केन्द्रीय सरकार हर तीसरे वर्ष इन रियासतों की अच्छी तरह जाँच पड़ताल करती थी। चीन की सामंतशाही पश्चिमी देशों की सामंतशाही प्रणाली की तरह न थी बल्कि उसका मौलिक आधार जनतंत्रात्मक था।

चिङ्-थिएन प्रणाली च्रउ युग की भूमि सम्बन्धी बँटवारे की नीति थी। कुल भूमि राष्ट्र की मानी जाती थी जो सम्पूर्ण देश की जनसंख्या में बराबर बराबर बाँट दी जाती थी। प्रतिवर्ग-ली नौ भागों में बांटी जाती थी और हर भाग में १०० 'मु' जमीन रहती थी। इन ९०० मु जमीन में से आठ परिवारों को १०० मु प्रति परिवार के हिसाब से अपने निजी कामके लिये दे दी जाती थी और बचा हुआ १०० मु जो कुल जमीन के बीचमें रहती थी सार्वजनिक कामोंके लिये रखी जाती थी, जिसे आसपास के किसान बारी बारी से जोतते और बोते थे। उस सार्वजनिक जमीन की उपज सरकार को राजकीय खर्च चलाने के लिये दी जाती थी। किसानों को अपनी निजी जमीन की अपेक्षा सार्वजनिक जमीन के जोतने-बोने में अधिक ध्यान देना पड़ता था। असल में यह एक प्रकार की समाजवादी प्रथा थी जो पश्चिमी देशों से सर्वथा भिन्न थी। इस प्रथा को चलाने के लिये कभी खून बहाने की ज़रूरत नहीं पड़ी थी।

सामंतशाही प्रणाली काफी लम्बे समय तक चली। अन्त में भिन्न-भिन्न सामंतोंके बीच होनेवाली कलह के कारण इसका अन्त हो गया। च्रउयुग के अन्तिम समय में सारे देश में भिन्न-भिन्न ७ रियासतें थीं जिनमें छिन्

सबसे शक्तिशाली थी। इस रियासत के राजा च्रङ् ने सभी रियासतों पर विजय प्राप्तकर च्रउ वंश के अन्तिम राजा को गद्दी से उतार दिया और वह स्वयं राजा बन बैठा। इनका वंश छिन् कहलाता है। इन्होंने सामंतशाही प्रणाली को रद्द कर दिया और चीन के इतिहास में एक दूसरी ही अवस्था ला दी। सम्पूर्ण देशको एक सूत्र में संगठितकर इन्होंने दक्षिण में स्थित अनाम और पूर्व में स्थित जापान को भी जीत लिया। इन्होंने अपने विस्तृत साम्राज्य को ४० च्युन् या प्रान्तों में विभक्त किया। सिकन्दर की नाईं ये भी अपने को विश्वविजेता समझते थे। इन्हें आशा थी कि इनका वंश सदा ही चीन पर शासन करता रहेगा परन्तु चीनी इतिहास में सबसे कम समयतक इन्हीं के वंशका राज्य रहा। क्योंकि इनके वंश का द्वितीय सम्राट् इनका लड़का 'र्-ष' अपने अत्याचार के कारण गद्दी से उतार दिया गया था। सम्राट् च्रङ् बराबर सैनिक कामोंकी ओरही लगा रहता था और इन्होंने सांस्कृतिक उन्नति की बातें एकदमसे भुला दी थीं। इनकी आज्ञा से कितनी किताबें जला दी गईं तथा कितने ही विद्वान जीवित दफना दिए गए। इस प्रकार की हरकतों से तंग आकर अन्त में साधारण जनश्रेणी के ल्यु-पाङ् नामक व्यक्ति ने क्रान्तिकारियों का संगठन कर विद्रोह का झंडा खड़ा किया। बाद में यह स्वयं हान्-काबू-चु नाम से सम्राट् बन बैठा और हान् राजवंश की स्थापना की चीन के इतिहास की यह सबसे पहली सार्वजनिक क्रान्ति थी।

हान्कुल का राज्य ४०३ वर्षों तक रहकर सन् २१९ ई० में समाप्त हो गया। उस समय से लेकर सन् १९११ ई० की जनक्रान्ति तक; जबसे चीन में राजतंत्रको खतमकर जनतंत्र की स्थापना की गई, कितने ही राजवंशोंने देश पर शासन किया। उनमें से बाहरी दुनिया थाङ् और सुंग के नामों से

उनके समय के कला सम्बन्धी कामों —खासकर चित्रों और चीनी मिट्टी के बर्त्तनों के कारण, अधिक परिचित है।

—*—

दूसरा प्रकरण

आधुनिक चीनमें राजनैतिक परिवर्तन

अध्याय १

छिङ्ग राजवंश (मांचू शासन) का अन्त

चीनका आधुनिक इतिहास चीनमें जनतंत्र कायम होनेके बादसे प्रारम्भ होता है। परन्तु जनतंत्रके महत्वको समझनेके लिये इस कालकी राजनैतिक और सामाजिक दशाओंका जानना जरूरी है जिनके कारण जनक्रान्ति पैदा हुई थी।

जनक्रान्तिके पहले चीनमें छिङ् राजकुलका राज्य था। इस कुलकी स्थापना मांचू जातिके लोगोंने सन् १६४४ ई० में की थी जो सन् १९११ ई० तक रहा। इस कुलमें दस राजे हुए। छिंङ् कुलके उत्कर्ष कालमें चीनकी काफी उन्नति हुई। इस कुलके शासन कालके प्रारम्भिक दिनोंमें, अनाम, स्याम, बर्मा, भूतान और नैपाल सभी चीनके करद राज्य थे। सम्राट् खाङ् शी-के राजत्वकालमें रूसके राजा पीटर महान्ने चीनी सम्राट्की कृपा प्राप्त करनेके लिये अमूल्य उपहार भेजा था तथा बादमें भी समय समय पर भेजता रहा। सन् १७९३ ई० में चीनके सम्राट् छयान्-लुङ् के दरबारमें ब्रिटेनके राजाका उपहार लेकर बृटिश राजदूत लार्ड मेकार्टनी आया था। मेकार्टनीने दरबारमें उपस्थित होकर घुटने टेक बादशाहका अभिवादन किया। सम्राट् छयाङ्-लुङ्ने अंगरेजी राजाके पास जो पत्र भेजा था उससे उस कालके चीनकी शक्ति और उसके महत्वका पता चलता है। पत्र यों था—

"आपके मंत्रीने आपका भेजा हुआ उपहार और पत्र मुझे दिया। हमें यह जान कर खुशी हुई कि यद्यपि दूरीके कारण हम दोनोंके साम्राज्य बहुत अलग अलग हैं फिर भी आप हमारे प्रति वफादार हैं। आपका राजदूत हमसे मिल चुका है और हमने अपने मंत्रियोंको आदेश दिया है कि वे लोग उनका तथा उनके साथियोंका अच्छी तरह स्वागत करें।"

"आपकी इस बातको मैं स्वीकार नहीं कर सकता कि आपके कुछ आदमी यहां आकर आपके व्यापारकी देखभाल करें क्योंकि यह दैवी राज्य के नियमके प्रतिकूल पड़ता है।"

"हमारा दैवी राज्य चार समुद्रोंसे घिरा हुआ है और हमारी एकमात्र इच्छा अपनेको सदा प्रजाकी देखभालमें ही लगानेकी रहती है। दुर्लभ और अमूल्य उपहारोंका हमारी नजरोंमें कुछ भी मूल्य नहीं हैं जिसे कि आपका राजदूत यहां देख चुका है।

"असलमें हमारा दैवी राज्य सभी चीजोंसे सम्पन्न है तथा इसकी सीमाके अन्दर किसी चीजकी कमी नहीं है। इसलिये बाहरी असभ्य लोगों द्वारा बनाई गई चीजों की यहां एकदम जरूरत नहीं है।

"हमारे प्रति अपनी वफादारी और राजभक्ति बनाए रखिए। इसीमें आपके देशकी शान्ति और भलाई है।"

यद्यपि चीन उस समय अपनी प्रभुताके उच्च शिखर पर था परन्तु उसके पतनके भी चिह्न दृष्टिगोचर होने लगे थे। चीनमें छिङ् वंशकी स्थापना करनेके पहले तक मांचू दक्षिण-पूर्वमें रहने वाली एक असभ्य जाति थी। लेकिन हाथमें शक्ति आनेके बाद इस डरसे कि उनकी गद्दी छिन न जाय उन लोगोंने एक तरफ तो अपने जानते प्रजाकी भलाईके लिये कोई काम करनेको

उठा नहीं रखा और दूसरी तरफ अपनी शक्तिको भी अधिकसे अधिक बढ़ाया। लेकिन एक शताब्दीके बाद छिङ् राजाओंमें अकर्मण्यता आ गई और राजके कर्मचारी घूसखोर और पतित हो गए। राज्य भरमें अयोग्य और घूसखोर अफसरोंका बोलबाला हो गया। इसका सबसे बड़ा उदाहरण उस कालका प्रधान मंत्री हो-खुन है जिसने बीस वर्षोंके राज्यकी नौकरीमें ८० करोड़ चीनी अशर्फीकी सम्पत्ति जमा कर ली थी। उस समय राज्यकी वार्षिक आमदनी केवल ७० लाख अशर्फियों की थी। अन्तमें सरकारने उसकी सारी सम्पत्ति जब्त कर ली और उसे फांसी की सजा दी। लेकिन इस कार्रवाईके बाद भी परिस्थितिमें कुछ सुधार नहीं हुआ। अफसरोंके अन्दर घूस लेनेकी शर्मनाक प्रथा बनी ही रही।

इस पतनकी अवस्थाको देशमें जगह जगह होने वाले विद्रोहने और भी भयंकर बना दिया। विद्रोह तो देशमें कई जगह उठ खड़ा हुआ। पो-लिआन्-चिआव्—स्वच्छ कुमुदिनी संस्था—ने धार्मिक क्रान्ति प्रारम्भ कर दी जिसमें थिएन-लि-चिआव्—स्वर्गीय हेतु संस्था—ने भी सहयोग दिया। इसके अलावा काई-च्रउमें मिआँ जातिने, शिन्-च्याङ् (सिक्यांग) में मुसलमानोंने और दक्षिण-पूर्व समुद्र तटके सामुद्रिक डाकुओंने भी विद्रोह कर दिया। इसके बाद ईसाइयोंकी थाइ-पिङ् क्रान्ति हुई इसका नेता हुङ-इयउ-छ्यूआन्, क्वाङ्-तुङ् प्रान्तके हुआ जिलेका रहने वाला था। इसने स्वतंत्रता और समानता के नारेके बीच देशकी राजनैतिक अवस्थामें सुधार करने और आर्थिक तथा सामाजिक दशाओंके पुनः संगठन करनेकी कोशिश की। इसने 'तीन लक्ष्य' नामकी संस्था कायम की और उसके द्वारा वह प्रचार करने लगा कि जहोवा स्वर्गके पिता हैं और ईसामसीह बड़े भाई तथा

वह स्वयं छोटा भाई है। प्रारम्भमें उसे बड़ी सफलता मिली। कुछ ही वर्षोंमें पन्द्रह प्रान्तोंने उसका आधिपत्य स्वीकार कर लिया। उसने थाइ-फिङ्-थिएन-क्यों—महा शान्तिका स्वर्गीय राज्य नामक राजकुलकी स्थापना की और नान्-चिङ् (नानकिंग) को अपनी राजधानी बनाया। लेकिन अन्तमें उसकी क्रान्ति असफल रही। उसने चीनी सभ्यता और समाजके सम्पूर्ण ढाँचेको एकबार ही बदल देना चाहा था। नतीजा यह हुआ कि वह लोगों की सहानुभूति खो बैठा और यही उसकी असफलताका कारण हुआ। इस प्रकार छिङ् कुलका राज्य अपनी घटती हुई शक्ति और ख्यातिके साथ कुछ दिनों तक और बना रहा।

देशकी भीतरी क्रान्तियोंके साथ साथ बाहरसे भी विदेशियोंके क्रूर आक्रमण होने लगे। ताव्-क्वाङके राजत्व काल (सन् १८४० ई०) में चीनने ब्रिटेनके विरुद्ध अफीमकी लड़ाई (ओपियम वार) छेड़ दी जिसमें उसे ही हार खानी पड़ी। नान्-चिङ् (नानकिंग) की सन्धि द्वारा ब्रिटेनको चीनके पांच बन्दरगाह क्वाङ ग्रउ, षा-मन् (आमो), फु-ग्रउ-निङ-पो और षाङ-हाइ (शंघाई) में व्यापार करनेकी रियायत और अतिरिक्त अधिकार मिले। ह्याङ्-काङ (हाँगकांग) भी उन्हें दे दिया गया तथा एक बहुत बड़ी रकम भीहर्जानेके रूपमें चीनको चुकानी पड़ी। चीनके साथ हुई कितनी ही असम और अन्यायपूर्ण सन्धियोंमें यह पहली सन्धि थी। सन् १८६० ई० में अंगरेजों और फ्रांसीसियोंकी संयुक्त सेनाने पई-चिङ (पेकिंग) पर गोलाबारी की तथा शहरको भरपूर लूटा और दिअन्-चिन और पङ-चिङ (पेकिंग) नामक दो सन्धियां करनेके लिये चीनको बाध्य किया। चीनसे बहुत बड़ी रकम हर्जाना कहकर वसूल की गई और पुनः

कई बन्दरगाह इन लोगोंने अपने व्यापारके लिये खुलवा लिए। सन् १८९५ ई० में क्वाङ्श्युके राजत्वकालमें जापानने चीन पर चढ़ाई की। चीन हार गया और उसे हर्जानेमें एक बहुत बड़ी रकम और फारमूसा द्वीप जापानको दे देना पड़ा तथा कई बन्दरगाह भी उनके व्यापारके लिये चीनको खोल देने पड़े। चीनकी करद रियासत कोरिया केवल नाम मात्रको स्वतंत्र रहा। असलमें वह जापान साम्राज्यका एक प्रान्तसा हो गया। सन १९०० ई० में बक्सर विद्रोह हुआ और चीनको पुनः ब्रिटेन, रूस, जापान, जर्मनी, फ्रांस, अमेरिका, आस्ट्रिया और इटलीकी सम्मिलित सेनासे हार खानी पड़ी। इस प्रकार छिङ राजकुलकी हालत दिन प्रतिदिन खराब ही होती गई और यही सन १९११ ई० की महान् क्रान्तिकी नींव हुई।

अध्याय २

महान् क्रान्ति और चीनी गणतंत्र

इस महान क्रान्तिके वर्णनके पहले, क्रान्तिके नेता डा० सुन्–इ-श्यान् (डा० सन यात सेन) के विषयमें जान लेना जरूरी है।

डा० सनका जन्म क्वाङ्–तुङ् प्रान्तके चुङ् षान् जिलेमें सन १८६६ ई० में हुआ था। बचपनसे ही उन्हें थाइ-पिङ् क्रान्तिके नेता हुङ् श्यउ छ्यूआन्की कहानी सुनकर बड़ी प्रसन्नता होती थी और वे अपने मनमें सोचा करते थे कि बढ़कर मैं भी हुङ श्यउ छ्यूआनकी तरह ही होऊँगा। जब वे बालिग हुए तो माँचू राज्यकी बुराइयों तथा देशके अपमानको देख कर उनका खून खौल उठा और उसी समयसे क्रान्तिकारी प्रचार करने लगे। सरकार तथा जनता दोनों ही इन्हें एक खतरनाक क्रान्तिकारी नेता समझने लगी। ह्वाङ-काङ (हांगकांग) कालेजसे डाक्टरी उपाधि प्राप्त करनेके बाद प्रत्यक्ष में तो इन्होंने क्वांग–च्रउ और चिउ-त्वांग (मेकौ) शहरोंमें दवाखाना खोल दिया परन्तु भीतर ही भीतर ये क्रान्तिका प्रचार करने लगे। थोड़े समयमें ही बहुतसे लोगों तथा कुछ राजनैतिक दलोंकी सहानुभूति इन्होंने प्राप्त कर ली। और सन् १८९४ में शिङ च्रुङ ह्वई नामक क्रान्तिकारियोंका एक केन्द्रीय दल स्थापित किया। सन् १८९५ ई० में चीन जापानसे हार गया और चीनके इस अपमानको वहांकी जनताके सामने रखकर इन्होंने पहली बार क्वांग-च्रउ (केन्टन) में क्रान्तिका सूत्रपात किया। लेकिन सारा कार्यक्रम सरकारकी कानों तक पहले ही पहुँच चुका था इसलिये इन्हें

इस काममें सफलता नहीं मिली। अन्तमें इन्हें देश छोड़कर भागना पड़ा। जापान और अमेरिका होते हुए ये यूरोप पहुँचे। पर जहां कहीं भी गए वहांकी प्रवासी चीनी जनताके बीच अपने सिद्धान्तका प्रचार करते रहे। चीनके छिंग सरकारकी आंखोंका कांटा तो ये पहले ही सिद्ध हो चुके थे। इसलिये सन् १८९६ ई० में लंडन स्थित चीनी दूतावासके कुछ प्रतिनिधियों ने चुपचाप इन्हें धोखेसे पकड़ लिया और छिपा रखा। अपने शिक्षक मिस्टर जेम्स कान्टलीके प्रयत्नसे ब्रिटिश सरकारने चीनी दूतावासके अधिकारियों पर दबाव डाला और तब किसी तरह इन्हें छुटकारा मिला। अपने मित्रोंके अनुरोध पर इन्होंने "मेरी हालकी गिरफ्तारी" नामक एक किताब लिखी इस किताबकी बिक्री इतनी अधिक हुई कि इसीने इन्हें संसार-प्रसिद्ध बना दिया।

पहले डा० सन्‌ने केवल मांचू राजकुलको समाप्त कर उसके स्थान पर प्रजातंत्र कायम करनेकी बात सोची थी। परन्तु अपने विदेशी प्रवास कालमें इन्होंने आर्थिक और सामाजिक समस्याओंका गहरा अध्ययन किया और इस नतीजे पर आए कि जब तक देशकी आर्थिक और सामाजिक हालतोंमें सुधार नहीं होता तबतक सफल क्रान्तिकी आशा करना व्यर्थ है। उसके बादसे इनकी नीति 'सान्-मिन्' चू-इ' या जनताके तीन सिद्धान्त, जिसमें सामाजिक राजनैतिक और आर्थिक न्याय पर जोर दिया गया है, अपने जीवन चरित्रमें इन्होंने लिखा है—

"धोखेबाजोंके पंजेसे छूटनेके बाद मैं दो वर्ष तक यूरोपमें रहा। इस बीच मैंने यूरोपकी संस्थाओं तथा रीति-रिवाजोंका अच्छी तरह निरीक्षण (अध्ययन) किया। इङ्गलैंड और यूरोप सभी जगहोंके गरीबों तथा अमीरों

के सम्पर्कमें आनेके बाद में इस नतीजे पर पहुँचा कि वहांके लोग खुशहाल नहीं हैं—यद्यपि उनलोगों के यहां अपार धन राशि है तथा जनतन्त्रात्मक शासन प्रणाली भी, जिसकी वे लोग बराबर डींग हांका करते हैं। सभी जगह मुझे गरीबों और अमीरोंके बीच भीषण संघर्ष चलता हुआ दिखाई पड़ा। मैंने भविष्यमें होनेवाले इस तरह की भयंकर परिस्थितिसे अपने देशको बचानेका संकल्प कर लिया और अपने कार्यक्रममें राष्ट्रीयता और जनतंत्रके सिद्धान्तोंके साथ साथ आर्थिक सिद्धान्तका भी समन्वय किया।"

डा० सन् के 'जनताके तीन सिद्धान्त' यों हैं—

(१) मिन्-चु-च्रु-इ—जनताकी स्वाधीनताके सिद्धान्त यानी राष्ट्रीयता।

(२) मिन्छ्यु्आन्-च्रु-इ—जनताके शासनका सिद्धान्त यानी जनतंत्र।

(३) मिन्-षङ्-च्रु-इ—जनताकी जीविकाके सिद्धान्त यानी साम्यवाद।

जनताकी स्वाधीनताके सिद्धान्त या राष्ट्रीयतासे डा० सन्का अर्थ जातिगत समानता था। इसके दो अर्थ होते हैं; संकुचित अर्थमें यह चीन भरके अन्दर बिना जाति भेदका विचार किए सबोंकी नागरिक स्वतंत्रता तथा समानताका बोधक है। विस्तृत अर्थमें यह अन्तरराष्ट्रीय जगतमें चीनका दर्जा और सभी राष्ट्रोंके समकक्ष मानता है। जनतंत्रके भी दो अर्थ हैं—पहला जनताके राजनैतिक अधिकार और दूसरा सरकारी अधिकारका विकेन्द्रीकरण। पहलेसे चार निश्चित कामोंका बोध होता है—(१) मत देनेका अधिकार (२) प्रत्यावर्तनका अधिकार (राइट आफ रिकाल) (३) विधानमें परिवर्तन करनेका अधिकार (४) कानून पास होनेके पहले सम्पूर्ण निर्वाचक समुदायका उसपर सम्मति देनेका अधिकार (राइट आफ रेफ-

रेन्डस)। सरकारी अधिकार पांच भागोंमें विभक्त है - (१) व्यवस्थापिका विभाग (२) न्याय विभाग (३) शासन प्रबन्ध विभाग (४) राजकीय सर्वोच्च परीक्षा विभाग और (५) नियन्त्रण विभाग। ये सभी वैधानिक अधिकार कहलाते हैं। जनता की जीविकाके सिद्धान्तका अर्थ विस्तृत साम्यवाद है। इसे सम्मिलित या व्यापक साम्यवाद भी कह सकते हैं।

डा० सन् ने जनता की जीविकाके सिद्धान्त विषयक दिए गए अपने सबसे प्रथम व्याख्यान में, इसकी व्याख्या यों की है—"मिन् षङ् का असली अर्थ 'जनता की जीविका' है। दूसरे शब्दोंमें—जीविका ही जनताका प्राण है जिसके ऊपर समाज और राष्ट्र आधारित है। करीब एक सदी से जिस समस्याको लेकर सारा यूरोप गड़बड़ीकी हालत में है उसे मैं अपने इस सिद्धान्तसे हल करुंगा। मेरा मतलब सामाजिक समस्यासे है। इसलिये जनताकी जीविका का सिद्धान्त साम्यवाद, समाजवाद, या "महान संगठन का सिद्धान्त भी कहा जा सकता है।"

लेकिन डा० सन् जिस साम्यवादके हिमायती थे वह न तो कार्ल मार्क्स का सामाजिक दर्शन था न सोवियत रूसमें लागू की गई सामाजिक प्रणाली। डा० सन् अकसर कार्ल मार्क्सको सामाजिक रोगका ऐसा हकीम कहते थे जिसे सामाजिक शरीर विज्ञानका कुछ भी ज्ञान न हो। इसलिए कार्ल मार्क्स का सिद्धान्त केवल हकीमोंके ही काम का है। जनताकी जीविकाका सिद्धान्त कार्लमार्क्सके सिद्धान्तकी सभी प्रधान कमीको भी दूर करता है इस सिद्धान्तमें सामाजिक मसलोंके हल करनेके दो उपाय बताए गए हैं—एक तो पूँजी पर नियंत्रण और दूसरा जमीन का समान बँटवारा। सबोंको खेतीके लिये

जमीन और करनेके लिये काम रहेगा परन्तु कोई भी जमींदार या पूँजीपति नहीं हो सकेगा। देशके खनिज पदार्थ पर राष्ट्रका अधिकार रहेगा। जिससे देशका पुनर्निर्माण कार्य बड़े पैमाने पर किया जा सकेगा ताकि सभी आदमी उससे बराबर आनन्द और लाभ उठा सकेंगे। जीविकाका सिद्धान्त चीनकी खास दशा और परिस्थितिके अनुसार साम्यवादका चीनी संस्करण है।

जनताके तीन सिद्धान्त की रूपरेखा अच्छी तरह तैयारकर डा० सन् इसके प्रचारके लिये यूरोपसे जापान आए। प्रवासी चीनी जनता में इसका प्रचार करनेके लिये तथा दूसरे राष्ट्रों की सहानुभूति प्राप्त करनेके लिये वे संसारके सभी भागोंमें गए। सन् १९०५ ई० में वे पुनः यूरोप पहुँचे। इन्होंने प्रवासी चीनी प्रतिनिधियोंको लेकर ब्रुसेल्स में सर्व प्रथम अपनी क्रान्तिकारी समिति की स्थापना की। उसके बाद इस समिति की बैठ बर्लिन, पेरिस और टोकियो में हुई। समितिका नाम 'चुङ्-क्वो-को-मिङ् थुङ्-मङ् ह्वइ' या चीनी क्रान्तिकारी संघ रखा गया। इस समितिके सदस्य, जिनका आदर्श बड़ाही ऊँचा था, देशमें चारोंओर फैले हुए थे। अपने प्रयत्नमें लगातार असफल होने पर भी वे लोग हताश नहीं होते थे बल्कि उनका जोश और अधिक बढ़ता था। साथ साथ वे लोग अपने कार्य करने की प्रणाली को भी अधिक व्यवस्थित करते जाते थे।

सबसे अन्तिम पर सबसे बड़ी असफलता क्रान्तिकारियों को क्वाङ्-चउ (केन्टन) में २९ मार्च, सन् १९११ ई० को हुई। इसमें ७२ बहादुर शहीद हुए। इन सभी बहादुरों की समाधि केन्टन के पास ही है जिसे 'पीले फूल की समाधि' कहते हैं। आज यह जगह चीनी जनता का तीर्थस्थान हो गया है। परन्तु यह असफलता पौ फटने के पहले के अंधकार

के समान था। उसी वर्ष १० अक्तूबर को हु-पइ प्रान्तके उ-छाङ शहरमें एकाएक क्रान्ति भड़क उठी। एक महीने के अन्दर ही दस प्रान्तों पर क्रान्तिकारियोंने अपना आधिपत्य जमा लिया। उस समय तक डा० सन् विदेश में ही थे। अपने अनुयायियों के अनुरोध पर वे तुरत चीन लौट आए। उन्होंने षाङ हाइ (संघाई) में सभी अधिकृत प्रान्तोंके प्रतिनिधियों की एक सभा बुलाई। उस सभामें यह तय हुआ कि नान्-चिङ (नानकिंग) में एक अल्पकालीन सरकार कायम कीजाय और डा० सन् चीनी प्रजातंत्रके अस्थायी सभापति बनाए गए। जनवरी सन् १९१२ ई० की पहली तारीख से नान्-चिङ (नानकिंग) में चीनी जनतंत्र का बाकायदा काम प्रारम्भ हो गया। चान्द्रवर्ष की परिपाटी चलाई गई तथा सन् १९१२ ई० में चीनी क्रान्तिका पहला वर्ष मनाया गया। एक मंत्रिमण्डल की भी स्थापना हुई जिसमें जेनरल ह्वाङ्-शिङ्, डा० उ-थिङ्-फाङ् और डा० छाइ खान्-फइ प्रभृति प्रधान प्रधान लोग थे। मंत्रिमण्डल कायम होने के बाद एक पार्लियामेंट बुलाई गई जिसमें सभी प्रान्तोंके प्रतिनिधि थे। सभापतिने ११ मार्च को ५६ धाराओंके एक अल्प-कालीन विधान की घोषणा की। उस विधान की मुख्य तीन धाराएं ये थीं।

(१) सारे देशकी जनता द्वारा सगठित चीनकी सरकार जनतंत्रात्मक है।

(२) सर्वोपरि राजसत्ता पर चीन में रहनेवाले हर व्यक्ति का अधिकार है।

(३) जाति, वर्ग धर्म निर्विशेष सभी नागरिक समान हैं।

नान्-चिङ (नानकिंग) में अल्पकालीन सरकार कायम होने के पहिले, एकबार पुनः मांचू राजवंशने अपनी सत्ता बनाए रखनेकी अन्तिम कोशिश की। इस बार मांचू वंशने वैधानिक प्रणाली का सहारा लिया तथा ह्वान्-ष-खाइ

नामक जेनरल को, जो राज्य द्वारा बर्खास्त करदिया गया था, राज्य की रक्षा का भार लेने तथा शासन व्यवस्था को पुनः संगठित करने के लिये निमंत्रित किया। टुवान्, राज्य का प्रधान मंत्री तथा दक्षिणी प्रजातंत्र से लड़नेवाली फौजका प्रधान सेनापति बनाया गया। वह स्वभावतः महत्वाकांक्षी तथा दगाबाज़ था। एक तरफ उसने स्थिति की भयंकरता का डर दिखा राजाको गद्दी त्याग देनेके लिये कहा तथा दूसरी ओर उसने डा० सन् को यह कहकर धोखा दिया कि अगर वह प्रजातंत्र का सभापति बना दिया जाय तो उनकी मदद करेगा। डा० सन् स्वभावतः ही उदार थे। उन्होंने उसकी बात मान ली। फरवरी २२, सन् १९१२ ई० को मांचू वंशका अन्तिम राजा श्युयान्-थुङउर्फ फु-ई ने, जो अभी लड़का ही था, गद्दी त्याग दी तथा वह नव स्थापित प्रजातंत्र सरकारकी देखरेखमें रखा गया। दूसरे दिन सुबह ही अर्थात् २३ फरवरी, सन् १९१२ ई० को डा० सन् ने अपनी प्रतिज्ञानुसार प्रजातंत्र सरकार के सभापतित्व से त्यागपत्र दे दिया। और टुवान् प्रजातंत्र सरकार का प्रधान बनाया गया। डा० सन् का एक ही उद्देश्य था—मांचू राज्य को समाप्त कर उसकी जगह पर जनतंत्रात्मक शासन प्रणाली कायम करना। उन्हें व्यक्तिगत स्वार्थ कुछ भी नहीं था। इसलिये टुवान् को सभापति बनाने के लिये बिना हिचकिचाहट के उन्होंने अपने पदसे त्यागपत्र दे दिया। उसी वर्षकी जनवरी में अस्थायी सभापतिका आसन ग्रहण करते समय उन्होंने कहा था कि "मांचू राज्य के समाप्त होने के बाद ही मैं सभापति के पदसे इस्तीफा दे दूँगा। उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा का ठीक ठीक पालन किया। मांचू राज्य तो समाप्त हो गया परन्तु साथ ही साथ चीनके इतिहास का दूसरा विचित्र अध्याय प्रारम्भ हुआ।

अध्याय ३

प्रजातंत्रकी स्थापनाके बाद अराजकता का दौर दौरा।

किसी भी बड़े आन्दोलन की पूर्ण सफलता के लिये काफी कीमत चुकानी पड़ती है। भाग्य को कोई धोखा नहीं दे सकता। क्रान्ति की सफलता की कीमत चाहे उसके पहले या उसके बाद कभी न कभी चुकानी ही पड़ती है। यद्यपि तैयारी वर्षों से हो रही थी, परन्तु अन्त समय में बिना लड़ाई के चीन की क्रान्ति सफल हो गई। राजतंत्र, प्रजातंत्रमें बिना एक बूँद खून बहाए ही परिणत हो गया। शायद यही क्रान्ति की सबसे बड़ी कमी रही और इसीलिए इसके बाद जरूरत से भी अधिक कीमत चुकानी पड़ी।

डा० सन्-यात-सेन के कार्यक्रम के अनुसार देशके राजनैतिक संगठन को तीन अवस्थाओं से पार करना था। पहला राजनैतिक सत्तापर सैनिक अधिकार। सैन्यशक्ति द्वारा सरकार की स्थापना हो जाने तथा उसके स्वीकार करलिए जाने पर दूसरी अवस्था शुरू होती है और वह है राजनैतिक सरक्षण अर्थात् चुने हुए व्यक्तियोंके हाथों में शासन प्रबन्ध का भार देना इस अवस्था में सरकार देश की जनता की राजनैतिक शक्तिके ट्रस्टी स्वरूप रहती है। तीसरी अवस्था है वैधानिक शासन का। इस काल में देश की जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधि शासन भार ग्रहण करते हैं तथा उसे चलाते हैं।

कोई भी प्रजातंत्र इन तीन अवस्थाओं को पार किए बिना ठोस नहीं होता है। क्योंकि बिना इसके लोगों के अन्दर की राजतंत्रात्मक भावना को

पूरी तरह नहीं मिटाया जा सकता। दुर्भाग्य से चीन की क्रान्ति जितनी जल्दी सफल हुई उतनी ठोस नहीं थी और यही भविष्य के लिये भयानक साबित हुई। 'चीन की क्रान्ति का इतिहास' नामक पुस्तक में डा० सन् ने लिखा है :—

"यह दुःख की बात है कि चीन की क्रान्ति जनतंत्र निर्माण की तीन अवस्थाओं सैनिक संघर्ष, राजनैतिक संरक्षण और वैधानिक शासन से नहीं गुजरी। उसके बाद देशकी हालतमें गड़बड़ी का एकमात्र कारण उस काल के कुछ प्रधान क्रान्तिकारी नेताओंकी लापरवाही थी।

टूवान् की चालाकी और हठसे चीन की राजधानी नान्-चिङ् (नानकिंग) से जिसे दक्षिणी क्रान्तिकारी नेताओंने कायम किया था, हटाकर पइ-चिङ (पेकिंग) लाई गई। प्रजातंत्रका अस्थायी सभापति होने के बाद ही टूवान् ने प्रजातंत्र के प्रति अपनी भक्ति बनाए रखने की शपथ ली और निर्वाचित राष्ट्रीय पार्लियामेंट की स्थापना की। निर्वाचित राष्ट्रीय पार्लियामेंटने जैसे ही उसे स्थायी सभापति चुना, वह उन सभी अस्थायी विधान की बातोंको तोड़ने लगा जिनसे उसके स्वार्थ में बाधा पहुँचती थी। कुछ क्रान्तिकारी नेताओंसे वह अपना बैर साधने लगा तथा उसकी आज्ञा से बहुतों को फाँसी दे दी गई। यह स्पष्ट था कि टूवान् प्रजातंत्र का हिमायती नहीं था बल्कि अपने स्वार्थ साधन के लिये देशमें उठी नई लहर से नाजायज फायदा उठा रहा था। नवजात प्रजातंत्र के ऊपर होनेवाले इस भयंकर खतरे को देखकर डा० सनने च्वुङ्-हुआ-को-मिङ्-ताङ् – चीनी क्रान्तिकारी दल नामक एक नई पार्टी कायम की और टूवान् को उसकी भयंकर कार्रवाइयोंके लिये चेतावनी दी। टूवान् अपने अभिमानमें चूर था और सोचता था कि वह

जो चाहेगा करा लेगा। सन् १९१५ ई० के नवम्बर में उसने जनतंत्रात्मक विधानको स्थगित कर राजतत्रकी घोषण की तथा अपनेको चीनका सम्राट् घोषित किया। १ ली जनवरी सन् १९१६ ई० को उसने अपने राज्याभिषेक की तिथि निश्चित की। प्रजातत्र स्थगित होनेकी बात जैसे ही सारे देशको ज्ञात हुई वैसे ही दक्षिणी-पश्चिमी प्रान्तोंमें छाइ-जो और लिलिए च्युनके नेतृत्वमें विद्रोहकी आग भड़क उठी और उसकी ज्वाला सारे देशमें फैलगई। परन्तु इसी बीच ट्वान्‌की मृत्यु हो गई और उसके राज्याभिषेक का सुनहला स्वप्न भी उसीके साथ चला गया।

ट्वान् की मृत्युके बाद डा० सन देशमें पूर्ण जनतंत्रात्मक शासनप्रणाली चालू करना चाहते थे लेकिन जनतामें अभी इतना साहस नहीं था, इसलिये उन्हें सफलता नहीं मिली। ट्वान्‌का भूत अवभी कुछ लोगोंपर सवार था और मांचू राज्यकी पुनर्स्थापनाके लिये बराबर कोशिश हो रही थी। परन्तु ये सभी कोशिशें असफल रहीं। लेकिन इसी समय राजनैतिक आकाशमें राहु-केतुके समान "वार-लार्डों"- सेना अधिनायकों—का उदय हुआ। ये स्वार्थी लोग सभी जगह उठ खड़े हुए—खासकर उत्तरी प्रान्तों में। उन लोगोंके दिलमें स्वदेश प्रेमका जरा भी भाव नहीं था। केवल अपना स्वार्थ ही भरा था। उन लोगोंके षड्यन्त्र और निरन्तर लड़ाईके कारण देशकी बड़ी दुर्गति हुई। अपनी अपनी ज़गह उनलोगोंने अलग अलग रियासत कायम कर ली। बहुत वर्षों तक दक्षिणी प्रान्तोंने पइ-चिङ् (पेकिंग) सरकार, जिसे उत्तरी सैनिक षड्यन्त्रकारियोंने स्थापित किया था, के साथ विरोध जारी रखा। देशके बहुत भागोंमें गृह-युद्ध शुरू हो गया। और अब हालत ऐसी हो गई थी कि जानपड़ता था कि देश अन्धकारके गर्तमें सदा के लिये चला जाएगा।

जब देशके अन्दर आपसी मतभेद होता है तो विदेशियोंकी बन आती है। हमलोगोंका एक अविवेकी और महत्वाकांक्षी पड़ोसी जापान है। यूरोपीय महायुद्ध और टवान्-ष-खाइ के देश के प्रति विश्वासघातसे फायदा उठाकर जापानने चीनपर चढ़ाई करदी और च्वान्-च्रउकी खाड़ी (कावचौ बे), एक जर्मनीके पट्टे का क्षेत्र और च्वाव्-चि (काव-ची) रेलवे पर जबरदस्ती कब्जा कर लिया। जापानने टवान्-ष-खाइ की सरकारको अपने तथाकथित इक्कीस भागोंके आधारपर सन्धि करनेके लिये बाध्य किया। उन इक्कीस भागोंका स्वीकार करना, चीनको सदाके लिये गुलामीके बंधनमें बांधना था। लेकिन टवान्को तो केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करना था। उसने सोचा था कि जापानकी मददसे वह चीनके सम्राट् होनेका अपना स्वप्न पूरा कर सकेगा। इसी कारणसे उसने सन्धि-पत्र पर ता० ९ मई, सन् १९१५ ई० को हस्ताक्षर कर दिया। सचमुचमें टवान्ने मातृभूमि के साथ बड़ा ही विश्वासघात किया। सारा देश इस अपमानसे बौखला उठा तथा दूसरे राष्ट्रोंका भी ध्यान चीनकी ओर आकृष्ट हुआ। संयुक्तराष्ट्र अमेरिकाने सरकारी तौरपर जापानकी इस नीति का विरोध किया। यद्यपि सन्धिकी एक भी बात कार्यान्वित नहीं हुई परन्तु चीनकी जनता आजभी ९ मई सन् १९१५ को चीनके लिये बेइज्जतीका दिन मानती है।

जापानने जो नमूना पेश किया था भला उससे पश्चिमके और लुटेरे देश क्यों चूकने लगे। वे तो चीनके अन्दर मालामाल होना चाहते थे। देशकी गड़बड़ीसे अपना फायदा उठानेके लिये वे पश्चिमी राष्ट्र चीनके विभिन्न सेनानायकोंको एक दूसरेके विरुद्ध भड़काने लगे तथा अस्त्रशस्त्रसे भी उनकी मदद करने लगे। उसी समय अमेरिकाके प्रेसिडेन्ट हार्डिंगने इस ओर ध्यान

दिया। उन्होंने वाशिंगटन शहरमें १ ली जुलाई सन १९२१ ई० को बेलजियम, फ्रांस, ग्रेटब्रिटेन, इटली, जापान, हालैंड, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका और चीन इन नौ राष्ट्रोंका एक 'प्रशान्त सम्मेलन' बुलाया। अन्तमें चीनके सम्बन्धमें सम्मेलनने एक बात तय की तथा इन नौ राष्ट्रोंने "नौशक्ति सन्धिपत्र" पर हस्ताक्षर किया। इन "नौ शक्तिसंधिपत्र" की कुछ जरूरी बातें यों थी।

(१) चीनकी स्वाधीनता, सर्वोपरिराजसत्ता और शासन तथा सीमा सम्बन्धी अखण्डता स्वीकार कीगई।

(२) चीनमें स्थायी और सुदृढ़ सरकार की स्थापना करनेमें सहयोग प्रदान करना।

(३) चीनकी सीमाके भीतर सभी राष्ट्रोंके व्यापारिक हितमें समानताके सिद्धान्तको मानना।

यद्यपि देखनेमें यह सन्धि चीनके लिये लाभप्रद जान पड़ती है परन्तु वास्तवमें यह एकमात्र विदेशी शक्तियोंके व्यापारिक हितोंसे संरक्षणसे सम्बन्ध रखती है। लेकिन चीनके सामने दूसरा उपाय नहीं था और उसे शिर झुका कर सब कुछ स्वीकार करना पड़ा।

अब देशवासियोंको पूरा विश्वास हो गया कि जबतक सेना अधिनायकों का खात्मा नहीं होता है, देशमें शान्ति स्थापित नहीं होगी, न प्रजातंत्र ही कायम हो सकेगा और बिना सुदृढ़ क्रान्तिकारी केन्द्रीय शासनकी स्थापना के विदेशियोंसे मुकाबला नहीं किया जा सकेगा। चीनी प्रजातंत्र के पिता डा०-सन्-यात-सेनने परिस्थिति फिरसे काबूमें कर ली और दूसरी जबरदस्त क्रान्तिके लिये पुनः लोगोंका नेतृत्व करना आरम्भ किया।

---:*:---

अध्याय ४

चीनकी राजनीतिमें नवयुगका प्रारम्भ

हम पहले ही कह आए हैं कि डा० सन् ने सन् १८९४ ई० में राजनीति में प्रवेश करनेके प्रारम्भिक दिनोंमें ही होनोलुलुमें शिङ्-चुङ्-हुवइ नामक एक क्रान्तिकारी समिति कायम की थी। सन् १९०४ में उस समितिका विस्तार कर चुङ् क्वो-को-मिङ्-चुङ्-मङ् हवइ—चीनी क्रान्तिकारी संघ—नाम रखा गया। इस संघकी बहुतसी बैठकें यूरोप आदि देशोंमें हुईं और अन्तमें इसका प्रधान दफ्तर जापानकी राजधानी टोकियोमें लाया गया। इसी संघके आन्दोलन तथा उद्योगसे माँचू राजका खात्मा हुआ और चीनी प्रजातंत्र की स्थापना हुई। युवान्के विश्वासघात करने पर डा० सन्ने सन् १९१४ ई० में पुनः टोकियोमें चुङ् हुआ-को-मिङ्-ताङ् नामक एक क्रान्तिकारी दलका संगठन किया था जिसका उद्देश्य चीनको युवान्के पंजेसे छुड़ाना था। युवान्के मरनेके बाद उत्तरी सेना अधिनायकोंके आपसी गृह-युद्धने चीनकी हालत एकदमसे बदतर कर दी थी। इन सेना अधिनायकोंकी शक्ति तोड़ने तथा चीनमें क्रान्तिकारी शक्ति पैदा करनेके लिये डा० सन्ने पुनः एक क्रान्तिकारी दल कायम किया जिसका नाम चुङ्-क्वो-क्वोमिन्-ताङ्—चीनी राष्ट्रीय दल था। डा० सन् का विश्वास ठीक था कि क्रान्तिके समय उन चरित्रहीन और अनुशासनहीन पुराने जेनरलोंके हाथोंमें सेनाका भार देना बहुत बड़ खतरा मोल लेना है। इसलिये जल्द ही च्यांङ्-चिए-श (चाङ्-काई-शेक) की अध्यक्षतामें एक ह्वांङ्-फु नामक एक सैनिक विद्यालय की स्थापना की

ताकि प्रजातंत्रके लिये नौजवानोंकी ट्रेनिंग हो। इसीमें भावी सफलताका बीज निहित था।

'क्वोमिनताङ्' का, जो पार्टीका संक्षिप्त नाम है, प्रधान दफ्तर क्वाङ्-चूउ (केन्टन) में रखा गया। सभी क्रान्तिकारी विचारवाले चाहे वे राष्ट्र-वादी हों चाहे साम्यवादी या अराजकवादी, इसके झण्डेके नीचे आ गए और बड़े ही कड़े अनुशासन द्वारा उनका संगठन किया गया। पुनर्संगठित दलका सम्पूर्ण कार्यक्रम सन् १९२३ ई० में प्रकाशित किया गया और उसी समयमें डा० सन् की अध्यक्षतामें एक सैनिक सरकारकी स्थापना क्वाङ्-चूउ (केन्टन) में हुई। डा० सन्के हाथोंमें अधिनायकतंत्रका अधिकार दे दिया गया तथा सभी सदस्योंने उनके सिद्धान्त और आज्ञा माननेकी शपथ ली। इसी बीच उत्तरी सरकारके विरुद्ध लड़नेके लिये काफी सेना तैयार की गई। पर अचानक एक दूसरी ही घटना घटी। सेना अधिनायक उ-पइ फु के अधीन फङ्-यू-च्याङ् नामक एक ईसाई जेनरल था। इसने देशको गृह-युद्धोंसे बचानेकी आशासे उनके विरुद्ध विद्रोह कर दिया। इसकी इच्छा थी कि उत्तरका एक राजनैतिक नेता तुआन्-छि-रुई राज शासनका मुखिया हो। इसीलिये उसने डा० सन् को राष्ट्रीय समस्याओं पर विचार करनेके लिये पइ-चिङ् (पेकिंग) आनेको निमंत्रित किया। उत्तरके सैनिक नेताओंको अपनी पिछली कारवाइयों पर पश्चाताप करते देख डा० सन्, पइ-चिङ् (पेकिंग) जानेको राजी हो गए तथा जापान होकर वहाँ गए भी। जानेके पहले उन्होंने एक घोषणा की जिसमें तीन बातों पर काफी जोर दिया—पहला, सभी असम सन्धियोंको रद्द करना; दूसरा, सैनिकोंके हाथसे शासन भार लेकर जनताके हाथोंमें देना; और तीसरा, 'जनताके तीन सिद्धान्त' की नीति पर राष्ट्रका संगठन करना।

पइ-चिङ् (पेकिंग) जाते समय जब वे जापान गए, तो वहां की जनताके अनुरोध पर उन्होंने एक व्याख्यान इस विषय पर दिया कि किस प्रकार एशियाई राष्ट्रोंका एक सगठन कायम किया जा सकता है। उनके इस व्याख्यानका चारों ओर बड़ा स्वागत हुआ। लगातार दिन रात काम करते रहनेसे डा० सनूका स्वास्थ्य बहुत ही गिर गया था। जब वे पइ चिङ् (पेकिंग) में ही थे, चीनी जनताके अभाग्यसे अचानक ता० १२ मार्च सन् १९२५ ई० में उनकी मृत्यु हो गई। उनकी असामयिक मृत्युसे चीनी प्रजातंत्रको बड़ा ही धक्का लगा और देश पुनः एक बार गड़बड़ीकी हालतमें हो गया।

डा० सन् की अन्तिम इच्छानुसार उनकी मृत्युके बाद 'क्योमिनताङ्' ने वाङ्-चिङ्-वइ की अध्यक्षतामें क्वाङ्-चुउ (केन्टन) में एक राष्ट्रीय सरकारकी स्थापना की। जनवरी सन् १९२६ ई० में सम्पूर्ण चीनके प्रतिनिधियोंकी बैठक वहां ही बुलाई गई जिसमें जेनरल च्याङ्-चिए-ष (च्याङ् काई-शेक) उत्तरी सेना अधिनायकोंसे लड़नेके लिये जेनरलिस्मो चुने गए। इसी वर्ष की जुलाई में चढ़ाई आरम्भ कर दी गई और कुछ ही महीनों में याङ्-चि-च्याङ् (यांगटिसिकियांग नदी) के दक्षिणके सभी प्रान्त जेनरलिस्मों के अधीन हो गए। अप्रैल, सन् १९२७ ही में राष्ट्रीय सरकारकी राजधानी क्वाङ् च्रउ (केन्टन) से नान्-चिङ् (नानकिंग) लाई गई। नानकिंग बहुत प्रचीनकालसे ही देशकी राजधानी था। सन् १९२८ ई० तक सारा देश राष्ट्रीय सरकारके अन्दर आ गया। चीनके इतिहासमें यह सैनिक विजय अद्वितीय है। डा० सन् के सिद्धान्तके अनुसार जनतंत्र कायम होने की प्रथम अवस्थाका अन्त सेना-अधिनायकोंके अन्त होनेके साथ ही होता है। और इसके बाद दूसरी अवस्था क्वोमिनताङ् के अधीन प्रारम्भ होती है।

जिस समय क्वोमिनताङ् की तरफसे मार्शल च्याङ्-चिए-प (च्याङ् काई-शेक) सेना-अधिनायकों से लड़ रहे थे उस समय उनके मार्गमें दो बाधाएँ थीं। पहली तो जापान की चीन पर लोलुप गृद्ध-दृष्टि और दूसरी मास्कोके तृतीय इन्टरनेशनलकी बराबर छेड़खानी।

चीनकी आन्तरिक गड़बड़ीके कारण ही विदेशियोंको वहां पर पंजा फैलानेका हमेशा मौका मिलता रहा है। राष्ट्रीय सरकारकी सैनिक विजयसे चीन एकताके सूत्रमें बंधता दिखाई पड़ने लगा। परन्तु यह एकता जापान की चीन सम्बन्धी अभिलाषाओंको चूर करनेवाली थी। इसलिये जापानने अधिक दिन ठहरना ठीक नहीं समझा और तुरतही बिना किसी कारणके षान्-तुङ् सूबे पर चढ़ाई कर दी और उसकी राजधानी चि-नान् पर कब्जा कर लिया। जापानी इससे भी आगे बढ़कर जेनरसलिस्मोंकी सैनिक विजयको रोकना चाहते थे पर इसमें उन्हें सफलता नहीं मिली। इससे जापानियोंको और भी ईर्ष्या हुई। सन् १९३१ ई० में जब कि याङ्-त्सि-च्याङ् में भयंकर बाढ़ आई थी, उससे फायदा उठाकर जापानियोंने चीनके तीन पूर्वी सूबों पर आक्रमण कर दिया और रुअ-हो (जेहोल) पर कब्जा कर मान्-च्उ-क्वो (माँचूको) नामक गुड़िया रियासत की स्थापना की। जो कुछ हो जापानियों की चढ़ाई से चीनको एक बड़ा फायदा पहुँचा — जापानकी बढ़ती से चीनके लोगोंमें उसके प्रतिरोध करनेकी शक्ति और बढ़ी तथा सारा ही देश राष्ट्रीयता की भावनासे ओतप्रोत हो गया।

परन्तु समाजवादियोंका विरोध दूसरे ही तरह का था। हर बुद्धिमान व्यक्ति क्वोमिनताङ् और समाजवादियोंके अन्दरकी फूटके लिये पश्चाताप करेगा। बहुतसे समाजवादी बड़े ही योग्य और बहादुर व्यक्ति थे। पहले उन लोगोंने

डा० सन् द्वारा स्थापित क्वोमिनताङ् के सिद्धान्तोंको मानना सहर्ष स्वीकार किया था तथा इस बातकी शपथ ली थी कि वे लोग डा० सन्का समर्थन करेंगे। परन्तु बादमें पता चला कि यह उनलोगोंका केवल कौशल और चातुरी थी। क्वोमिनताङ् के द्वारा उनलोगोंने अपना स्वार्थ साधन किया और अन्तमें क्वोमिनताङ् और समाजवादियोंके बीच संघर्ष की नौबत आ गई। सन् १९२७ ही में पार्टीके नेताओंने सभी समाजवादियोंको क्वोमिन-ताङ् से निकाल दिया। तब उनलोगोंने चीनी समाजवादी दलकी स्थापना की और शक्ति संचय करनेके लिये राष्ट्रवादियोंसे संघर्ष करने लगे। उसके बाद समाजवादियोंने क्याङ्-शि (क्यांगसी) के सूबेमें चीनी सोवियत सरकार की स्थापना की और अद्भुत वर्ग-संघर्ष चलाने लगे जिसका प्रधान सिद्धान्त अपने से भिन्न मतावलम्बियोंको कत्ल करना था। थोड़े दिनोंके बाद ही क्वोमिनताङ् की तरफसे (क्वांगसी) के सोवियत सरकारके विरुद्ध सैनिक चढ़ाई की गई और अपार सैनिक शक्तिके द्वारा समाजवादी लोग पूरी तरह दबा दिए गए। लेकिन राष्ट्रीय सरकारने समाजवादियोंके साथ बड़ी ही उदारताका व्यवहार किया। बहुतसे समाजवादियोंको अपने भूतपूर्व कार्य की गलती महसूस हुई और वे लोग पुनः क्वोमिनताङ् में शामिल हो गए। इस प्रकारकी एकता से ही विदेशियोंकी चढ़ाई तथा व्यापारिक लूटसे देशकी रक्षा की जा सकती है।

इन कठिनाइयोंके रहते हुए भी उत्तरी सेना-अधिनायकोंके विरुद्ध छेड़ी गई सैनिक चढ़ाईमें काफी सफलता मिली। आज सम्पूर्ण देश राष्ट्रीय सरकारके अधीन है और चीनी जातिका विश्वास भाजन हो रहा है। अगर समाज-वादियोंकी ओरसे गड़बड़ी न पैदा की गई होती और जापानका आक्रमण न हुआ होता तो चीनका भविष्य और भी अधिक उज्ज्वल होता।

अध्याय ५

वर्तमान सरकारकी शासन-प्रणाली और नीति

यह पहले ही बताया जा चुका है कि जिस समय उत्तरी सेना-अधिनायकोंके विरुद्ध सैनिक चढ़ाई की गई थी उसी समय राष्ट्रीय सरकारकी राजधानी क्वाङ्-चउ (केन्टन) से नान् चिङ् (नानकिंग) लाई गई थी। पार्टीमें कुछ ज़रूरी सुधारके बाद प्रजातंत्र स्थापनाकी दूसरी अवस्था अर्थात् देशके कुछ चुने हुए व्यक्तियोंके हाथोंमें शासन-प्रबन्ध देने पर विचार किया गया। मई, सन् १९३१ ई० में राष्ट्रीय पंचायत नान्-चिङ् (नानकिंग) में बुलाई गई और उसमें एक अस्थायी शासन-विधान तैयार किया गया। यह विधान डा० सन् के राष्ट्रीय पुनर्निर्माणके सिद्धान्तके ऊपर पूर्णतः आधारित था। पंचायतने राष्ट्रीय सरकारके संगठनके विधानमें भी संशोधन किया ताकि उससे और अस्थायी विधानसे सामंजस्य स्थापित हो सके। संशोधित विधानके अनुसार शासनकार्य केन्द्रीय सरकार और विभिन्न स्थानीय सरकारों—इन दो भागोंमें विभक्त किया गया। केन्द्रीय सरकारका सभापति देशका सबसे बड़ा और विशिष्ट गुणोंसे युक्त व्यक्ति ही होता है। यद्यपि वह कुछ समयके लिए शासनका प्रधान रहता है पर उसके ऊपर प्रत्यक्ष रूपसे कोई राजनैतिक जिम्मेदारी नहीं रहती है। राष्ट्रीय सरकारके अधीन पाँच यूआन् (विशेष विभाग) हैं जो एक तरहसे चीनके सर्वश्रेष्ठ विभाग हैं। पाँच यूआन ये हैं—(१) शासन प्रबन्ध यूआन (२) व्यवस्थापिका यूआन (३) न्याय यूआन (४) सर्वोच्च राजकीय परीक्षा यूआन और (५) नियन्त्रण यूआन। हर यूआनमें सभापति, उपसभापति और कुछ मन्त्री लोग होते हैं। शासन-प्रबन्ध यूआनमें

दूसरे यूआन् की अपेक्षा अधिक मंत्री हैं तथा इस यूआन् को ज्यादा अधिकार भी है। शासन प्रबन्ध यूआन् कुछ हद तक यूरोपीय देशोंके मंत्री-मण्डल से मिलता जुलता है परन्तु यह समानता बहुत अधिक नहीं है। ये पांच स्वतंत्र यूआन् डा० सन् के बतलाए हुए सिद्धान्तोंपर संगठित हैं जो सम्मिलित रूपसे नहीं बल्कि अलग अलग चीन की राष्ट्रीय महासभा क्वोमिनताङ् के प्रति जिम्मेवार हैं। इन पांच यूआनों के अलावा कुछ स्वतंत्र सरकारी विभाग खास खास कामोंके लिये हैं जैसे—राष्ट्रीय पुनर्निर्माण कमीसन्, राष्ट्रीय सैनिक परिषद्, राष्ट्रीय आर्थिक-परिषद्, एकेडेमिया सिनीका (अन्वेषण और अध्ययन की सबसे ऊँची संस्था) इत्यादि। स्थानीय सरकार का तात्पर्य प्रान्तीय सरकार, खास खास म्युनिसिपैलिटियाँ जिन्हें विशेषाधिकार प्राप्त हैं, साधारण म्युनिसिपैलिटी और जिले की सरकार से है। प्रान्तीय सरकारें और खास खास म्युनिसिपैलिटियां सीधे शासन-प्रबन्ध यूआन् के अन्दर हैं तथा साधारण म्युनिसिपैलिटियां और जिले की सरकारें प्रान्तीय सरकार के अधीन हैं। हर प्रान्तीय सरकार में एक सभापति और कुछ सरकारी आफिसर होते हैं। प्रान्तीय सरकारके आधीन सचिवालय (सिक्रेटेरियेट), मालमहकमा, राजस्वविभाग, शिक्षा विभाग पुनर्निर्माण तथा शान्ति रक्षक-दल विभाग हैं। विशेषाधिकार प्राप्त म्युनिसिपैलिटियों और साधारण म्युनिसिपैलिटियोंमें एक एक मेयर और प्रबन्ध के लिये उनके अधीन कई विभाग हैं। जिलेका प्रबन्ध मजिस्ट्रेट के अधीन है।

राष्ट्रीय सरकार के अध्यक्ष और पांचों यूआनोंके सभापति और उप सभापति को क्वोमिनताङ् की कार्यकारिणी समिति चुनती है। मिस्टर लिन्-सन् राष्ट्रीय सरकार के अध्यक्ष थे। उन दिनों राष्ट्रीय सरकार और शासन

प्रबन्ध युआन् के सभापति जेनरलिस्मो च्याङ्-चिए प (च्याङ् काई-शेक), व्यवस्थापिका युआन् के मिस्टर सुन-खो (सुन-फु), न्याय युआन् के मिस्टर च्यु-त्रङ्, राजकीय सर्वोच्च परीक्षा युआन् के मिस्टर ताइ-चि-थाव् और नियंत्रण युआन् के मिस्टर यु-यउ-रन् हैं। राज्य के मंत्री लोगों तथा प्रधान प्रधान अफसरोंकी नियुक्ति शासन-प्रबन्ध युआन् की सिफारिश पर राष्ट्रीय सरकार करती है।

यह सर्व विदित है कि राष्ट्रीय सरकार का संगठन क्वो-मिन्-ताङ् के दल सिद्धान्तों (पार्टीप्रिंसिपल्स) पर आधारित है। इसलिये पार्टी की कार्यकारिणी समिति को मंत्रिमण्डल पर पूरा अधिकार है। क्वोमिनताङ् का संगठन करीब करीब भारतीय कांग्रेस के संगठन सा ही है। सबसे ऊपर पार्टी की केन्द्रीय समिति है जिसके अधीन प्रान्तीय समितियां हैं। प्रान्तीय समितियों के अन्दर जिले की समितियां और जिले की समितियों के अन्दर स्थानीय समितियां हैं। इन स्थानीय समितियोंके अन्दर फिर कई शाखाएं हैं। पार्टी का एक विशेष विभाग प्रवासी चीनियों से सम्बन्ध रखता है।

पार्टी की किसी भी शाखा में चाहे वह केन्द्रीय हो या स्थानीय अन्तिम फैसले का अधिकार उसी शाखा की जेनरल मिटिंग को है। कार्यकारिणी समिति और निरीक्षण समिति के साधारण सदस्यों और विशेष सदस्यों के चुनने का अधिकार पार्टी मिटिंग को है। क्वोमिनताङ् की सबसे बड़ी अधिकारी संस्था केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति और देखभाल की अधिकार रखनेवाली सबसे बड़ी संस्था केन्द्रीय निरिक्षण समिति है। पार्टीके कामों को चलाने के लिये केन्द्रीय कार्यकारिणि समिति के सदस्यों के बीच से चुने हुए कुछ सदस्यों की एक स्थायी समिति (स्टैन्डीङ्ग कमेटी) एक केन्द्रीय

राजनैतिक परिषद् भी है जो केवल राजनैतिक कामोंकी देखभाल करती है। स्थायी समितिके सभापति जेनरल च्याङ्-चिए-प (च्याङ्-काई-शेक) है जो इन दिनों सम्पूर्ण राष्ट्र के फौजी तथा गैर फौजी मामलों के एक तरहसे अधिनायक हैं। केन्द्रीय राजनैतिक परिषद् के सभापति मिस्टर वाङ्-चिङ्-वइ हैं जो डा० सन् के सभी राजनैतिक कार्रवाइयों में हमेशा साथ थे। बहुत सी प्रधान राजनैतिक बातें जो डा० सन् के जीवन कालमें ही प्रकाशित हुई थीं, कहा जाता है कि मिस्टर वाङ्-चिङ वइने ही लिखा था।

चीन सरकार की वर्तमान राजनीति डा० सन् के सिद्धान्तों पर आधारित है और वे हैं—देश की शक्ति, स्वतंत्रता, राज और शासन की अखण्डता को कायम रखना, विदेशी शक्तियों के हस्ताक्षेप से देशको बचाना तथा उन सभी असम सन्धियों को रद्द कराना जो मांचू वंशके राजत्वकालमें की गई थीं। अब तक सभी असम सन्धियों तथा विदेशी नागरिकों के अतिरिक्त अधिकार रद्द किये जा चुके हैं तथा मालों पर चुंगी लगाने का स्वतंत्र अधिकार प्राप्त किया गया है।

स्पष्ट कहें तो इन दिनों उसका पड़ोसी जापान ही चीनका एकमात्र दुश्मन है। अप्रत्यक्ष रूपसे जापान ने देशको बड़ा लाभ पहुँचाया है। उसके लगातार अक्रमणने देशभर में उसके विरुद्ध लड़ने की एक अजीब एकता उत्पन्न कर दी है। सभ्य संसार के लोगोंने जापान के हमलेकी निन्दा की है। बहुत जल्द ही जापान इस बात को महसूस करेगा कि चालीस करोड़ जनता की सम्मिलित घृणा के सामने उसका स्थापित किया गुड़िया साम्राज्य नहीं टिक सकता।

तीसरा प्रकरण

चीनकी आर्थिक उन्नति

अध्याय १

—कृषि—

सभ्यता के आदिकाल से लेकर आजतक चीन एक कृषि प्रधान देश रहा है। आज से दस हजार वर्ष पहले सम्राट् षन-नुङने लोगों को खेतीबारी करना सिखाया था और करीब ४६०० वर्ष पहले पीले सम्राट्ने रेशमका उद्योग धन्धा चालू किया था।

प्राचीन कालमें गुजर बसर के लिये खेती ही एक साधन थी। यह एक प्रथा थी कि पुरुषों को खेती करनी चाहिए और स्त्रियों को कपड़ा बुनना चाहिए। चीन देशकी एक कहावत है—"अगर एक पुरुष खेती नहीं करता है तो एक आदमी कहीं जरूर भूखा रहेगा।" प्राचीनकालमें कृषिके अलावा और सभी उद्योग धन्धे जीविका के गौण साधन समझे जाते थे। यहांतक कि जो लोग य-ताइ-फु आफिसोंमें काम करनेवाले - होते थे, वेभी अवकाश के समय खेतों की देखभाल करते थे। चीन के प्राचीन पद्य-साहित्य में इस बातके सैकड़ों उदाहरण मिलते हैं कि उस समय किस प्रकार जमीन के साथ लोगों का प्रेम और सम्बन्ध था। महात्मा मन्-च (मेनसिउस) ने लिखा है—"बसंत ऋतु में राजा स्वयं खेतोंकी जुताई-बुनाई के कामोंकी जाँच करते थे और अगर बीज आदि में कमी रहती थी तो उसे पूरा करते थे। पतझड़ आने पर फसल कटाई की जांच करते थे और कम पैदा

होने पर उसकी कमी को पूरा करते थे। चीन के एक बड़े राजनीतिज्ञ क्वान्-च ने लिखा है—"राष्ट्रकी सम्पत्ति का एकमात्र साधन कृषि है, इसलिये प्राचीनकालके राजा लोग कृषकों का बड़ा आदर सम्मान करते थे।" क्वान्-च ने तो यहांतक कह डाला है कि विद्या का प्रचार अधिक नहीं करना चाहिये क्योंकि इससे देश में बहुत विद्वान हो जाते हैं जो अपने शारीरिक परिश्रम से अपना भरण पोषण नहीं कर सकते और दूसरों के ऊपर निर्भर रहते हैं।

जबकि चीन में राजतंत्र था, हर वर्ष बसन्त ऋतु में एक उत्सव मनाया जाता था जिसमें राजा अपनी प्रजा के सामने अपने हाथों से हल जोतते थे। यह उत्सव पइ-फिङ् (पेपिंग—पेकिंग का नया नाम) के कृषि मन्दिर में मनाया जाता था। चीनी भाषा इस मन्दिर को श्यान्-नुङ् कहते हैं। लेकिन इन दिनों चीनवालों की जिन्दगी में बड़ा ही परिवर्तन हो रहा है और वहां की कृषि में बड़ी अवनति है। हाल की मर्दुमशुमारी रिपोर्टसे ज्ञात होता है कि आज भी चीन की आबादीके ७५ फी सदी मनुष्यों की मुख्य जीविका कृषि है और कृषि ही राष्ट्रीय सम्पत्तिका मेरुदंड समझा जाता है।

कृषिमें भूमिके स्वामित्वका प्रश्न सबसे प्रधान है। उस समय जब कि लोग खानाबदोशीकी हालतमें रहते थे, जमीन पर पूरे कबीलेका अधिकार था। जब लोग खानबदोशीकी हालतको छोड़कर बसने लगे तथा खेती करने लगे तबसे भूमि पर पूरे कबीलेका ही अधिकार रहा। चीनी पद्य साहित्यके एक ग्रंथ श्रउ-सुङ् इस पद्यसे कि—

"ईश्वरके दिए हुए गेहूँ और बीजको
मनुष्योंने, सम्पूर्ण पृथ्वी पर फैला दिया"

यह सिद्ध होता है कि जमीन पर पूरी जातिका अधिकार था। धीरे धीरे वे कबीले एक पूरी कौमके रूपमें बदल गए। जमीनके स्वामित्वकी धारणामें भी परिवर्तन हुआ, फिर भी जमीन राष्ट्रीय सम्पत्ति ही मानी जाती थी। उपरोक्त ग्रन्थमें ही पुनः एक पद्य है—

आसमानके नीचे की सब जमीन राजा की है
पृथ्वीके सब मनुष्य राजाकी प्रजा हैं।

राजाका मतलब यहाँ किसी खास व्यक्ति या उसके व्यक्तिगत अधिकार से नहीं है बल्कि उस पदसे, उस राज्यसे या अच्छी तरह कहा जाए तो सम्पूर्ण जातिसे है। अर्थात् अभी तक भूमि पूरी जातिकी समझी जाती थी। सरकार लोगोंके बीच जमीन बाँट देती थी तथा उन लोगोंसे कर लेती थी। सरकारकी तरफसे बाँटमें दी गई जमीन पर प्रजाका अधिकार होता था। वे लोग उसे जोत कोड़ कर अपना निर्वाह करते थे। जमीनका बँटवारा चिङ्-थिएन प्रणालीसे होता था जिसका उल्लेख प्रथम प्रकरणके अध्याय पाँच में हो चुका है। परन्तु राजा ही जब अपनेको राष्ट्र समझने लगा तथा राजा और राष्ट्र एक ही है, इस भावनाका जन्म हुआ तो कठिनाई बढ़ गई। थोड़े ही समयमें राजा जमीनको अपनी निजी सम्पत्ति समझने लगा तथा जमीनको अपनी इच्छानुसार अपने प्रिय उमरावोंमें बाँटने लगा। उमराव लोगोंने भी अपने पासकी फालतू जमीन (अपने कामके योग्य जमीन अपने पास रखनेके बाद बची हुई जमीन) अपने सगे सम्बन्धियोंको दे दिया। इस प्रकार भूमि जो पहले सार्वजनिक सम्पत्ति थी कालान्तरमें राजाकी निजी सम्पत्ति हो गई। धीरे धीरे आपसमें निजी अधिकारके रूपमें जमीनकी खरीद बिक्री भी लोगोंने शुरू कर दी। परन्तु चीनकी जमीन पर निजी

स्वामित्व प्रणालीकी अपनी कुछ खास विशेषताए हैं। पहली विशेषता यह है कि यद्यपि जमीन पर लोगोंका व्यक्तिगत अधिकार है फिर भी ऐसी जमीन काफी है जो सार्वजनिक है। दूसरी विशेषता यह है कि निजी तौर पर जमीनकी खरीद बिक्री होने पर भी, ऐसा कभी नहीं हुआ कि कुछ लोगोंके हाथोंमें ही कुल जमीन आ गई हो। अर्थात् चीनमें कभी जमींदारी प्रथा नही रही। इस विषय पर एकत्र किए गए हालके आंकड़ोंसे ज्ञात होता है कि पूरी जन संख्याके केवल नौ प्रतिशत आदमियोंके पास ५० मु से १०० मु तक और पांच प्रतिशतके पास १०० मु से अधिक जमीन है। अधिकांश लोगोंके पास कुछ न कुछ जमीन अवश्य है। ऐसे आदमियोंकी सख्या बहुत थोड़ी है जिनके पास कुछ भी जमीन नहीं है। दूसरे देशोंमें बिना घर जमीन वाले आदमियोंकी समस्या बड़ी विकट हो गई है। परन्तु चीनमें इस प्रकारकी हालत नहीं है। इन दिनों राष्ट्रीय सरकार डा० सुन्-हं-दयान (डा० सन-यात-सेन) की भूमि सम्बन्धी नीतिके अनुसार जमीनकी समस्यायोंकी जाँच कर रही है और भूमिके स्वामित्वके सम्बन्धमें करीब करीब समाजवादी प्रणाली कायम करनेकी कोशिश कर रही है।

चीनका क्षेत्रफल बहुत बड़ा है और वहाँकी भूमि प्राकृतिक पदार्थोंसे भरी हुई है। यह देश बहुत प्राचीन कालसे ही कृषि प्रधान है इसलिये सब दिनोंसे राष्ट्रीय सम्पत्तिका मुख्य साधन कृषि ही रही है। धान, गेहूँ, जौ, बाजरा, सोयाबीन और भी बहुत तरहके अनाज, तरह तरह की तरकारियाँ, सन, जूट, चाय, ईख आदि चीनकी प्रधान उपज है।

देशमें जानवरोंकी भरमार है। यद्यपि इसकी गणना नहीं की गई है परन्तु घरेलू जानवर राष्ट्रीय सम्पत्तिका एक मुख्य अंग समझा जाता है।

जंगलोंमें रोएँदार जानवर काफी पाए जाते हैं तथा बड़ी संख्यामें मारे भी जाते हैं। उनका रोआँ खासकर पश्चिमी देशोंमें भेजा जाता है। जंगलोंमें लकड़ी काफी मिलती है। चीनमें तीन प्रसिद्ध जंगली भू भाग है—तीन पूर्वी प्रदेश फु-चिआन् (फुकियान) प्रदेश और हु-नान् प्रदेश। इनमें तीन पूर्वी प्रदेशका जंगल क्षेत्रफल तथा जंगली सम्पत्ति दोनों खयालसे सबसे बड़ा है। फु-चिआन् (फुकियान्) का जंगल खास कर कपूरके वृक्षके लिये प्रसिद्ध है तथा व्यापारकी दृष्टिसे बड़ा लाभदायक है। मछलियां भी चीनमें काफी पाई जाती हैं। समुद्र और देशके जलाशयोंसे बहुत मछलियाँ पकड़ी जाती हैं। चीनमें मछली पकड़नेका सामुद्रिक घाट २८३५०० वर्गमीलमें फैला हुआ है। और सालाना करीब १५३४७२३०० डालरकी मछली पकड़ी जाती है।

चीनकी भूमि खनिज पदार्थोंसे भरी हुई है। उद्योग धन्धे और व्यापारके लिये जितने भी तरहके खनिज पदार्थ हैं, चीनमें सभी काफी परिमाणमें पाए जाते हैं जैसे कोयला, लोहा, मैंगनीज, टंगसटन, एनटीमनी, सोना, चाँदी, पेट्रोल और पारा आदि। डा० वङ्-वन्-हाव् नामक एक भूगर्भवेत्ताने हिसाब लगाकर बताया है कि चीनमें २,५०,००,००,००,००० टन कोयला पृथ्वीके नीचे पड़ा हुआ है। वर्तमानकाल (सन् १९३८ ई०) में जितना कोयला निकाला जाता है उस हिसाबसे यह खजाना १०,००० वर्षोंके लिये काफी है। लोहा भी ११३२८०१५७० टन है लेकिन यह अधिकतर मंचूरियामें पाया जाता है। अगर मंचूरिया सब दिनके लिये चीनके हाथसे निकल गया तो सचमुच ही चीनकी सीमाके अन्दर कुछ भी लोहा नहीं रह जाएगा। टंगसटन नामक धातु जो संसारमें बहुत कम पाया

जाता है, चीनमें बहुत अधिक परिमाणमें है। सन् १९३३ ई० में सारी दुनियामें कुल १४००० टन टंग्सटन निकाला गया जिसमें ६००० टन केवल चीनसे ही निकाला गया था। एन्टीमनी नामक धातुके लिये चीन संसार भरमें प्रसिद्ध है। चीनमें जितने खनिज पदार्थ हैं, अगर उनका उपयोग किया जाय तो दुनियाके सबसे धनी देशोंमें पुनः इसकी गिनती होने लगेगी।

यद्यपि चीन प्रधानतः कृषि प्रधान देश हो रहा है फिर भी रेशमी कपड़े और चीनी मिट्टीके बर्तन बनानेके उद्योग धन्धेमें बहुत दिनों तक संसारमें इसका आधिपत्य रहा। पहले पहल चीनका रेशमी कपड़ा रोम् राज्यके समय यूरोप पहुँचा। लगभग २०० ई० पू० से लेकर कितनी ही शताब्दियों तक इसका यूरोपके बाजारमें बोलबाला रहा। सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दियों तक भी यूरोपमें चीनका रेशमी कपड़ा शौक की सामग्री समझा जाता था। चीन अपने कलात्मक चीनी मिट्टीके बर्तनके लिये सदासे ही संसारमें प्रसिद्ध है। चीनके मिङ् राजकुलके समय (सन् १३६८-१६४४ई०) चीनी मिट्टीसे भिन्न भिन्न तरहके बर्त्तन बनानेकी कला अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गई थी। उस समय तक यूरोपके साथ व्यापार करनेका सामुद्रिक मार्ग खुल चुका था इसलिये चीनी मिट्टीके नाजुक और भारी बर्तनोंका दूर दूर तक ले जाना भी आसान हो गया था।

अध्याय ९

स्वावलम्बन और रूढ़ि

प्रारम्भ से ही चीन आर्थिक दृष्टिसे स्वावलम्बी रहा है। यह केवल डींग ही नहीं था जबकि चीन के सम्राट् छ्यान्-लुङ् ने इंगलैण्ड के राजदूत मेकार्टनी को कहा था उसके दैवी राज्यमें सभी चीजें प्रचुरमात्रामें पाईजाती हैं और चीन को 'बाहरी असभ्य लोगों' की बनाई चीजों की कतई जरूरत नहीं है। लेकिन सम्राट् छ्यान्-लुङ् को यह बात मालूम थी कि बाहरी असभ्य लोगों को चीन की बनी चीजों की जरूरत है। खासकर चाय, चीनी मिट्टीके बर्तन और रेशमी कपड़े की। इसलिये इन चीजोंके विदेशी व्यापारियोंके लिये चिउ-त्वङ् (मेकौ) का बन्दरगाह खोल दिया गया था। लेकिन चीन को विदेशी चीजों की जरूरत एकदम नहीं थी।

यह बात नहीं थी कि चीन सारे देशकी पैदावार मिलाकर आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी था बल्कि हर प्रान्त अपनी जरूरतकी चीजें अपने रकबेके अन्दर ही पैदा कर लेता था। उदाहरण के लिये हु नान प्रदेश को लीजिए। इस प्रदेश में खाद्यसामग्री समूचे सूबे में होनेवाली खपतसे कहीं अधिक पैदा होती है। इसलिये उन चीजोंका निर्यात भी खूब होता है। हु-नान् का प्रदेश केवल अपवाद नहीं है। यही हालत प्रायः सभी प्रदेशों की थी। इसी कारण सेना अधिनायक आपसमें एक दूसरेके प्रान्तको दखल करते थे ताकि उन्हें अपनी जरूरतके लिये इच्छित सम्पत्ति हाथ लगे।

इतना ही नहीं आर्थिक दृष्टिसे ग्राम भी स्वतंत्र हैं। खानेकी चीजें बस्तीमें ही पैदा हो जाती हैं, कपड़े भी लोग घरमें बुन लेते हैं तथा और

भी साधारण ज़रूरत की चीजें स्थानीय उपजसे ही मिल जाती हैं। मशीन की बनी चीजोंका रखना आधुनिक युगमें एक फैशन समझा जाता है। परन्तु चीनकी साधारण जनताको इन चीज़ोंकी बहुत कम जरूरत पड़ती है। इन ग्रामोंमें अकसर मेला लगा करता है तथा वहाँ काफी संख्यामें लोग एकत्रित होते हैं। ये मेले आसपासकी बस्तियोंके लिये 'विशिष्ट क्लब' से होते हैं।

महात्मा मन्-च्र (मनसिउस) ने चीनके पुराने समयके ग्रामीण जीवन के सम्बन्धमें लिखा है :—

"लोग बस्तीके बाहर कभी ही पैर देते हैं और अपने जिलेके बाहर तो कभी नहीं जाते हैं। खेतके आसपासके लोग एक दूसरेकी खेतीमें, रखवाली करनेमें तथा बीमारीमें मदद देते हैं। इस प्रकार आपसमें एकता तथा प्रेम के साथ लोगोंका रहना होता है।

महात्मा लाव्-च्र (लाव-त्सु) ने भी बड़े ही सरल शब्दोंमें ग्रामीण जीवनका वर्णन किया है। :—

"गांवमें भोजन मीठा लगता है, कपड़े सुन्दर होते हैं, मकान सुरक्षित रहता है और जिन्दगी आरामसे कटती है। एक गांव दूसरे गांवके अत्यन्त पास बसा हुआ है—यहाँ तक कि एक दूसरे को अच्छी तरह देख सकते हैं। एक बस्तीके लोग दूसरी बस्तीके कुत्तोंका भूकना और मुर्गीकी बांग सुन सकते हैं। लेकिन तौभी लोग अपनी बस्तीके खेतके बाहर कभी भी नहीं जाते।"

उपरोक्त उद्धरणमें कुछ भी अतिशयोक्ति नहीं है। आज भी ऐसे लोग मौजूद हैं जो अपने घरके बाहर पाँच मीलसे अधिक नहीं गए हैं। उनलोगों को किसी बाहरी चीजकी ज़रूरत ही नहीं है।

बस्तीकी बात तो अलग रही हर परिवार हर बातमें स्वावलम्बी होनेकी

कोशिश करता था। पुरुष खेतीबाड़ीके काममें लगे रहते थे और स्त्रियां घर का काम सभालती थीं तथा फुरसतके समय कपड़े बुनती थीं। सुअर, मुर्गा, मुर्गी और गाय तो हर परिवार अवश्य पालता था। नजदीकके तालाब और नदियोंसे मछलियाँ काफी मिल जाती थीं। अवकाशके समय परिवारके सभी व्यक्ति कोई दस्तकारी या कुछ दूसरा काम करते थे।

देशका आर्थिक जीवन स्वावलम्बी होनेके कारण लोगोंमें स्वभावतः दकियानूसीपन आ गया था। परन्तु लोगोंकी जिन्दगीका ध्येय सदा ही ऊँचा रहता था। लोगोंके कानोंमें महात्मा छ्वान-त्र (कानफ्यूसियस) के निम्नलिखित वाक्य बराबर गूंजते रहते थे :—

जमीनके प्राकृतिक धनमें काफी उन्नति करनी चाहिए और उसका खूब उपयोग करना चाहिए। लेकिन अपने स्वार्थके लिये नहीं—सार्वजनिक भलाई के लिये। शरीर और बुद्धिसे काफी काम लेना चाहिए, परन्तु अपने स्वार्थ साधनमें नहीं—समाजकी भलाईके लिये।"

सर्वोच्च उद्देश्य यह है कि जीवनमें संयम और संतोषकी वृत्ति हो तथा जिन्दगी परिश्रम और मितव्ययितासे गुजरे। चीनके जीवनका आदर्श भारतके उच्च जीवन व्यतीत करनेके आदर्शसे समानता रखता है केवल बाहरी दशाओंमें ही नहीं बल्कि आन्तरिक बातोंमें भी।

अध्याय ३

पश्चिमी देशोंके साथ व्यापार

ऊपर जिन बातोंका उल्लेख किया गया है चीनमें आज वैसी हालत नहीं है। विदेशी व्यापारके शुरू होते ही, खासकर पश्चिमी देशोंके साथ व्यापार करनेके समय से, हालतमें बुनियादी परिवर्तन हो गया है। देशकी आर्थिक दशाका ज्ञान प्राप्त करनेके लिये चीनके अन्तरराष्ट्रीय व्यापारका सारांश जान लेना ठीक होगा।

असलमें विदेशी व्यापार अफीमकी लड़ाई समाप्त होनेके बादसे प्रारम्भ होता है। यह मानव सम्बन्ध और सभ्यताके इतिहासका बड़ा ही दुःखान्त अध्याय है। सचमुचमें अफीमकी लड़ाई चीनका घृणित मानमर्दन था परन्तु नैतिक दृष्टिसे पश्चिमवालोंके, चीनकी अपेक्षा, अधिक पतनका परिचायक था। अफीमकी लड़ाईकी संक्षिप्त कहानी यों है :

चीनमें सबसे पहले पुर्तगालके व्यापारियोंने अफीम लाई। उस समय अफीम बहुत कम परिमाणमें तथा दवाईके लिये लाई जाती थी। राजकीय घोषणा-पत्रसे ज्ञात होता है कि सन् १७२९ ई० में उस समयकी चीनी सरकारने अफीमके व्यापार पर कड़ा नियंत्रण कर दिया था ताकि सालभरमें २०० पेटीसे अधिक अफीम नहीं लाई जासके। सन् १७७३ ई० में ईस्ट इण्डिया कम्पनीने बंगाल, बिहार और उड़ीसामें पैदा होनेवाली अफीमको चीन में भेजनेके लिए एक सनद प्राप्त की। उसके बाद अंगरेज व्यापारी चीनके सबसे दक्षिणी प्रान्त क्वङ्-तुङ (केन्टन) में बड़े ही अधिक परिमाणमें अफीम भेजने लगे। ईस्ट इण्डिया कम्पनीके निरन्तर प्रयत्न और कृपासे

सन १७८९ ई० तक अफीमका आयात बढ़कर वार्षिक ४०५४ पेटी तक आ गया तथा चीनके सभी बाज़ारोंमें अफीम फैल गई। अफीमका आयात दिन प्रतिदिन बढ़ता ही गया और सन १८३५ ई० और सन १८३९ ई० के बीच उपरोक्त संख्या बढ़कर सालाना तीस हजार पेटी तक हो गई। इस विनाशकारी द्रव्यके कारण लोगोंके पसीनेकी कमाईका करीब करीब एक लाख टेल (चीनी सिक्का) देशसे बाहर जाने लगा। लेकिन इससे भी अधिक भयानक क्षति जो चीनकी हुई वह थी देशके एक छोरसे दूसरे छोर तक अफीम खानेवाले करोड़ों आदमियोंका शारीरिक और नैतिक पतन। चीनके लम्बे इतिहासमें कितनी ही बार सारे देश और उसके निवासियोंको नाना प्रकार की कठिनाइयों और बुराइयोंका शिकार होना पड़ा है लेकिन वह अफीम खानेकी आदत सबसे भयानक और बुरी रही है। इसने वस्तुतः समाज और सभ्यतकी जड़ पर ही कुठाराघात कर दिया है।

इस भयानक परिस्थितिसे सरकार की भी आंखें खुल गईं और सन १८३८ ई० में लिन् चे-श्यु नामक बड़ा ही योग्य सरकारी अफसर इस भयंकर व्यापारको समूल नष्ट करनेके लिये क्वाङ-च्वउ (केन्टन) का गवर्नर नियुक्त किया गया। यद्यपि इसके पहले भी अफीम की रोकथामके लिये सरकारकी ओरसे कार्रवाई की गई थी परन्तु उसका फल कुछ नहीं हुआ था। लिन् ने अपना काम बड़ी तत्परतासे प्रारम्भ किया और क्वाङ-च्वउ (केन्टन) के विदेशी व्यापारियों तथा जहाजी आफिसरोंने बाध्य होकर प्रतिज्ञा की कि वे लोग अब चीनमें अफीम नहीं लाएंगे। व्यापारी तथा जहाजी लोग प्रतिज्ञा पालन करते हैं या नहीं इसकी जांचके लिये लिन् ने उनलोगोंसे यह भी इकरार कराया कि चीनी आबकारी विभागके अफसरोंको वे लोग अपनी

जहाज मुआइना करने देंगे। शर्त यह रही कि अगर किसी जहाज पर अफ़ीम निकली तो जहाज जब्त कर लिया जायगा तथा कानून भंग करनेवालेको फांसी की सज़ा मिलेगी। उसके बाद लिन ने क्वाङ्-चउ (केन्टन) के अंगरेजी व्यापारियोंको २०२९१ पेटी अफ़ीम सरकारके हवाले करनेको बाध्य किया। सभी अफ़ीम खुले बाजारमें जला दी गई। सन् १८४० ई० में चीन और अंगरेजोंके बीच हुई अफ़ीम की लड़ाईका यही तात्कालिक कारण हुआ। यह लड़ाई लगातार तीन वर्षों तक चलती रही।

पहले पहल तो युद्धका पासा अंगरेजोंके विरुद्ध पड़ रहा था क्योंकि क्वाङ्-चउ (केन्टन) का किला बड़ा ही मजबूत था। साथ साथ अंगरेजों को उत्तरी मोर्चे पर अधिक शक्ति केन्द्रित करनी पड़ती थी। परन्तु मांचू सरकारकी हालत पहले से ही खराब हो रही थी इसलिये अंगरेजोंका सामना अच्छी तरह नहीं कर सकी और अन्तमें चीनको आत्म-समर्पण करना पड़ा। नान्-चिङ् (नानकिंग) में दोनों देशोंके बीच सन्धि हुई। इस सन्धिके अनुसार चीनने ९०००००० लाख पौंड अफ़ीमके व्यापारका हर्जाना, १ करोड़ २० लाख पौंड युद्धका अतिरिक्त खर्च और ह्शांङ्-काङ् (हांगकांग) का टापू अंगरेजोंको दिया तथा चीनके बहुतसे प्रसिद्ध व्यापारी-बन्दरगाह भी उन लोगों के लिये खोल दिए गए। सन्धिपत्रमें अफ़ीम सम्बन्धी बात की जिक्र तक नहीं की गई उसके रोक थाम की बात तो दूर रही।

राष्ट्रीय सरकारकी स्थापनाके बाद अफ़ीमके विरुद्ध जिहाद प्रारम्भ कर दिया गया है परन्तु अभी तक भी इसके खानेकी आदत पूर्ण रूपसे नहीं गई है। यह चीनके लिये बड़ी शर्म की बात है परन्तु इसका श्रेय अधिकतर पश्चिमवालोंको ही है।

अफ़ीम युद्धके पहिले विदेशी व्यापार केवल क्वाङ्चउ (केन्टन) और चिउ-ल्वङ् (मेकौ) इन दो बन्दरगाहोंसे ही हो सकता था। अबतक अफ़ीमको छोड़कर चीनमें विदेशोंसे केवल छोटी घड़ी, बड़ी घड़ी आदि ही आती थी और चीनसे विदेशमें रेशम, चाय चीनी मिट्टीके बर्तन आदि जाते थे। अफ़ीम युद्धके समाप्त होते ही बहुतसे विदेशी राष्ट्रोंके व्यापारी चीनमें आए और निर्बल माँचू सरकार एकके बाद एक बन्दरगाह उनलोगोंके व्यापार के लिये खोलती गई। सन् १९११ ई० में जब माँचू सरकारका खात्मा हुआ उस समय एक सौ चीनके बन्दरगाह विदेशी व्यापारियोंके लिये खुले हुए थे जो 'सन्धिसे खोले गए बन्दरगाह' (ट्रीटी पोर्ट) कहलाते थे। मशीनकी बनी सस्ती चीजोंसे चीनकी सभी बाजारें पट गईं तथा देशका गृह-उद्योग दिनोंदिन नष्ट होता गया। इस बारेमें भी चीन और भारतकी दशा एकसी है। यूरोपीय राष्ट्रोंके हाथोंसे व्यापारिक शोषण भारतके ही समान चीनका भी हुआ है। ये दोनों राष्ट्र पीड़ित दो बहनके समान हैं।

सन् १८६४ ई० में चीनके विदेशी आयात मालका मूल्य कुल ५१२९३५७८ हाइ-क्वान् टेल था और यह आयात बढ़ते बढ़ते सन् १९३१ ई० में १४३३४८९१९४ टेल तक के मूल्यका हो गया। इन्हीं दो वर्षोंमें चीनके निर्यात मालका मूल्य क्रमशः ५४००६५०९ टेल और ९०९४७५५२५ टेल था। यह अन्तरराष्ट्रीय व्यापार नहीं है बल्कि एक राष्ट्रका दूसरे राष्ट्र द्वारा गला घोंट कर मारना है। विदेशियोंने चीनमें असंख्य पूँजी लगाई है। बहुतसे खान आज भी उन्हींके हाथोंमें हैं तथा चलन (करेन्सी) भी बहुत दिनों तक विदेशियों द्वारा ही नियंत्रित होती थी।

—:o:—

अध्याय ४

प्राचीन आर्थिक संगठनका टूटना

विदेशी व्यापारके प्रारम्भ होते ही चीन वालोंकी जिन्दगीमें बहुत बड़े बड़े परिवर्तन हुए, जो यों हैं—

(१) 'सन्धिसे खोले गये बन्दरगाहों' (ट्रिटीपोर्ट) में धन सिमिट सिमिट कर इकट्ठा होने लगा। ग्रामकी अवनति होने लगी तथा बन्दरगाह और शहर जहाँ विदेशी लोग बहुत संख्यामें बसे थे, राजनैतिक और सामाजिक दृष्टिसे उन्नति करने लगे। इससे पहले चीनके शहरोंका महत्व व्यापारिक दृष्टिसे कुछ भी नहीं था। ये केवल विद्या और संस्कृतिके केन्द्र थे। सौ वर्ष भी नहीं हुआ होगा जब कि षाङ्-हाइ (शंघाई) थोड़ी आबादीवाला एक छोटासा गांव था। नान्-चिङ् (नानकिंग) की सन्धिके अनुसार षाङ-हाइ (शंघाई) का बन्दरगाह विदेशियोंके व्यापारके लिये खोल दिया गया और उसके बाद ही इसकी उन्नति भी शीघ्रतासे होने लगी। आज इस शहरकी आबादी ३००००००० लाख है तथा यह व्यापार, उद्योगधन्धे और यातायात का केन्द्र हो रहा है। इस शहरमें बहुतसे विदेशी रियायती-क्षेत्र और दस राजदूत-निवास-भवन (काउन्स्लेट) हैं। यहाँ विदेशियोंकी घनी आबादी भी है। पश्चिमी राष्ट्रोंने चीनकी आर्थिक जिन्दगीमें अधिकतर पंजा षाङ्-हाइ (शंघाई) के रास्ते ही जमाया है। षाङ्-हाइ (शंघाई) की सी ही हालत चीनके और भी कितने बन्दरगाहों की है।

अब गांवोंकी प्रधानता नहीं रही। बड़ी संख्यामें लोग गांवोंसे आकर शहरोंमें बस रहे हैं। परन्तु चीन एक कृषिप्रधान देश है। गांवोंकी अवनति

समूचे राष्ट्र के लिये हानिकारक है। शहरोंमें विदेशीपन आ गया है। और वे वास्तविकतासे दूर होते जा रहे हैं।

(२) अब पूँजीवाद और परिमित दायित्व व्यापारिक कम्पनियों (लिमिटेड लाइबिलिटी ट्रेडिंग कम्पनी) के विषयमें ध्यान दीजिए। ये दोनों चीजें चीनमें बाहरसे आई हैं। किसी भी समाज में, किसी भी कालमें, किसी न किसी रूपमें, आदमी आदमीके बीच, परिवार परिवारके बीच, वर्ग वर्गके बीच धनके बँटवारेकी असमानता जरूर रहेगी। चीनी सभ्यताके स्वर्ण युगमें भी यह चीज थी। लेकिन पश्चिमी पूँजीवादी वर्गके समान कोई वर्ग चीनमें कभी नहीं था।

चीनका व्यापार सदा छोटे छोटे व्यापारियोंके हाथ था। यहां पर परिमित व्यापारी कम्पनी और बड़े बड़े उद्योग धन्धे चालूकर धनके एकत्री-करण और ठग धन्धा करनेकी चेष्टा कभी नहीं की गई थी। एक तरहसे हर किसान व्यापारी था। सौदागर लोग चीज पैदा करनेवाले और खरीदनेवालों के बीच दलालका काम करते थे। ये लोग समाजमें घृणाकी दृष्टिसे देखे जाते थे। उसके बाद चीनमें विदेशी व्यापारियोंका पदार्पण हुआ जो अपने साथ अपार धनराशि, मशीन और अजीब तरहकी व्यापारिक नीति भी लेते आए। चीनके सभी छोटे छोटे व्यापारी इन विदेशी व्यापारियोंके पेटमें समा गए। धीरे धीरे चीनवालोंने भी विदेशी व्यापारके तरीके सीखे तथा उन्हें भी इस काममें सफलता मिली। चीनवालोंने भी पुतलीघरों और कम्पनी स्थापित करना आदि सीखा तथा वर्तमान पूंजीवादके रास्ते पर अनिश्चित और लड़-खड़ाते पगसे ठुमुक ठुमुक कर चलना प्रारम्भ किया।

(३) पूंजीवादके आगमनके साथ ही साथ चीनमें मशीनकी स्थापना-

की गई तथा बड़े पैमाने पर चीजें बनने लगीं। पहले ही कहा जा चुका है कि पुराने समयमें भी चीन उद्योग-धन्धेकी दृष्टिसे काफी तरक्की पर था—वे ग्रामीण उद्योग-धन्धे थे। उस समय पुतलीघर और मशीनका नाम भी नहीं था। ये चीजें विदेशी व्यापारियोंकी कृपासे चीनमें आई हैं।

पहले तो विदेशी व्यापारी अपने अपने देशोंकी बनी चीजें लाए। परन्तु पीछे इन लोगोंने चीनमें ही पुतलीघरोंका निर्माण किया और चीजें बनाने लगे। कच्चा माल आसानीसे और सुभीते दरमें इन्हें मिल जाता था। मज़दूरी बहुत कम थी इसलिये चीनके बाजारका शोषण करनेके लिये इन लोगोंने कोई उपाय उठा नहीं रखा। विदेशियोंने अपने देशसे केवल पूंजी लाई और अपने संगठन करने की शक्तिके जोर पर बाकी काम चीनी लोगों द्वारा ही कराया।

प्रारम्भिक विदेशी व्यापारियोंके लिये तो चीन वास्तवमें स्वर्णभूमि थी। क्लार्क विश्वविद्यालय (संयुक्त राज्य अमेरिका) के प्रो० जी० एच० ब्लेक्सलीने बताया है कि चीनमें करीब ४००००००००० डालरकी विदेशी पूँजी लगी हुई है। यह रकम चीनकी आबादीके हर मनुष्य पर दस डालर के हिसाबसे पड़ती है।

परन्तु शीघ्र ही इन विदेशी शोषकोंसे चीनवालोंने सबक सीखा और यहांके लोगोंने भी पुतलीघरोंका निर्माण करना प्रारम्भ कर दिया। हालकी गणनासे ज्ञात होता है कि इस समय देशमें विविध उद्योग धन्धेके १७९५ पुतलीघर हैं।

(४) सबसे अन्तिम परन्तु सबसे प्रधान प्रभाव जो अन्तरराष्ट्रीय व्यापारके द्वारा चीन पर पड़ा वह है विदेशी बैंकोंकी स्थापना और विदेशियों द्वारा चलन (करेन्सी) का नियंत्रित होना। अतिरिक्त धन जमा करने

और विनिमयके लिये प्राचीनकालसे ही चीनमें देशी बैंक कायम थे। परन्तु ये बैंक स्थानीय संस्थाके रूपमें थे और उनका न कोई खास महत्व था और न उनके पास किसी तरहकी शक्ति थी। विदेशी व्यापारके साथ साथ चीनमें कितने ही विदेशी बैंकोंकी स्थापना हुई। इन बैंकोंने चीन सरकारसे नोट चालू करनेके कानूनी अधिकार प्राप्त कर लिए और इस प्रकार राष्ट्रीय चलन (करेन्सी) पर अधिकार जमा लिया। इस दिशामें भी चीनवालोंने विदेशियोंका अनुकरण किया और थोड़े समयमें विदेशी तरीकों पर चीनवालोंके भी कितने बैंक चालू हो गए। हालके लिए गए आंकड़ेसे पता चलता है कि इस समय देशमें १०६ चीनी बैंक और २४ विदेशी बैंक हैं। परन्तु आज भी चीनी बैंक विदेशी बैंकके समान नहीं हो पाए हैं।

मॉंचू-राजकुलके अन्तिम दिनोंमें उन घूसखोर आफिसरोंने, जिन्हें अपनी सम्पत्तिके ज़ब्त कर लेनेका डर था, अपनी घूसखोरीकी कमाई पूंजी विदेशी बैंकोंमें जमा कर दी थी। परन्तु भाग्य बड़ा प्रबल होता है। गत यूरोपीय युद्धके समय उन सभी विदेशी बैंकोंका दिवाला निकल गया और उन घूसखोर आदमियोंकी सम्पत्ति भी जैसे आई थी वैसे ही सब दिनोंके लिये चली गई।

प्रजातंत्र स्थापनाके बाद भी सेना-अधिनायकों और उन आदमियोंने, जिन्होंने नैतिक तरीकेसे सम्पत्ति नहीं कमाई थी, अपने धनको अपने तथा अपने बालबच्चोंके लिये विदेशी बैंकोंमें जमा कर दिया है। सन् १९२५ ई० में इन बैंकोंमें कुल जमा ४९४७४०६८१७ डालर का था। आजकल तो यह रकम बढ़कर और भी अधिक हो गई होगी। अप्रत्यक्ष रूपसे ये बैंक देशकी राजनीति पर बुरी तरह असर डालते रहते हैं। ये बैंक एक तरफ तो राष्ट्रीय सरकारको काफ़ी जमानत और बड़े सूद पर रुपये देते हैं और दूसरी

और सेना-अधिनायकोंको आपसमें तथा केन्द्रीय सरकारके विरुद्ध लड़नेके लिये जरूरत पड़ने पर कर्ज़ा देते हैं। चीनके गृह-युद्धोंका बहुत दिन तक जारी रहनेका यह भी एक प्रधान कारण था।

ये सभी बातें किसी भी राष्ट्रकी जिन्दगीको उलट पुलट करनेके लिये काफ़ी हैं। चीनमें तो इनका और भी बुरा असर पड़ा है। जान पड़ता है कि चीनकी सभी कड़ियाँ टूट टूट कर अलग हो गई हैं।

विदेशी बाशिन्दोंसे भरपूर शहरोंके सामने गांवोंकी कोई हस्ती ही नहीं रही। आज चीनवालोंका पेशा केवल कृषि नहीं है। प्राचीनकालके ग्रामीण शिल्पी और व्यापारियोंकी जगह आज चारों ओर बड़े बड़े धनी और औद्योगिक वर्ग, नये नये बेंक और पुतलीघर दिखाई पड़ते हैं। ऐसा जान पड़ता है मानो प्राचीन चीन अपने भूतकालके कर्त्तव्यसे लज्जित होकर जल्दी जल्दी नया वस्त्र धारण कर रहा है।

—:०:—

अध्याय ९

आर्थिक पुनरुद्धार के वर्तमान आन्दोलन

चीनके प्राचीन आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक सभी प्रकार के ढांचे आज ढह चुके हैं। अनेक कठिनाईयों के बीच आज चीन के लोगोंको नई जिन्दगी का मुकाबला करना पड़ता है। इन कुछ वर्षों के बीच ही एक नये चीन का निर्माण हुआ है। भूतकाल की अपेक्षा आज चीन की अधिक उन्नति हुई है, इसका पता तो भविष्य में चलेगा। परन्तु आधुनिक युगकी सभी समस्याएं समाज के नेताओं और राष्ट्रीय सरकार के मन्त्रियों के सामने हैं जिनको उन्हें सुलझाना है। देशके विस्तृत भूभाग और आबादी के कारण समस्याएं और भी जटिल हो गई हैं।

आज देश अनुभवी लोगों द्वारा शासित हो रहा है और वे लोग आर्थिक समस्या की प्रधानता को अच्छी तरह समझते हैं। डा० सन् ने भूमिविषयक समस्या पर बहुत ध्यान दिया था और उन्होंने अपने अन्तिम कार्यक्रम में जीवन की भौतिक समस्याओं पर बड़ा ही जोर दिया है।

सन् १९३१ ई० में राष्ट्रीय आर्थिक परिषद् की स्थापना इसलिए हुई कि वह देशके आर्थिक पुनर्निर्माण कार्यके लिये एक ब्यौरेवार कार्यक्रम तैयार करे तथा निर्माण-कार्यका पूरा नियंत्रण अपने हाथ में ले। गत वर्षों से परिषद् ने बड़ी तत्परता के साथ इन कामों को किया है और इस दिशा में काफी उन्नति की है।

राष्ट्रके आर्थिक पुनरुद्धार में राष्ट्रीय सरकार को बड़ी सफलता मिली है। प्रजातंत्र की स्थापना के पहिले चीनकी आर्थिक अवस्था बराबर ही

गड़बड़ी की हालत में रहती थी। राष्ट्रीय आयव्यय (बजट) कभी भी प्रकाशित नहीं होता था और राज्य के प्रधान अफसर अपनी निजी आमदनी और राष्ट्रीय आय को अलग मानने की जरूरत नहीं समझते थे।

सन् १९३० ई० में पहली बार राष्ट्रीय आयव्ययका बजट प्रकाशित हुआ और राष्ट्रीय राजस्वके लिये एक कन्ट्रोलर जेनरल की नियुक्ति हुई। तबसे हर वर्ष राज्यके आय-व्यय का बजट प्रकाशित होता है। पहले केन्द्रीय सरकार और प्रान्तीय सरकारके आर्थिक अधिकार का बंटवारा नहीं था। इस कारण बड़ी दिक्कत होती थी। यह समस्या भी सफलतापूर्वक हल की गई। कुछ मदोंसे प्राप्त आय स्थानीय सरकार की होती है और कुछ केन्द्रीय सरकार की।

गैर कानूनी कर जो प्रजासे बराबर लिया जाता था एकदमसे उठा दिया गया। अब वे दिन भी लद गए जबकि कोई सेना-अधिनायक किसी जिले पर चढ़ दौड़ते थे और दस बीस वर्षोंका कर अगामी ही वसूल कर लेते थे। प्रान्तकी प्रधान आय मालगुजारी है। सन् १९३० ई० में मालगुजारी नये ढंगसे तय की गई और प्रजाके लिये तीन खास संरक्षणके कानून बने। पहला, मालगुजारी किसी भी हालत में अगोड़ नहीं वसूल की जाएगी। दूसरा, किसी खास हालत में अगर दूसरे प्रकारके कर लगाने की जरूरत हुई तो वह रकम मालगुजारी से अधिक कभी भी नहीं होगी। तीसरा, मालगुजारी और दूसरे प्रकारका कर (जो जरूरत पड़ने पर कभी लगाई जाएगी)। दोनों की मिली रकम खेतके सालाना पैदावार के एक प्रतिशत से अधिक नहीं होगी। कर लगाने और वसूल करने की प्रणाली में सुधार होने से राष्ट्रीय आय काफी बढ़ गया। सन् १९२८ ई० में सरकारी

आय कुल २६०००००००० डालर था जो सन् १९३३ ई० में बढ़कर ६६०००००००० डालर हो गया।

दूसरा बड़ा सुधार जो राष्ट्रीय सरकार ने किया वह है मुद्रा सम्बन्धी सुधार। पहले चीनमें दो तरह की चलन (करेन्सी) थी। चांदीका डालर और बैंकों में लेनदेन चांदीके टेल (प्राचीन चीनी सिक्का) द्वारा हो सकता था। इन दो प्रकार की चलन के विनिमय का अनुपात कभी कभी बड़ा विषम हो जाता था और लेनदेन में बड़ी गड़बड़ी हो जाती थी। साधारणतः आदमी को विनिमयमें बड़ा घाटा उठाना पड़ता था तथा इस प्रकार की लेनदेन में बराबर ही लोगों के दिलमें संशय बना रहता था।

सरकारने इस मसलेको हल करनेके लिये सबसे पहले बैंकोंका पुनः संगठन किया। केन्द्रीय बैंकका (सेन्ट्रल बैंक) जो पहले से भी सरकारी बैंक था, पूरी तरह सुधार किया गया तथा उसकी पूँजी काफी बढ़ा दी गई। सरकार ने बैंक आफ कम्युनिकेशन और बैंक आफ चाइना को भी अपने हाथोंमें लेलिया। तथा उसके हिस्से की पूँजी (शेयर पूँजी-शेअर कैपिटल) भी बढ़ा दी। केन्द्रीय बैंक को कानूनी ग्राह्य सिक्का (लीगल टेन्डर) निकालनेका एकाधिकार दिया गया। बैंक आफ कम्युनिकेशन को खासकर उद्योग-धन्धे की दिशा में काम करनेका अधिकार मिला और बैंक आफ चाइना को अन्तरराष्ट्रीय बैंक बना दिया गया। इसके बाद सिक्के में सुधार किया गया। सभी पुराने सिक्के वापस कर लिये गए। उसकी जगह नया प्रामाणिक डालर चालू किया गया। आज चीन की चलन (करेन्सी) बहुत ही स्थिर है।

इसके बाद सरकार का सबसे बड़ा काम यातायात के साधन का सुधार

है। चीन में अच्छी सड़कें नहीं होने के कारण सभी कामोंमें बड़ी दिक्कत पड़ती थी। रेलवे कम्पनियाँ और देशकी नदियों में चलनेवाले स्टीमर की कम्पनियाँ विदेशी पूँजीपतियों के नियंत्रण में थीं। उन्हें और चीजों की अपेक्षा चीन के शासन करने से अधिक मतलब था। राष्ट्रीय सरकार की स्थापना होते ही सरकार ने देशके भीतरी यातायात के सभी साधन रेल, सड़क, नदी में बड़ी ही तरक्की की। सन् १९२१ ई० में चीन में फैली हुई सड़कों की लम्बाई कुल ११८५ कीलोमीटर थी जो क्रमशः बढ़कर सन् १९३१ ई० में ९८१६१ कीलोमीटर और सन् १९३६ ई० में १५९५की लोमीटर और सन् १९३६ ई० में १५८५०० कालोमीटर हो गई। रेलकी लाइन बिछाने की दिशा में भी काफी प्रगति हुई है परन्तु सड़कों की नाईं नहीं। जहाज और वायुयान संचालन का कार्य भी तेजी से हो रहा है। वर्तमान चीन जापान युद्ध में चीनी उड़ाकों का काम वायुयान संचालन की प्रगति का प्रमाण है।

गांवों की दशा सुधारने की ओर सरकार का ध्यान प्रारम्भ से ही रहा है। सरकार की ओर से "चलो पुनः खेतों की ओर" नारेवाला आन्दोलन प्रारम्भ किया गया है। सारे देश में काफी बड़ी संख्या में बड़े बड़े कृषि-कालेजों की स्थापना की गई है तथा प्राइमरी और माध्यमिक हाई स्कूलों का जाल सा बिछा हुआ है जो खासकर ग्रामीण जनता की भलाई के लिये ही है। बहुत सी पाठशालाएं निःशुल्क हैं तथा ग्रामीण जनता के ही संरक्षण में हैं।

देश की आर्थिक उन्नति की दिशा में सहकारी बैंको से बड़ी मदद मिली है। प्रथम सन् १९२४ ई० में कुल २४ सहकारी समितियाँ कायम हुईं परन्तु आज सारे देशमें लगभग २६२२४ समितियाँ चल रही हैं।

भौतिक दृष्टि से अगर देखा जाय तो राष्ट्रीय सरकार ने देश की आर्थिक दशा सुधारने के लिये आश्चर्यजनक काम किया है। देश का निर्यात बढ़ रहा है और आयात में धीरे-धीरे कमी हो रही है। यद्यपि अन्तर-राष्ट्रीय व्यापार का सन्तुलन अभीतक चीन के विपरीत ही है परन्तु धीरे धीरे चीन इस कमी को पूरा कर रहा है। सन् १९३५ ई०के जनवरी से जून तक निर्यात से आयात २८९३०७००० डालर अधिक था परन्तु यही सन् १९३६ ई० के उतने ही समय में घटकर १२७०६९००० डालर हो गया। आशा है कि भविष्य में चीन की सरकार गांवोंकी उन्नति की ओर इसी प्रकार ध्यान देती रहेगी क्योंकि असल चीन कई सौ हजार गांवों में बसा हुआ है।

—:*:—

चौथा प्रकरण

आधुनिक चीनकी सामाजिक प्रगति

अध्याय १

सामाजिक संगठन

बहुत प्राचीनकाल से ही सुन्-त्र, क्वान्-त्र, हान्-त्र, षाङ्-त्र तथा अन्य चीनी दार्शनिकों ने सामाजिक समस्याओं, मनुष्य के आपसी सम्बन्ध के मौलिक सिद्धान्तों और समाजशास्त्र आदि विषयों पर काफी प्रकाश डाला है। सुन्-त्र ने अपनी एक पुस्तक में लिखा है :—

"पानी और अग्नि में श्वांस है पर जीवन नहीं; घास और पेड़ पौधे में जीवन है पर ज्ञान नहीं; पशु पक्षियों में ज्ञान है पर अच्छे बुरे का विचार नहीं लेकिन मनुष्य ही एक ऐसा जीव है जिसे श्वांस, जीवन, ज्ञान और भले बुरे सभी चीजों के विचार करने की शक्ति है। मनुष्य ही संसार का सबसे उत्तम जीव है। मनुष्य की शारीरिक शक्ति जानवरों से कम है, उसकी चाल घोड़े से अधिक नहीं है। पर आदमी ही उन जानवरों को काबू में कर अपने व्यवहार में लाता है। यह इसलिये सम्भव है कि मनुष्यों में एकता स्थापित करने की शक्ति है और जानवरों में इसका अभाव है परन्तु मनुष्यों में एकता होती कैसे है? कर्त्तव्यपरायणता की भावना ही मनुष्यों को एकता के सूत्र में बांधती है। मनुष्य के अन्दर की ईमानदारी की भावना ही उससे अच्छी तरह कार्य कराती है। मनुष्यों के अन्दर कर्त्तव्य और ईमानदारी की भावना है इसलिये वह आपस में मेल रखता है और आपस

में मेल रखनेसे ही वह एकताके सूत्रमें बंध जाते हैं। एकताके कारण उसकी सामूहिक शक्ति बढ़ जाती है और शक्तिके कारण ही मनुष्य सब चीजों पर विजय प्राप्त करता है।"

यद्यपि उन्होंने अपने विचारोंको भद्दे ढंगसे रखा है और ये विचार वैज्ञानिक दृष्टिसे ठीक नहीं माने जा सकते फिर भी सुन चूका कथन प्राणियोंकी जिन्दगीमें आदमीकी श्रेष्ठताका और मानव-शक्तिके मौलिक आधारकी व्याख्या करता है।

चीनके सामाजिक संगठनके प्रधान अंग ये हैं—

(१) कुलसंघ (२) राष्ट्रीय संघ (३) व्यावसायिक संघ।

चीनी लोग अपने पूर्वजोंके बड़े भक्त होते हैं और इसलिये उनका पारिवारिक सम्बन्ध बड़ा दृढ़ होता है। चीनके सामाजिक संगठनमें कुलका स्थान सबसे प्रधान है। सभी चीनवाले अपनेको एक ही पूर्वजकी संतान मानते हैं।

कुल समाजकी एक विशेष ईकाई है। हरएक कुलके पास उस कुलके नामपर एक भव्य पारिवारिक मन्दिर या कुल-हाल होता है। हर कुलकी कई शाखाएं होती हैं और हर शाखाके पास एक 'शाखा-मन्दिर या शाखा-हाल' होता है। साधारणत. कुल-मन्दिर जिलेके सबसे प्रधान शहरमें होता है और शाखा-मन्दिर बस्तियोंमें, जहां कुलके शाखाके सदस्य रहते हैं। कुल-संघका प्रधान उस कुलका सबसे वृद्ध पुरुष होता है और कुल-मन्दिरके प्रबन्ध के लिये सम्पूर्ण संघका द्वारा कुछ सदस्य निर्वाचित किए जाते हैं। कुलके अधिष्ठाताके जन्मदिन पर और मौसिमी छुट्टियोंमें कुलके सभी सदस्य केन्द्रीय मन्दिरमें इकट्ठे होकर पूर्वजोंकी पूजा करते हैं। कुल-सम्बन्धी तथा और सभी

बातें भी इसी मन्दिरमें तय की जाती हैं। अगर कुलके सदस्योंके बीच कोई मुकदमा रहता है तो उसका भी फैसला वहीं किया जाता है। सरकारी कचहरी में मुकदमे तभी जाते हैं जब कुलसंघमें उसका फैसला नही हो पाता है। हर कुलके पास वंशावली होती है जिसमें उस कुलसे सम्बन्ध रखनेवाली सभी प्रमुख घटनाएं, सदस्यों के जन्म और मृत्युकी तिथि सावधानीपूर्वक दर्ज की जाती हैं। यह एक तरहसे उस कुलका इतिहाससा होता है।

स्थानीय या प्रान्तीय भावनाएं चीनी लोगोंके हृदयमें बद्धमूल हो गई हैं। इसलिये बहुतसे स्थानीय सामाजिक संघ हैं जो राष्ट्रके जीवनमें अपना खास स्थान रखते हैं। बस्तियोंमें थु-तु-म्याव यानी स्थानीय मन्दिर, य-चाङ्—यानी धार्मिक अन्नकोष्ठ, थु-ट्वान् यानी स्थानीय सार्वजनिक सभाएं होती हैं। नगरों, खासकर व्यावसायिक स्थानोंमें व्यवसायियोंका संगठन होता है जो हुइ-क्वान् कहलाता है। यह मध्ययुगीन इंगलैंडके व्यापारिक संघ (ट्रेड-गिल्ड) के समान है।

स्थानीय मन्दिरमें सार्वजनिक पूजा होती है। गांवके अन्नकोष्ठमें खर्च करनेके बाद बचा हुआ अन्न रखा जाता है ताकि वह अकालके समय काम दे सके। भारतवर्षमें भी इस प्रकारके अन्नकोष्ठ पहले होते थे। स्थानीय सार्वजनिक सभाके अन्दर एक हाल होता है जहां सामाजिक या और अन्य तरहकी सभाएं होती हैं। किसी भी आपसी मुकदमे या झगड़ेका फैसला करनेका प्रयत्न पहले स्थानीय संस्थामें ही किया जाता है। किसी कारणसे अगर स्थानीय संस्था झगड़ा नहीं तय कर पाती है तभी वह सरकारी कचहरी में भेजा जाता है। प्रान्तीय सदर मुकाममें हर जिलेका अपना अपना एक भव्य जिला-हाल होता है जिसमें काफ़ी सम्पत्ति होती है। उसी तरह केन्द्रयी

राजधानीमें हर प्रान्तके अलग अलग प्रान्तीय-हाल होते हैं। जिला-हाल जिलेके प्रतिनिधियों और प्रान्तीय हाल प्रान्तके प्रतिनिधियोंके मिलने, सभा करने आदिका केन्द्रीय स्थान है।

व्यावसायिकोंका संगठन चीनमें बहुत प्राचीन और ठोस है। एक तरहके व्यवसायमें लगे हुए सभी प्रकारके कामोंकी इकाई 'हाङ्' या वर्ग (लाइन) कहलाती है और उस व्यवसायमें लगे हुए सभी व्यक्ति थुङ्-हाङ् यानी उसी वर्गके (आफदी सेम लाइन) आदमी कहलाते हैं। विभिन्न व्यवसायोंके कमसे कम ३६० हाङ् इस समय सारे देशमें फैले हुए हैं। हर हाङ्का प्रधान दफ्तर जिले या प्रान्तके सदर मुकामोंमें होता है। हर हाङ्के पास काफी धन, उसका अपना विधान और हाङ्का प्रबन्ध करनेके लिये उसकी अपनी निर्वाचित कार्यकारिणी समिति होती है। सालभरमें हाङ्के जेनरल कमिटीकी दो बैठकें होती हैं—एक वसन्तमें और दूसरी पतझड़में। इन बैठकों में व्यावसायिक लोग व्यापार सम्बन्धी बातों और उद्योगधन्धेकी तरक्कीके उपाय पर विचार करते हैं। हर हाङ्का अपना इष्ट देवता होता है जो उस व्यवसायका आविष्कारक और रक्षक माना जाता है। किसी खास निश्चित तिथिमें हाङ्के सभी सदस्य इस्ट देवताकी पूजा करते और भेंट चढ़ाते हैं।

इन तीन प्रकारके सामाजिक सगठनोंके अलावा (१) गुप्त संघ और समितियाँ (२) लोकोपकारी संघ तथा (३) धार्मिक सघ भी हैं। गुप्त समितियोंमें को-लाव् हुइ और छिङ्-हुङ्-पाङ् नायक समितियां गुण्डों और बदमाशोंका संगठन है! इन गुप्त समितियोंका बड़ा महत्व है। इन समितियों द्वारा कभी-कभी समाजको बड़ा लाभ और कभी कभी बड़ी हानि होती

है। पिछले दिनों इनमें से कई समितियाँ डाकुओं और लूटेरोंके साथ और कई क्रान्तिकारियोंके साथ मिल गई थीं।

दूसरे देशोंकी नाईं चीनका लोकोपकार संघ, अनाथाश्रम, विधवाश्रम, छोटी छोटी लड़कियोंके लिये आश्रय गृह, अपाहिजों और बूढ़ोंके लिये आश्रम खोलता है तथा अन्य मानवोपकारी कार्योंको करता है। अपने उद्देश्य और ध्येयको लेकर और भी कितनी धार्मिक और अर्द्धधार्मिक संस्थाएं काम कर रही हैं। चीनमें सबको पूर्ण धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त है और साम्प्रदायिक आपसी दंगे तथा झगड़ेका वहां नामोनिशान भी नहीं है।

चीनके सामाजिक संगठनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वहाँ जाति-प्रथा एकदम नहीं है। पहले चीनी लोग चार श्रेणियोंमें बंटे थे, अर्थात् (१) ष—विद्वान्, (२) नुङ्—कृषक (३) कुङ्—दस्तकार (४) पाङ्—व्यापारी। सरकारका वर्ताव इन सभी लोगोंके साथ एक तरहका नहीं होता था। एक श्रेणीसे दूसरी श्रेणीमें जानेका मार्ग खुला था। जाति जन्मना नहीं होती थी व्यक्तिगत गुणों और झुकावके अनुसार लोग अपने लिये कोई पेशा अख्तियार कर उस श्रेणीमें जा सकते थे। एक श्रेणीका विवाह दूसरी श्रेणीके साथ खुले आम होता था। विद्वानोंका आदर सभी करते थे और समाजमें उनका स्थान सबसे ऊँचा था। व्यापारियोंका स्थान सबसे नीचा था। धनी होनेके बावजूद भी वे नीची निगाहसे देखे जाते थे क्योंकि वे लोग अपनी मिहनतसे कुछ नहीं पैदा करके जोंककी नाईं समाजसे चिपटे रहते थे।

अध्याय २

चीनका परिवार और उसमें स्त्रियों का स्थान

पहले ही कहा जा चुका है कि चीनी समाज में परिवारका बड़ा महत्व है। चीनके लोग मातापिताकी भक्ति और प्यार, भाईचारे और मित्रता पर बड़ा जोर देते हैं। सबलोग एक साथ बड़े परिवारके रूपमें रहना पसन्द करते हैं।

चीनका आदर्श परिवार वह है जिसमें दादा दादी, मां बाप, भाई भाभी, बेटा बेटी और पोता पोती एक साथ रहते हैं। इस तरहके परिवारको उ-ताइ-थुङ्-थाङ् यानी पाँच पीढ़ियोंका एक साथ रहनेवाला परिवार कहते हैं। इस तरहके परिवार की प्रशंसा और सम्मान सरकार तथा समाज दोनों द्वारा की जाती है। चीनमें दस आदमियोंका परिवार तो साधारणसी बात है। बहुतसे परिवार ऐसे हैं जिनमें १०० से भी अधिक आदमी हैं। कुछ वर्ष पहले समाचारपत्रों में चीनके एक वृद्ध पंडित लि-छिङ्-ट्वुन्का चित्र और उसकी व्यौरेवार जीवनी प्रकाशित हुई थी। लि-छिङ्-युन्का जन्म सन् १६६० ई० में हुआ था, वे २५८ वर्ष जीवित रहे। उन्होंने १४ शादियां कीं और १८० बच्चे पैदा किए। यह एक सच्ची घटना है। जिसका सरकारी प्रमाण भी मौजूद है। हम शाङ्-हाई (शंघाई) के एक ऐसे परिवार को जानते हैं जिसमें करीब १०० आदमी हैं। यह परिवार एक तरहका स्टेटसा हो गया है। इसकी अपनी सभाएं होती हैं, रक्षाके लिये अपनी पुलिस है तथा परिवारका अपना समाचारपत्र निकलता है। इस तरहके परिवारमें अवस्था, लिंग और पेशेके अनुसार बूढ़े, जवान, बच्चे, स्त्री पुरुष सभीका

अपना अपना फर्ज परिवारके प्रति होता है। इस तरहके परिवारमें व्यक्तिगत सम्पत्ति भी लोग रख सकते हैं परन्तु जरूरतके समय उनकी सम्पत्ति सम्मिलित पूँजीमें भी मिला ली जा सकती है।

इस तरहके बड़े परिवारकी खूबी यह है कि सभी आदमियोंके बीच स्नेह, एकता और पारस्परिक सहयोग की भावना खूब रहती है। परन्तु बड़े परिवार के इस तरीकेमें कुछ दोष भी हैं। पारिवारिक सहयोगके कारण छोटी उम्रके नवयुवकों को जीविकाकी चिन्ता नहीं रहती है और इसलिये वे आलसी हो जाते हैं। कोई काम नहीं रहनेके कारण आपसमें ही झगड़ा होने लगता है और कभी कभी तो यह झगड़ा बड़ा ही भयंकर रूप धारण कर लेता है। लेकिन पश्चिमी सभ्यताके सम्पर्क से अब परिवारका पुराना ढंग समाप्त हो रहा है। चीनके बहुत से विद्वान् जो अधिक पढ़नेकी इच्छासे यूरोप और अमेरिका जाते हैं, वे और चीजोंके साथ विलायती स्त्री भी अपने लिये लेते आते हैं। इन विलायती स्त्रियोंका चीनकी पारिवारिक प्रथाके साथ मेल नहीं खाता। जिस तरह विलायती व्यापारके कारण चीनका प्राचीन आर्थिक ढांचा ढह गया है उसी प्रकार विलायती स्त्रियोंकी कृपासे सम्मिलित परिवार की प्रणाली भी नष्ट हो रही है। अब ये सम्मिलित परिवार पुरानी स्मृति के रूपमें ही शेष रह गये हैं।

पहिले ही कहा जा चुका है कि चीनी समाजका केन्द्र परिवार है। और उसमें पत्नी ही प्रमुख है। चीनी जनताका प्राचीन समयसे यही खयाल रहा है कि परिवारके भीतरी मामलोंमें पुरुषोंको हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये क्योंकि उसपर स्त्रियोंका अधिकार है। चीनके प्राचीन ग्रन्थ इ-चिङ् या "परिवर्तनके नियम"में लिखा है कि "स्त्रियोंका अधिकार घरके अन्दर है और

पुरुषोंका घर से बाहर।" एक दूसरे ग्रन्थ 'लि-चिङ्'-धार्मिक अनुष्ठानमें भी एक जगह लिखा है—"पुरुषोंको भीतरी मामलोंमें और स्त्रियोंको बाहरी मामलोंमें दखल नहीं देना चाहिये।" इसलिये परिवारमें स्त्रियां सचमुच ही प्रभुत्वका केन्द्र हैं। लड़झगड़कर पश्चिमी देशोंकी स्त्रियोंने जितनी स्वतंत्रता और अधिकार प्राप्त किया है उसकी अपेक्षा चीनी स्त्रियोंको हमेशासे अधिक अधिकार प्राप्त है। चीनी स्त्रियां अपने पति पर पूरी तरह हुकूमत करती हैं। चीनके सभी पुरुष पत्नियोंके गुलाम हैं। बहुतसे पति जो बाहर शेरकी तरह दहाड़ते हैं, घरके अन्दर आते ही भीगी बिल्ली बन जाते हैं। एक चीनी कहावत है—"एक बहादुर आसानीसे हजारों सैनिकोंको नियन्त्रणमें रख सकता है परन्तु एक स्त्रीको संभालना आसान नहीं।" पिछले दिनों अप्रतिरोध आन्दोलन (नान रेजिस्टेन्स मूवमेन्ट) के नेता जेनरल चाङ श्युए-ल्याङ् ने जिस समय शि-आन्-फु (श्यान-फु) प्रदेशमें विद्रोह किया था, उनकी स्त्री यूरोपमें थी। विद्रोहकी खबर सुनकर वह दौड़ी हुई चीन आई और उसने कहा कि "पुरुषोंपर से स्त्रियोंका शासन अगर ढीला हुआ तो वह आफत मचाने लगता है।" इससे पता चलता है कि परिवारके अन्दर स्त्रियोंका महत्व कितना बड़ा है।

इन सब बातोंके होते हुए भी समाजमें पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियोंका स्थान नीचा ही है। चीनके प्राचीन वृत्तसे पता चलता है कि किसी समय समाजमें स्त्रियोंकी ही प्रधानता थी। सचमुच ही उस जमानेमें स्त्रियोंका स्थान पुरुषोंसे अवश्य ऊंचा रहा होगा। लेकिन अब वह जमाना लद चुका। महात्माओं और दार्शनिकोंने समय समय पर कानून बनाकर स्त्रियोंके अधिकारों को सीमित कर दिया है और इस प्रकार समाजमें स्त्रियोंका स्थान पुरुषों से नीचा कर दिया है।

चीनी भाषाके एक प्राचीन धार्मिक ग्रन्थ लि-चि---"सरकारी नियमोंके रेकर्ड"---के अनुसार स्त्रियोंके तीन कर्त्तव्य और चार गुण हैं जो क्रमशः सान्-छुङ् और स-तो कहलाते हैं। तीन कर्त्तव्य ये हैं---(१) कुमारी अवस्थामें पिताके आश्रयमें रहे। (२) विवाह होनेपर पतिके आश्रय में और (३) विधवा होनेपर पुत्रके आश्रयमें रहे। उनके चार गुण हैं---(१) सतीत्व और धर्मपरायणता (२) मधुर .मित भाषण (३) नम्रता और सदाचरण (४) गृह-कार्यमें निपुणता यानी खाना बनाना, कपड़ा बुनना, सीना-पिरोना आदि।

बचपन से ही कड़े अनुशासन और शिक्षा में चीनी स्त्रियों का पालन-पोषण होता है। इसलिये बड़ी होनेपर वे बड़ी सदाचारिणी और नम्रता की मूर्ति होती हैं। समाज में आदर्श स्त्री को ल्याङ्-छि और श्यान् मु कहते हैं जिसका अर्थ क्रमशः अच्छी पत्नी और दयालु माता होता है।

चीनी स्त्रियों में पर्दे की प्रथा नहीं है और वे बिना घूंघट बाहर आ जा सकती हैं। परन्तु स्त्री-पुरुषों के आपसी व्यवहार में काफी शिष्टता बर्ती जाती है। पश्चिमी देशोंके समान स्त्री का पुरुषों के हाथमें हाथ मिलाकर सड़क पर विचरण करने और नाच के नाम पर बैण्ड की थाप पर एक-दूसरे की कमर में हाथ डाले थिरकने की प्रथा को चीनी लोग भद्दा समझते हैं और बुरी निगाह से देखते हैं। पश्चिम की नकल पर चीन के कुछ नवयुवक इन बातोंको करने लगे हैं परन्तु समाजमें उनकी इज्ज़त नहीं होती।

प्रजातंत्र की स्थापना के बाद राष्ट्रीय सरकारने समाज में स्त्रियों और पुरुषोंका स्थान और अधिकार समान कर दिया है और स्त्रियोंकी दशा सुधारने की दिशामें बहुत काम किया है। सहशिक्षा की प्रथा बहुत कम है परन्तु बहुत

सी लड़कियाँ कन्या पाठशालाओं और गर्ल्स् कालेजों में पढ़ती हैं। राष्ट्र के राजनैतिक कामों में स्त्रियाँ भी हाथ बँटाती हैं तथा राजनैतिक जुलूस और प्रदर्शनों में भी भाग लेती हैं। स्त्रियोंके लिये भी सरकारी नौकरियाँ खुली हुई हैं और राष्ट्रीय सरकार के विभिन्न प्रधान प्रधान विभागों में स्त्रियाँ भी काफी संख्या में सफलता-पूर्वक काम कर रही हैं।

अध्याय ३

आचार-विचार और उत्सव-त्योहार

नैतिकता चीनी-समाज का आधार है। चीन का सारा सामाजिक संगठन ही नैतिक संगठन है और सारे सामाजिक सम्बन्ध नैतिक सम्बन्ध हैं। नजदीकके हों या दूर के, बड़े हों या छोटे, सभी सम्बन्धियोंके बीच साफ साफ दर्जा बना है। उदाहरण के लिये भाई बहन के सम्बन्ध में बड़े भाई को श्युङ् और बड़ी बहन को च, छोटे भाई को ति और छोटी बहन को मइ कहते हैं। बड़े चाचा को पो और छोटे चाचा को पु, बड़ी चाची को पो-सु और छोटी चाची को पु-यु कहते हैं। फूफा को कु-फू और फूफू को कु, मामा को च्यु और मामी को च्यु-फु, मौसा को इ-फु और मौसी को इ, चचेरे भाई को थाङ्-श्युङ्-ति और चचेरी बहिन को थाङ्-च मइ कहते हैं। पश्चिमी देशों में सब भाई 'ब्रदर' और सभी बहिनें 'सिस्टर', सब चाचा 'अंकिल' और सब चाची 'आन्ट', सब भांजे और भतीजे 'नेफ़्यू' और सब भानजियां और भतीजियाँ 'नीस' के नाम से पुकारी जाती हैं, छोटे-बड़े नजदीकी और दूरके किसी प्रकार के सम्बन्ध का कुछ भी पता नहीं चलता।

चीनी समाज में नैतिक सम्बन्ध मूलतः निम्न विभागों में विभक्त हैं :— सान्-काङ्—तीन बंधन, लु-ची—छः व्यवस्था, उ-लुन्—पांच सम्बन्ध और च्यु-चु—नौ पीढ़ियां। तीन बन्धन हैं—(१) राजा और प्रजा का (२) माता-पिता और संतान का और (३) पति और पत्नी का। छः व्यवस्थायें ये हैं—(१) पिता और उनके भाई (२) भाई और बहिन (३) कुल (४) माता

और माता के भाई (५) गुरु और (६) मित्र। पांच सम्बन्ध ये हैं—(१) माता पिता और संतान का (२) राजा और प्रजा का (३) पति और पत्नी का (४) भाई और बहिन का, और (५) मित्र का। नौ पीढ़ियों में—चार पीढ़ियां ऊपर, जैसे माता-पिता, पितामह-पितामही, प्रपितामह प्रपितामही, वृद्ध प्रपितामह और वृद्ध प्रपितामही और चार पीढ़ियां नीचे, पुत्र-पुत्री, पौत्र-पौत्री, प्रपौत्र-प्रपौत्री, और उनकी संतान, की हैं। इनके अतिरिक्त आम बर्ताव में और तीन तरह के सम्बन्ध पाए जाते हैं—(१) परिवार (२) सम्बन्धी (३) मित्रके।

चूँकि चीनी समाज का संगठन नीतिशास्त्र पर आधारित है इसलिए इसमें सदाचार का बड़ा महत्व है। चूँकि सदाचार नीतिशास्त्र का मूल सिद्धान्त है और बिना इसके नैतिकता टिक नहीं सकती, इसलिये सदाचार और नैतिकता दो शरीरके एक प्राण या दो प्राणोंके एक शरीरके समान हैं। चीनी महात्माओं ने बहुत पहिले से ही सदाचार के बहुत से नियम बना रखे हैं। इनमें सबसे महत्वपूर्ण उ-छाङ्—पांच नैतिक नियम-हैं—(१) रन्—उदारता (२) इ—न्याय (३) लि—शिष्टाचार (४) च—बुद्धिमानी और (५) शिन्—विश्वासपात्रता। दूसरा स-शिङ् या चार प्रकार के कर्त्तव्य हैं—(१) श्याव्—मातृ-पितृ-भक्ति (२) थि-भ्रातृ-प्रेम (३) चुङ्—राजभक्ति और (४) शिन्—विश्वासपात्रता। तीसरा, स-वइ या चार सामाजिक स्तम्भ हैं—(१) लि—शिष्टाचार (२) इ—न्याय, (३) ल्यान्—ईमानदारी (४) छ्—लज्जा की भावना। इन सबों के अलावे और भी कितने नैतिक नियम हैं। कुछ दिन पहिले चीनी प्रजातंत्र के जनक स्वर्गीय डा० सुन-इ-श्यान् (डा० सन्-यात-सेन) ने संसार के सब बड़े-बड़े महात्माओं के उपदेशों के आधार पर एक नया

नैतिक नियम बनाया था जो पा-तो या आठ गुणों वाला नियम कहलाता है। वे आठ गुण ये हैं—(१) चुङ्—अनुगामिता (२) श्याव्—मातृपितृ-भक्ति (३) रन्—उदारता (४) अइ—प्रेम (५) शिन्—विश्वासपात्रता (६) इ—न्याय (७) हो—एकता और (८) फिङ्—शान्ति। चीनकी जनता इनदिनों इन्हीं नियमों को राष्ट्रीय सदाचार का नियम मानकर पालन करती है।

चीन को देशवाले तथा विदेशी भी उत्सवों का देश कहते हैं। चीन के बराबर संसार के और किसी देश में उत्सव और त्योहार नहीं मनाए जाते हैं। चीनके लोग तीन सौ धार्मिक क्रियायें और तीन हजार रीति-रस्म मानते हैं जिनके कारण लोगों को बड़ी परेशानी और कष्ट उठाना पड़ता है। शादी और मृतक कर्म के रीति-रिवाज की कुछ बातें यों हैं।

शादी जीवन की एक प्रधान घटना है इसलिये उसकी संस्कार विधि भी बहुत लम्बी होती है। शादी की इस लम्बी संस्कार विधि में सम्बन्ध ठीक करने के समय से शादी तक छः क्रियायें होती हैं—(१) ना-छाइ-वरदीक्षा (२) वन्-मिङ—लड़की का नाम पूछना (लड़की का नाम तब तक नहीं पूछा जा सकता जब तक कि शादी की बात पक्की न हो गई हो) ३) ना-छि—भेंट चढ़ाना (तिलक) (४) छिङ्-छि—शादी की तिथि पूछना अर्थात् किस महीने की किस तिथि को शादी होगी (५) ना-छिङ्—गहने कपड़े की भेंट और आशीष देना (६) छिन्-इङ्—स्वागत अर्थात् वर का वधू के घर जाकर उसे अपने यहां लिवाना। शादी के दिन वर और वधू की बड़ी इज्जत की जाती है। वधू बहुत सुसज्जित पालकी में बैठकर अपनी ससुराल जाती है जिसे राजकीय पालकी या फूल की पालकी कहते हैं। बारात के जुलूस और बाजे गाजे के बीच पालकी चार से आठ कहारों द्वारा ढोई जाती है।

जब बारात वधू को लेकर वर के घर पहुंचती है तो सबसे पहले आकाश और पृथ्वी की पूजा की जाती है ; फिर कुल-देवों की पूजा होती है और तब वर-वधू-आमने-सामने खड़े होकर एक दूसरे को आदर से प्रणाम करते हैं। इसके बाद दोनों सुहाग-गृह में ले जाये जाते हैं, जहाँ दोनों को एक ही पलग पर बैठना पड़ता है। दोनों के सामने दो लाल मोमबत्ती जला दी जाती है और दोनों को एक ही प्याले से शादी की मदिरा पीनी पड़ती है। इस समय सभी सम्बन्धी और मित्र आशीर्वाद देते और शुभ कामना प्रकट करते हैं। उसके बाद हँसी दिल्लगी शुरू होती है। वर-वधू इसके मारे परेशान हो जाते हैं तथा लज्जा से दोनों की आंखें और चेहरा लाल हो जाता है। दूसरे दिन सुबह नववधू का वर के माता पिता, बहिन, भाई, तथा परिवार के सब आदमियों तथा उपस्थित सम्बंधियों और मित्रों से परिचय कराया जाता है। शादीके अवसर पर वर और वधू दोनों पक्षवालों को कम से कम एक या दो दिन भोज देना पड़ता है। एक महीने तक वधू ससुराल में अतिथिकी तरह रहती है, प्रति-दिन सुन्दर सुन्दर वस्त्रों और अलंकारों से अपना शृंगार करती है और वर के सम्बंधियों तथा मित्रों द्वारा दी गई दावतों में ही अपना समय बिताती है। एक मास बाद वधू तीन दिन के लिये अपने मां, बाप के घर जाती है और उसके बाद पुनः ससुराल में आकर गृहिणी बन काम सँभालने लगती है।

प्राचीन काल में लड़के-लड़की की शादी मां-बाप द्वारा अथवा घटक द्वारा तय की जाती थी, लड़का लड़कीसे सम्मति तक भी न ली जाती थी। पर आधुनिक कालमें लड़के और लड़कियां इस मामलेमें मां बापसे स्वतंत्र होकर अपनी पसन्दके अनुसार शादी करने लगे हैं। शादी-विवाहके

रस्म भी बदल गये हैं। हाल ही पाङ्-हाइ (शंघाई) तथा अन्य बड़े-बड़े शहरोंमें शादी करनेका एक नया तरीका प्रचलित हुआ है जिसे चि-थुन-चिए-हवन्—सामूहिक शादी—कहते हैं। अर्थात् एक ही जगह पर बहुतसे लड़के लड़कियोंकी शादियां हो जाती हैं। इसीसे जान पड़ता है कि चीनकी विवाह प्रथामें कितनी क्रान्ति हो रही है।

मृतक-क्रिया-कर्म भी चीनमें एक प्रधान संस्कार है। परम्परासे लड़के लड़कियोंकी शादी कराना मा बापकी जिम्मेवारी समझी जाती है और लड़के लड़कियोंका मा-बापके प्रति यह प्रधान कर्त्तव्य है कि उनके मरनेके बाद उनके मृतक-क्रिया-कर्मको अच्छी तरह करें। इसलिये मां बापके मरनेके बाद संतानके ऊपर बड़ी जिम्मेवारी आ जाती है। मृत्युके बाद पूरे सौ दिनों तक उन्हें बाल बनाने, मदिरा पीने, मांस खाने और बाहर जानेकी मनाही रहती है तथा उजले रंगका कोरा सनका कपड़ा और वियोगकी टोपी पहिननी पड़ती है। उन्हें सिर झुकाकर मुर्देकी बगलमें बैठना पड़ता है। उसी समय सम्बन्धियों और मित्रोंके पास शोक-पत्र भेजा जाता है, जिसमें माता पिता की मृत्युके लिये संतान अपनेको दोषी ठहराती है। शोक-पत्र पानेपर सब सम्बन्धियों और मित्रोंका यह कर्त्तव्य होता है कि उनके घर आकर अर्थी पर फूल चढ़ायें और शोक-ग्रस्त बच्चोंके साथ समवेदना प्रकट करें।

चीनमें शवको दफनानेकी प्रथा है। मृत्युके बाद ही किसी नजदीकी सम्बन्धी द्वारा शवको स्नान कराते हैं तथा खास तौर पर बनाया हुआ रेशमी कपड़ा उसे (शव) पहिनाते हैं। शवको एक सुन्दर और कीमती क़फ़न से ढककर मकानके एक बड़े कमरेके बीचमें रखते हैं जहां सम्बन्धी या मित्र लोग आकर फूल चढ़ाते और समवेदना प्रकट करते हैं। मृत्युके तीसरे

दिन कफ़नको सिल कर दिया जाता है। एक लकड़ीके तख्तेमें, मृतकके जन्म और निधन की तिथि अंकित कर कफ़नके साथ लगा दी जाती है तथा शवकी पूजा की जाती है। मृत्युके उनचास दिनोंके बाद एक सुन्दर जगह और शुभ तिथि शवको दफ़नानेके लिये नियत की जाती है। दफ़नानेके दिन की संस्कार विधि बड़ी महत्वपूर्ण होती है। कफ़न खूब अच्छी तरह सजाया जाता है और उसे ८ से ६४ आदमी तक उठाकर ले जाते हैं। मृतकके बेटे और पोते अर्थीके आगे आगे लकड़ीके सहारे चलते हैं। दूसरे सम्बन्धी और मित्र लोग अगल-बगल तथा स्त्रियां गाड़ीमें पीछे पीछे चलती हैं। बाजे गाजेके साथ भजन मंडली तथा धार्मिक अनुष्ठान करानेवाले बौद्ध भिक्षु और ताओ पुरोहित मंत्र पढ़ते हुए अर्थीके आगे और पीछे चलते हैं। मृतकके जुलूसकी तड़क-भड़क विवाहके जुलूससे भी बढ़कर होती है।

चीनके उत्सव त्योहारोंमें सबसे प्रधान (१) खेलोंकी प्रदर्शनी और (२) सामयिक उत्सव हैं। अपने अवकाशके समय चीनके किसान भिन्न-भिन्न तरहके खेल तमाशे करते हैं जैसे लालङ् या मशालका खेल, उ-ष या सिंहका खेल, उ-लुङ् या अजगरका खेल और चाङ्-शि या नाटक आदि। मशालका खेल एक तरहका सार्वजनिक खेल है। इसमें सभी ग्रामीण हाथमें जलता हुआ मशाल लेकर जुलूस के रूपमें गीत गाते हुए एक गांवसे दूसरे गांवको जाते हैं। मशालकी सजावट बड़ी आकर्षक और मनोरंजक होती है। सिंह और अजगर इन दोनों खेलोंमें शारीरिक और सैनिक कवायदका प्रदर्शन होता है। सिंहके खेलमें एक आदमी सिंह बनता है और दो लड़के बंदर बनते हैं। बंदर बने हुए दोनों लड़कोंके पास एक रेशमका झब्बा रहता है और दोनों मिलकर आपसमें खेलते हैं। जैसे ही सिंह दोनों बंदरोंके हाथसे

झण्डा छीन लेता है, दोनों बंदर बड़े वेगसे भाग जाते हैं। तब उस दलके दूसरे लोग तरह तरहकी कवायद जैसे कूदना, फांदना, घुंसे मारना, लाठी तलवार भांजना आदि करने लगते हैं। अजगरके खेलमें कागज, कपड़े घास आदिके बहुतसे अजगर बनाए जाते हैं जिन्हें कई आदमी उठाकर चलते हैं। कुछ अजगर इतने बड़े बनाए जाते हैं कि जिन्हें उठाकर ले जानेमें सौ सौ आदमियोंकी जरूरत पड़ जाती है। साथके लोग बहुत तरहकी कसरत करते हैं, कुछ गिरह मारते हैं, कुछ उछलते हैं तथा कुछ लोग सांपकी तरह पेटके बल रेंगते हैं। नाटक खासकर ऐतिहासिक घटना सम्बन्धी, वीररसप्रधान और सुखान्त तथा दुःखान्त दोनों प्रकारके होते हैं जिसमें संगीत और नृत्य भी होते हैं। इस तरहके खेल-तमाशे प्रायः सभी ग्रामोंमें हर वर्ष या कुछ वर्षों के बाद, बारी बारीसे पाँचसे दस दिनों तक या पखवारेसे महीने भर तक होते रहते हैं। भारतीय मेलोंकी नाईं ही इन खेल-तमाशोंके अवसर पर ग्रामकी बनी चीजें खरीद-बिक्रीके लिये प्रदर्शित की जाती हैं।

भारतीय जनताकी नाईं चीनवाले भी त्यौहार-प्रिय हैं। चीनका सबसे बड़ा त्यौहार 'नववर्ष' है। चीनी पंचांगके अनुसार नव-वर्षके प्रथम महीनेमें पहली तारीखसे पंद्रह तक यह त्योहार मनाया जाता है। हर मकान और हर कुटिया दीपों और बन्दनवारोंसे सजाई जाती है तथा लाल कागजों पर शुभ और धार्मिक शब्द लिखकर उन्हें दरवाजों और खिड़कियों पर लगाया जाता है। सभी प्रकारके खेल तमाशे होते हैं, तथा घर घरमें मौज होती है। नव वर्षके बाद दूसरे दर्जेका त्योहार पांचवें महीनेकी पञ्चमी तिथि और आठवें महीनेकी पंद्रहवीं तिथिको मनाए जाते हैं, जिन्हें चीनी भाषामें क्रमशः त्वान्-उ और च्रुङ्-छ्यु कहते हैं। त्वान्-उ को 'अजगर नावकी दौड़'

या ग्रीष्म उत्सव और च्रु ङ-छ्यु को मध्य पतझड़ चन्द्र दर्शन या पतझड़ उत्सव भी कहते हैं। इनके बाद दो त्योहार पूर्वजोंकी यादमें मनाये जाते है। वे हैं—छिङ्-मिङ् और च्रु ङ्-थ्वान्। छिङ्-मिङ् तीसरे महीनेकी तृतीया को और च्रु ङ्-थ्वान् सातवें महीनेकी पंद्रहवीं तिथिको मनाये जाते हैं। पहलेमें पूर्वजोंकी कब्र पर भेंट चढ़ाई जाती हैं और दूसरेमें पूर्वजोंके नाम बलि प्रदान की जाती है। सातवें महीनेकी सप्तमी तिथि कुमारी लड़कियों के लिये शुभ समझी जाती है और नवें महीनेकी नवमी तिथिको विद्वान् तथा कवि लोग वन-भोज करते हैं। इस दिन वे लोग पहाड़ों पर चढ़ते तथा वहां शराब पीते, गीत गाते और कविता लिखते हैं। इनके अतिरिक्त और भी बहुतसे उत्सव त्योहार हैं। परन्तु इनके सम्बन्धमें एक बात ध्यान देने की है। दूसरे देशों की नाईं चीनके उत्सवों और त्योहारोंको धार्मिक रूप प्राप्त नहीं है। बल्कि उनका सम्बन्ध मानवीय और सामयिक बातोंसे है। प्रजातंत्रकी स्थापनाके बादसे चीनका प्राचीन पंचांग सरकारी कामों के व्यवहारमें नहीं आता है। सरकारी आफिसोंमें पश्चिमी केलेण्डर का ही अनुसरण किया जाता है। त्योहारोंकी छुट्टियोंमें बहुतसे क्रान्तिकारी दिनोंकी छुट्टियां भी जोड़ दी गई हैं। चीनकी साधारण जनता प्राचीन पंचांगसे ही काम लेती और पुराने त्योहारों को ही मनाती है। यह केवल इसलिये नहीं कि पुराने रीति रिवाजोंको छोड़ना कठिन है, बल्कि बहुत-कुछ इसलिये कि पश्चिमी केलेण्डरकी अपेक्षा चीनी पंचांग और त्योहार वहांकी जनताकी रुचिके अधिक अनुकूल पड़ते हैं; उनका सहज ही त्याग नहीं किया जा सकता।

अध्याय ४

नव सांस्कृतिक आन्दोलन

चीनकी सभ्यता अत्यन्त प्राचीन है और इसके लिये चीनके लोगोंको गर्व और उसके प्रति सम्मानकी भावना है। चीनने हजारों वर्षों तक आसपासके देशोंमें अपनी संस्कृतिका प्रचार किया है; केवल उसकालको छोड़कर जब वह स्वयं भारतके बौद्ध धर्मसे प्रभावित हुआ था। उन्नीसवीं शताब्दीमें जब चीन पश्चिमी सभ्यताके सम्पर्कमें आया तो उसकी संस्कृतिका आधार ही हिल गया। उसके बादसे चीनवालोंका भाव विदेशियोंके प्रति एकदम बदल गया। आज चीनी जनताका झुकाव विदेशी आदर्शों की नकल करने और उसे अपनानेकी ओर हो गया है। इस आधुनिक कालको तीन भागोंमें बांट सकते हैं—

पहला काल—अफीमकी लड़ाई (सन् १८४०-४२ ई०), तथा बृटिश और फ्रांस की सम्मिलित सेनाके साथ की लड़ाई (सन् १८५७-६० ई०) में चीन बड़ी बुरी तरह पश्चिमवालोंसे हार गया। इस हारका प्रधान कारण पश्चिमी देशोंका युद्ध-सम्बन्धी आधुनिक ढंग था। इस हारसे चीनवालोंकी गहरी निद्रा टूट गई। पश्चिमी देशोंकी जीतका सारा श्रेय उनके सुधरे हुए हथियार, जहाज तथा मशीनगनको था। इस हारके बाद चीनवालोंके दिलमें पश्चिमी सभ्यताने अपना स्थान बना लिया और पश्चिमी तरीकोंकी नकल यहांपर बड़े जोरोंसे प्रारम्भ हुई। थोड़े ही समयमें इस दिशामें चीनवालोंने आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त करली और इसका फल यह हुआ कि यहांकी जलसेना उस समय संसारमें बृटिश जलसेनाके बाद दूसरे नम्बरकी हो गई।

दुर्भाग्यवश पुनः चीन जापानसे सन् १८९५ ई० की लड़ाईमें हार गया और जलसेनाके सुधारका जो कार्य हो रहा था, वह भी अधूरा ही रह गया। उसके बाद दूसरा काल प्रारम्भ होता है।

दूसरा काल :—इस हारके बाद लोगोंने समझा कि केवल पश्चिमी युद्ध-प्रणालीकी नकल ही देशके कल्याणके लिये यथेष्ट नहीं है। जापानने केवल पश्चिमी युद्ध-प्रणालीको ही नहीं अपनाया है बल्कि वहांकी राजनैतिक प्रणाली और आदर्शोंको भी अपने यहां स्थापित किया है। इसलिये अगर चीनको पुनः आक्रमणसे बचना है तो पश्चिमी राजनैतिक आदर्शोंको यहां भी कायम करना होगा तथा जरूरत पड़ने पर जापानसे भी शिक्षा लेनी होगी। इन विचारोंको कार्यरूपमें परिणत करनेके लिये दो तरहके आन्दोलन—वैधानिक आन्दोलन और क्रान्तिकारी आन्दोलन—शुरू हुए; जिसके फलस्वरूप मांचू राजकुलका शासन समाप्त हुआ और उसकी जगह जनतंत्रात्मक सत्ता कायम की गई। परन्तु केवल जनतंत्रकी स्थापनासे इच्छित राजनैतिक फल नहीं मिला। गृहयुद्ध और विदेशी आक्रमणका तांता बंधा ही रहा। इसके बाद ही तीसरा काल आरम्भ हो जाता है।

तीसरा काल :—गृह-युद्ध और बाहरी आक्रमणोंसे चीनवालोंका यह विचार और भी दृढ़ हो गया कि मानव-समाजकी आधुनिक अवस्थाके लिये प्राचीन आदर्श बेकार हैं और अगर चीनवालोंको सब दिनके लिये आफतोंसे छुटकारा पाना है तो उसे अपना दृष्टिकोण बदलकर पश्चिमके आधुनिक विचारोंको अपनाना होगा। जिन विचारोंको अपनानेमें पश्चिमके देशोंको कई शताब्दियां लगीं, चीनने उन्हें जल्द ही अपनानेका दृढ़ संकल्प किया। इसलिये चीनमें यूरोपीय आन्दोलनों और सिद्धान्तोंके अध्ययन पर काफी जोर दिया

जाने लगा। चीनकी यह भावना कि पश्चिमी देशोंकी हर नई चीज़ अपनाने योग्य है, चीनके नये सांस्कृतिक आन्दोलनका सार है।

इस नव सांस्कृतिक आन्दोलनकी शुरूआत पइ-पिङ् (पेकिंग) विश्वविद्यालयसे हुई। इस विश्वविद्यालयके सभापति डा० छाइ-च्वान्-फ़इ इस आन्दोलनके जन्मदाता थे। डा० छाइ, जिनकी शिक्षा पुरानी पद्धतिसे हुई थी और जिन्होंने मांचू राजकालके समयके चीनकी सबसे बड़ी परीक्षा पास की थी, बड़े ही सीधे और सरल विचारके वृद्ध चीनी विद्वान हैं। यद्यपि ये वृद्ध हैं परन्तु इनके विचार एक नवयुवक जैसे हैं। ये बड़े ही दूरदर्शी हैं। यही एक ऐसे व्यक्ति हैं जिनके अन्दर पुराने और नये विचारके लोग पूरे सहयोगके साथ काम करते हैं। नये विचारवाले छून्-तु-शिउ और हु-श तथा पुराने ढंगके विद्वान् कु-हुङ्-मिङ् ये सभी लोग एक ही मंचसे एक साथ मिलकर नये दृष्टिकोणसे चीनकी समस्याओं पर विचार करते हैं।

छून्-तु-शिउने अपने चारों ओर उदीयमान नवयुवकोंका दल एकत्रित कर रखा है। ये चीनके नये मासिकपत्र 'न्यू यूथ' के सम्पादक थे। वे इसी पत्रके द्वारा चीनकी प्राचीन संस्कृति की बड़ी कटु आलोचना करते थे जिसे पढ़कर चीनके सभी विद्वान् तिलमिला उठते थे। इस पत्रके समर्थक इस प्रकारकी आलोचनाको बुराईकी दवा समझते थे परन्तु विरोधी लोग इसे अत्यन्त ही आपत्तिजनक मानते थे। इस पत्रके निबन्ध बड़े प्रभावशाली और बुद्धिग्राही होते थे। जैसे (१) 'चीनी साहित्यमें क्रान्ति'—इसके लेखक थे छून्-तु-शिउ और हु-श। इन लोगोंकी रायमें चीनी विचारधाराका परिवर्तन साहित्यके द्वारा ही हो सकता है; (२) 'एक प्रकार' और 'पागल आदमीकी डायरी' जिनमें चीनके पुराने नैतिक आचार विचारोंकी कटु आलोचना की गई

है; (३) छून्-ता-चि द्वारा लिखित "अन्धविश्वास और मनोविज्ञान" जिसमें पुराने चीनी विश्वासोंका मनोविज्ञानकी दृष्टिसे विश्लेषण कर खंडन किया गया है। इस पत्रके अलावा हु-ष द्वारा लिखित 'चीनी दर्शनशास्त्रका इतिहास' है जिसमें इन्होंने चीनी दर्शनकी नई व्याख्या की है। ल्याङ्-छि-छाग् ने 'छिन् राजकुलके पूर्ववर्ती चीनके राजनैतिक विचारोंका इतिहास' नामक पुस्तक लिखकर हु-ष के विचारोंका संशोधन किया। ल्याङ्-षु-मिङ् ने एक बहुत ही अच्छी किताब "पूर्वी संस्कृति और उसका दर्शन" नामक लिखी। इसमें लेखकने अपनी व्याख्या द्वारा दोनों विरोधी भावोंमें सामंजस्य लानेकी कोशिश की है। हर पुस्तकमें कुछ खास विशेषतायें और कुछ लचर दलीलें हैं परन्तु ये पुस्तकें आधुनिक चीनी दिमागकी परिचायक हैं।

नव सांस्कृतिक आन्दोलनका देशपर दो तरहसे असर पड़ा है। एक तरफ तो इससे प्राचीन अन्धविश्वासों तथा रीतिरिवाजों परसे लोगोंका विश्वास उठ गया और हर चीजको नये दृष्टिकोणसे देखनेकी प्रवृत्ति हुई। दूसरी ओर इससे चीनकी संस्कृतिको एक गहरा धक्का लगा। इस आन्दोलनके प्रवर्तक डा० छाइकी इच्छा थी कि पुराने और नये, पश्चिमी और पूर्वी विचारोंके समन्वयसे एक नई संस्कृतिका निर्माण किया जाय। परन्तु उनके अनुयाइयोंमें इस आदर्शके अनुरूप क्षमता नहीं थी। अच्छी भावनाओंके रहते हुए भी जोशमें आकर ये लोग बहुत आगे बढ़ गये। इसका फल यह हुआ कि सामाजिक जीवनकी बुनियाद ही हिल गई। हालमें चीनके सांस्कृतिक आन्दोलनका दूसरा ही रूप हो गया है जो ठीक ढंगसे ठीक दिशामें जा रहा है। दर असल यह दूसरा रूप ही चीनका नवजीवन आन्दोलन है।

अध्याय ८

नव-जीवन आन्दोलन

नव-जीवन आन्दोलनके प्रवर्तक मार्शल च्याङ् चिए-ष (मार्शल च्याङ्-काई-शेक) हैं। इन्होंने उस आन्दोलनका सूत्रपात अपने प्रधान दफ्तर नान-छाङमें १९ फरवरी सन् १९३४ में किया। चीनके भविष्यके लिये इस आन्दोलनका रास्ता ही सही है। बहुतसे पुराने आन्दोलन भी बहुत अनुभवों के बाद इसी रास्तेपर आ गये हैं। पिछली कई दशाब्दियोंमें खासकर अन्तिम दशाब्दीमें चीन सभी प्रकारके सिद्धान्तों और प्रणालियोंको अपनाता रहा, फिर भी आगेका पथ अंधकारपूर्ण ही रहा। देशकी सामाजिक हालत एकदम डांवाडोल हो गई थी और अगर कुछ दिनों तक यही हालत बनी रहती तो देशका सत्यानाश हो जाता। यह पुराना दार्शनिक सिद्धान्त "कोनेमें पहुँचे हुए को अपने बचावके लिये नया रास्ता ढूंढ़ना ही पड़ता है" पुनः सत्य सिद्ध हुआ। नव-जीवन आन्दोलन देशके लिये अन्धेको अचानक दो आंखें मिल जानेके समान था। जिस समय चीन इस प्रकारके संकटमें घिरा था, ठीक उसी समय नव-जीवन आन्दोलन प्रारम्भ हुआ और समूचे राष्ट्रने नये रास्ते की ओर उत्साहसे कदम उठाया।

इस नव आन्दोलनका उद्देश्य है—चीनी जनताके जीवनको नये सांचेमें ढालने के लिये चीनी दर्शन और आचार शास्त्रको चीनी संस्कृति और सभ्यताका आधार बनाना और उसमें पश्चिमी अच्छाइयोंका समावेश करना। क्योंकि चीनका अपना हजारों वर्षोंका इतिहास है और इन वर्षोंमें उसके अनगिनत ऋषियोंने मानव-जीवनकी समस्याके सम्बन्धमें विवेचना की है और चीनी

जनताके लिये वसीयतके रूपमें अपने व्यापक अनुभवोंका भाण्डार छोड़ दिया है जो नित्य सत्य हैं। साथ ही साथ इतिहासके एक लम्बे युगसे चीन मत-भेद, गड़बड़ी और ह्रासमें ग्रसित है ; इसलिये पुराने सिद्धान्तोंको दृढ़ताके साथ अपनाना और प्राचीन बुद्धिके द्वारा वर्तमान गड़बड़ी और बुराइयोंको सुधारना, साथ साथ दूसरी जगहकी स्वास्थ्यप्रद और रुचिकर चीजोंको अपना-कर चीनकी वर्तमान परिस्थितिके अनुसार लागू करनेके लिये अपना दिमाग निष्पक्ष रखना ही चीनकी उन्नतिका सही रास्ता था। इस प्रकार चीनी जनता को एक विचारपूर्ण, नया और ताजा जीवन देकर उनकी जिन्दगीको आनन्दमय बनाया जासकता है। इस नव-जीवन आन्दोलनसे चीन आधुनिक संसारमें उचित स्थान प्राप्त कर सकेगा और उन्नतिशील भविष्यका मार्ग भी प्रशस्त करेगा।

नव-जीवनमें प्रवेश करनेका तरीका जीवन संगठनके छः सिद्धान्तों पर आधारित है। (१) एकसी पोशाक (२) सफाई (३) सादा जीवन (४) स्वाभा-विक वर्ताव (५) स्फूर्ति और कर्मण्यता और (६) यथार्थवादी दृष्टिकोण। इन छः सिद्धान्तोंका मानना सबके लिये अनिवार्य सा है। इन छः आदर्शोंका मुख्य उद्देश्य जीवनको (१) अनुशासनमें रखना (२) क्रियाशील और (३) कलापूर्ण बनाना है। अनुशासनसे देशमें एक ईमानदार और देशभक्त फौज तैयार हो सकेगी जिसमें तेजीके साथ और समान काम करनेकी तथा नियमानुसार तथा सीधा सादा जीवन बितानेकी भावना होगी। क्रियाशील होनेसे हर आदमी राष्ट्रकी सम्पत्ति बढ़ानेमें मदद करेगा। काम करनेके तरीकोंमें सुधार होगा जिससे समय की बचत होगी और कार्य करनेका ढंग व्यवस्थित हो सकेगा। कलापूर्ण जीवनसे आदमीमें स्वतंत्रता, नम्रता और शान्ति-पूर्वक

रहनेकी भावना बढ़ेगी। इस तरह मनुष्योंको अपने जीवनके प्रति सावधान और कठोर होते हुए भी ग्रहणशील और उदार होना चाहिये। उन्हें अपने कामोंको फुर्ती, सावधानी और यथार्थ ढंगसे करनेके ज्ञानके साथ-साथ जीवन में मितव्ययी और सच्चरित्र होना चाहिए।

ये सब ही नव-जीवन आन्दोलनके प्रधान सिद्धान्त हैं। उपरोक्त सिद्धान्तोंके आधार पर हर केन्द्र के अपने अलग अलग नियम बनाए हुए हैं। जैसे नान्-छ्राङ् में, जहांसे इस आन्दोलनका श्रीगणेश हुआ है, दूकानों, मनोरंजन गृहों, चायघरों, होटलों, सार्वजनिक पैखानों और स्नान गृहों तथा और भी बहुतसी चीजोंके लिये दर्जनों ब्यौरेवार नियम और उपनियम बने हुए हैं। बोलने, खाने, काम करने आदि छोटी छोटी बातोंसे लेकर राष्ट्र तथा समाजकी गतिविधिको कड़े नियमके आधार पर नियमित कर देना तक इस आन्दोलनमें सम्मिलित है। विदेशी लोग चीनके भोजनकी बड़ी प्रशंसा करते हैं। शायद उनलोगोंको लगता है कि चीनकी सारी सभ्यता वहांकी पाकशालामें ही केन्द्रित है। बाहरके बहुत कम ही लोग चीनी सभ्यता के नैतिक और सांस्कृतिक व्यवहारोंसे परिचित हैं। इस तरहकी धारणा रखना बड़ा ही हास्यास्पद तथा निराशाजनक है। असलमें चीनी लोग जीभ-लिप्साको कम ही महत्व देते हैं। महात्मा मन्-त्र (मनसिउस) ने लिखा है—"जो आदमी केवल खाने पीनेमें ही समय व्यतीत करता है वह निश्चय ही घृणाका पात्र है।" सचमुचमें जिसके जीवनका उद्देश्य केवल खाना पीना ही है उसके लिये किसीके दिलमें उच्च भावना नहीं हो सकती। नव-जीवन आन्दोलनके प्रधान केन्द्र नान्-छ्राङ् में रसोइयोंके लिये सोलह नियम बनाये गये हैं। उन नियमोंका जानना रसोइयोंके लिये आवश्यक है। कुछ नियम यों

हैं–नियम नं० ६–रसोई बनाते समय, शरीर खुजलानेके बाद अथवा पेशाब-खाने से बाहर आनेके बाद रसोइयेको अपना हाथ धो लेना चाहिये। नियम नं० ७—खानेकी सड़ी गली चीजें फेंक देनी चाहियें और इस प्रकारकी चीजें खरीददारोंके हाथ कभी नहीं बेचनी चाहिये। नियम ९—पाकशालामें रसोइया कभी भी खुले बदन या खुले पांव नहीं रहे। नियम १०—रसोइयेको भोजन बनानेके बर्तन की ओर मुँह करके कभी नहीं छींकना चाहिए। नियम ११—रसोई बनाते समय रसोइया सिर पर मुलायम और हलके रंगकी टोपी, शरीर पर लम्बा चोगा और हाथमें उजला दस्ताना पहिने तथा इन कपड़ोंको नित्यप्रति धोया करे। नियम १२—रसोई घरका तौलिया साफ होना चाहिये तथा प्रति दिन खौलते हुए पानीसे उसे धोना चाहिये। नियम १६—रसोइये को रसोईघरकी अग्निसे बराबर सावधान रहना चाहिये।

यह नव-जीवन आन्दोलन बिजलीकी तरह सम्पूर्ण देशमें फैल गया है। विदेशी लोग चीनी जनता पर अफीमची होनेका दोष लगाते हैं। असलमें, अफीम पीनेवाले चीनमें बहुत कम रहे हैं और अब तो सिगरेट पीनेकी आदत भी लोग छोड़ते जा रहे हैं। चीन पर दूसरा कलंक यह था कि वहांके लोग बड़े जुआड़ी होते हैं। वास्तवमें जुआड़ी चीनमें बहुत कम रहे हैं और अब तो सार्वजनिक सट्टेबाजी पर भी सरकारी नियंत्रण है। इस प्रकार आधुनिक चीनी समाजका निर्माण दूसरे ही ढांचे पर हो रहा है जो पुराने समाज से एकदम भिन्न है। पिछली कई दशाब्दियोंमें ज्यों ज्यों चीनमें कमजोरी आती गई और धीरे धीरे उसका ह्रास होने लगा त्यों त्यों विदेशी लोगोंमें दूसरोंके भ्रामक प्रचारसे उसके प्रति गलतफहमी भी बढ़ती गई। अगर कोई वास्तविक चीनको समझना चाहता है तो उसे चीनी इतिहास, दर्शन और

संस्कृतिका अच्छी तरह गम्भीर अध्ययन करना चाहिये तथा स्वयं जाकर ईमानदारीके साथ अपनी आंखोंसे वहांकी हालत देखनी चाहिये; तभी इस बड़े राष्ट्रके प्रति बनाई हुई गलत धारणा मिट सकती है। अगर चीनके राष्ट्र-निर्माणकी वर्तमान कार्यप्रणालीमें बाहरी हस्तक्षेप नहीं हुआ तो कुछ वर्षों या कुछ दशाब्दियोंमें ही एक नव चीनी समाजका निर्माण हो जाएगा जो मानव-हितके कार्य और जिम्मेवारीको पूरी सफलताके साथ निभा सकेगा।

समाप्त